Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

विषय-सूचि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन एवं उद्देश्य

श्रीमद् दयानन्द आर्ष विद्यापीठ की पाठ्य पुस्तकों के निर्माताओं, अध्यापकों एवं परीक्षकों से—

१— जो बातें अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह पवित्रता, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान, धृति क्षमा, दम, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि और विद्या के विरुद्ध हों वे सर्वथा उपेक्षणीय समझी जावें। उन्हें न ग्रन्थ कर्त्ता लिखें, न अध्यापक पढावें और न परीक्षक पूछें, क्योंकि आर्ष विद्या पीठ कुमार-कुमारियों को उपर्युक्त गुणों से विभूषित करके ऋषि पद्धति का पुनरुज्जीवन चाहता है।

२— औचित्य-विरुद्ध, जैसे— भगवान् भक्त के वश में रहते हैं। कितना ही पुरुषार्थ करो यदि दैव ही प्रतिकूल है तो सफलता कभी नहीं मिल सकती। मित्रता निभाने के लिये पाप भी करना पड़ता है इत्यादि अंशों का आर्ष विद्यापीठ में कोई स्थान नहीं है।

३— झूठा इतिहास आर्ष विद्यापीठ में नितान्त हेय है।

४— तमोगुणी शिक्षण अनुपयुक्त मानके रजोगुण की प्रवृत्ति भी वहीं तक उपादेय है, जहां तक वह सत्वगुण की उत्पत्ति में सहायक बने।

५— सृष्टिक्रम और विज्ञान से विपरीत बातों को आर्ष विद्यापीठ अप्रतिष्ठित करता है।

६— वे मान्यतायें सर्वथा असह्य हैं, जिनके कारण विद्यार्थी दुश्चरित्र आदि अपूज्यों की पूजा करने में प्रवृत्त हों एवं सत्करणीय चरित्रवान् विद्वानों, गुरुओं, माता-पिताओं, संरक्षकों और अभिभावकों की निन्दा करने में लज्जा अनुभव न करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७— वे अंश भी उपयोगी नहीं समझे जावेंगे, जिन्हें पढकर छात्र-छात्रायें स्वदेश के महानुभावों की निन्दा और विदेशियों की प्रशंसा करने में स्वयं को गौरवान्वित समझें।

८— श्रेष्ठ गुणों के धारण में अरुचि एव दोषों के ग्रहण में उत्सुकता करानेवाले पाठ्यांश त्याज्य कोटि में समाविष्ट होंगे।

९— आर्ष विद्या पीठ उन बातों का आदर नहीं करता, जिनसे ब्रह्मचारी वर्ग अकृत्रिम जीवन को छोड़ना और बनावटी रहन-सहन को अपनाना अधिक पसन्द करें।

१०— ऐसे पाठों का भी महत्त्व नहीं है, जिनको पढकर शिक्षार्थी अपने बड़ों की बातों पर उपहास करना सीख जावें।

११— वे पाठ्यांश भी अग्राह्य गिने जावेंगे जो बालक बालिकाओं एवं युवक-युवतियों के इकट्ठे पढ़ने और साथ खेलने का वर्णन करते हों।

१२— अर्थ–काम में आसक्ति उत्पन्न करने वाले एवं धर्म और मोक्ष से विरक्ति दिखाने वाले भाग आर्ष विद्या पीठ की दृष्टि में ऊंचा स्थान नहीं रखते।

१३— यदि कोई ग्रन्थ आर्ष विद्या पीठ की पाठ्यावली में इन नियमों के उल्लङ्घन, दृष्टि दोष वा भूल से रख दिया गया हो, तो वह समिति द्वारा हटा दिया जाएगा।

१४— आचार्य स्तर पर आकर विभिन्न वादों के समालोचनात्मक पक्ष का आश्रय उपादेय होगा।

प्रस्तोता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विषयक उपनियम

विषय परिवर्तन—

आवेदनपत्र पूर्ति के अनन्तर विषय परिवर्तन सर्वथा असम्भव है।

पूरक परीक्षा—

(क) पृष्ट ३ पर परीक्षा विषयक नियम १३ से सम्बद्ध यदि कोई परीक्षार्थी रोगी हो जाने आदि अनिवार्य विशेष कारणों से विद्या संस्था के प्रधान की लिखित पूर्व स्वीकृति प्राप्त कर परीक्षा में न बैठा होगा, तो उन सब विषयों की जिनमें वह नहीं बैठ सका है, अथवा सभी विषयों में नहीं बैठ सका है, उसे पूरक परीक्षार्थियों के साथ परीक्षा के लिये अवसर प्रदान किया जायेगा। पूरक परीक्षार्थी को उत्तीर्ण हो जाने की दशा में श्रेणी प्रदान नहीं की जावेगी। कृपाङ्कों की व्यवस्था पूरक परीक्षा में भी वार्षिक परीक्षा के समान होगी।

(ख) यदि कोई छात्र किसी विषय में बरावर दो परीक्षाओं में एक वार्षिक और दूसरी पूरक में अनुत्तीर्ण हो तो उसे उसी खण्ड में रहकर उस वर्ष के सब विषयों की परीक्षा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार सब के साथ अगले वर्ष देनी होगी।

(ग) यदि कोई छात्र पूरक परीक्षा में न बैठ सके, तो वह भी अगले वर्ष ही परीक्षा में बैठने का अधिकारी होगा।

(घ)

पूरक परीक्षा	शुल्क	लब्धांक	
प्रथमा तृतीय खण्ड	३	१	रुपये
मध्यमा प्रति खण्ड	४	१	रुपये
शास्त्री प्रति खण्ड	५	१	रुपये
आचार्य प्रति खण्ड	७	१	रुपये

वार्षिक परीक्षा अथवा पूरक परीक्षा के लिये भेजा गया शुल्क किसी भी दशा में न आगे के लिये सुरक्षित होगा, और न ही लौटाया जायेगा। भूल का सुधार अवश्य किया जायेगा।

सर्व प्रकार के शुल्क का प्रेषण नियम—

प्रवेश पत्र के साथ ही शुल्क का आना आवश्यक है। बैंक ड्राफ्ट चैक वा मनी-आर्डर जिस प्रकार से शुल्क भेजा गया है, उसका संकेत मनीआर्डर की रसीद इत्यादि प्रवेश पत्र के साथ संलग्न की जानी चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

* श्रीमद्दयानन्द आर्ष-विद्यापीठ *

इस आर्ष-विद्यापीठ की १६ वर्ष की पाठविधि में निम्नलिखित परीक्षायें निर्धारित की गई हैं।

परीक्षा नाम	अवधि
१. प्रवेशिका	५ वर्ष
२. प्रथमा	३ वर्ष
३. मध्यमा	३ वर्ष
४. शास्त्री	३ वर्ष
५. आचार्य	२ वर्ष
	१६ वर्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* परीक्षा विषयक नियम *

१. श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ की परीक्षाओं में विद्यार्थी एक वर्ष में एक परीक्षा में सम्मिलित हो सकेगा ।

२. आधुनिक विद्यालयों को पञ्चम कक्षा, संबद्ध विद्यालयों की प्रवेशिका उत्तीर्ण अथवा तत्समकक्ष योग्यता रखनेवाला छात्र ही प्रथमा परीक्षा (प्रथम खण्ड) की तैयारी कर सकेगा ।

३. प्रथमा के प्रथम द्वितीय खण्डों की परीक्षाएं स्थानीय विद्यालय में तथा प्रथमा तृतीय खण्ड, मध्यमा, शास्त्री और आचार्य की परीक्षायें विद्यापीठ ही लिया करेगा । कन्याएं प्रथमा तृतीय खण्ड की परीक्षा विद्यापीठ मे दिये बिना भी मध्यमा के प्रथम खण्ड में सीधी बैठ सकती हैं ।

४. प्रथमा परीक्षा के हिन्दी, गणित, समाजशास्त्र तथा सामान्य विज्ञान, इन चार विषयों में से इच्छानुसार तीन लिये जा सकते हैं ।

५. मध्यमा प्रत्येक खण्ड के अतिरिक्त विषयों में से एक विषय लेना अनिवार्य होगा । यह विषय प्रत्येक खण्ड में भिन्न भी हो सकता है ।

६. शास्त्री प्रत्येक खण्ड के अतिरिक्त विषयों में से एक विषय लेना अनिवार्य होगा । किन्तु इसे प्रत्येक खण्ड में समान ही लेना होगा ।

७ व्याकरणाचार्य करने के उपरान्त ही इन विषयों में भी आचार्य किया जा सकता – वेद, दर्शन, आयुर्वेद, राजनीति-शास्त्र, ज्योतिष । इन में से वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य के बाद सीधा किया जा सकता है । दर्शन आयुर्वेद तथा राज-नीति शास्त्र में आचार्य करने के लिये ये विषय शास्त्री में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त रूप से लेने अनिवार्य होंगे तथा ज्योतिष में आचार्य करने के लिये ज्योतिष का पाठ्यक्रम मध्यमा से ही करना होगा। छूट यह रहेगी कि मध्यमा तथा शास्त्री के सभी खण्डों की परीक्षा एक साथ भी दी जा सकती है।

८. इसी प्रकार जो अतिरिक्त विषय शास्त्री में नहीं किया गया हो उसका आचार्य करने के लिये वह विषय शास्त्री से करना होगा। उस विषय में शास्त्री के तीनों खण्डों की परीक्षा एक साथ दी जा सकती है।

९. प्रथमा परीक्षा का माध्यम आर्यभाषा रहेगी। मध्यमा तथा शास्त्री के वेद, दर्शन, व्याकरण संस्कृतसाहित्य तथा निरुक्त विषयों को छोड़कर अन्य सभी विषयों का माध्यम हिन्दी भी चुना जा सकता है। मध्यमा तीनों खण्डों में संस्कृतसाहित्य के पूर्णांकों का उत्तर देने के लिये संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी भी माध्यम रहेगा। आचार्य में विषयों की दृष्टि से सब पत्रों का माध्यम संस्कृत वा अन्य भाषायें होंगी।

१०. सब परीक्षाओं में एक पत्र में अनुत्तीर्ण छात्र ही पूरक परीक्षा दे सकेगा जो परिणाम घोषित होने के एक मास पश्चात् होगी, जब कि उस पत्र में २२ प्रतिशत से न्यून अङ्क न हों।

११. आठ कृपाङ्क पत्रों में उत्तीर्णता हेतु वितरित किये जा सकेंगे किन्तु दिये गये कृपाङ्कों से दुगुने अङ्क सर्वयोग में से काट लिये जायेंगे। एक पत्र में अधिक से अधिक ५ कृपाङ्क दिये जा सकते हैं।

१२. आचार्य परीक्षा में कुल अङ्कों का ५० प्रतिशत प्राप्त करने पर छात्र उत्तीर्ण समझा जायेगा चाहे वह दोनों खण्डों के एक या अधिक पत्रों में असफल भी क्यों न रहा हो जबकि उसने किसी भी पत्र में ३३ प्रतिशत से कम अङ्क न लिये हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. परीक्षा परिणाम की घोषणा परीक्षा समाप्ति के एक मास बाद कर दी जाएगी।

१४. विद्यापीठ की पाठविधि के चालू होने से पूर्व के सम्बन्धित विद्यालयों के छात्र अपने प्रमाण पत्रों के आधार पर विद्यापीठ की किसी भी परीक्षा के किसी भी खंड में बैठ सकते हैं।

१५. आचार्य में स्वशास्त्रीयनिबन्ध २५ पृष्ठ फुलस्केप का होगा तथा परीक्षा प्रारम्भ होने की तिथि से १५ दिन पूर्व तक परीक्षाध्यक्ष के पास पहुंच जाना चाहिये।

१६. न्यूनातिन्यून पांच परीक्षार्थी होने पर केन्द्र बन सकेगा।

१७. इन परीक्षाओं में बाहर के छात्र नहीं बैठ सकेंगे

१८. अंग्रेजी में उत्तीर्णता अनिवार्य नहीं है। उत्तीर्ण होने की दशा में प्रमाण पत्र पर पृथक् उल्लेख कर दिया जायेगा। प्रथमखण्ड में अंग्रेजी में उत्तीर्ण होने पर ही उत्तरखण्ड में अंग्रेजी ली जा सकेगी।



परीक्षा तिथि

विद्यापीठ की वार्षिक परीक्षाएं प्रतिवर्ष चैत्रशुक्ल पक्ष के प्रारम्भ में हुआ करेंगी। परीक्षार्थ आवेदन पत्र कार्यालय में पहुंचने की विलम्बवाली अन्तिम तिथि मकरसंक्रान्ति होगी। बिना विलम्बशुल्क के आवदेन पत्र इस से दस दिन पूर्व पहुंच जाने चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क विवरण

प्रश्नानुसन्धान ४)

परीक्षा प्रवेश शुल्क ३) केवल प्रथम बार परीक्षा देने पर

नाम परीक्षा	परीक्षा शुल्क	लब्धाङ्क शुल्क	विलम्ब शुल्क	प्रपत्र मूल्य
प्रथमा तृतीयखण्ड	४)	१)	२)	१)
मध्यमा प्रतिखंड	६)	१)	२)	१)
शास्त्री प्रतिखड	८)	१)	२)	१)
आचार्य प्रतिखड	१०)	१)	२)	१)

उत्तीर्णता के लिए अङ्क निर्देश

परीक्षा नाम	तृतीय श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	प्रथम श्रेणी
प्रथमा	३३ प्रतिशत	४५ प्रतिशत	६० प्रतिशत
मध्यमा	३३ प्रतिशत	४५ प्रतिशत	६० प्रतिशत
शास्त्री	३५ प्रतिशत	४५ प्रतिशत	६० प्रतिशत
	सर्वयोग ४० प्रतिशत		
आचार्य	तृतीय श्रेणी नहीं है	४५ प्रतिशत	६० प्रतिशत

विशेष—सर्वयोग में ७५ प्रतिशत वा अधिक अङ्क प्राप्त करने पर विशेष योग्यता प्रदान की जायेगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष-विद्यापीठ से सम्बद्ध गुरुकुल

१. गुरुकुल झज्जर, रोहतक (हरयाणा)
२. गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
३. गुरुकुल एटा (उ. प्र.)
४. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, ततारपुर, डा. बाबूगढ़ छावनी, जि. मेरठ (उ. प्र.)
५. गुरुकुल रुद्रपुर, डा. तिलहर, जि. शाहजहांपुर (उ.प्र.)
६. घनश्याम वैदिक विद्यालय देवरिया (उ. प्र.)
७. पाणिनीय महाविद्यालय मोतीझील बनारस (उ.प्र.)
८. सांगवेदविद्यालय नरौरा नेर जि. मैनपुरी (उ. प्र.)
९. गुरुकुल सिरसागंज, जि. मैनपुरी (उ. प्र.)
१०. गुरुकुल गदपुरी डा. बल्लभगढ़ जि. गुडगावां (हरयाणा)
११. गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर जि. रोहतक (हरयाणा)
१२. गुरुकुल अयोध्या (उ. प्र.)
१३. आचार्यकुल सिद्धिपुर लोवा, रोहतक (हरयाणा)
१४. गुरुकुल आर्यनगर डा. कुरड़ी जि. हिसार (हरयाणा)
१५. गुरुकुल घरौण्डा, जि. करनाल (हरयाणा)
१६. कन्या गुरुकुल नरेला, देहली
१७. कन्या गुरुकुल दाधिया, डा. अजरका, जि. अलवर (राजस्थान)
१८. गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पानपोस डा. राउरकेला ४, जि. सुन्दरगढ़ (उड़ीसा)
१९. गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल रोहतक (हरयाणा)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा परीक्षा (प्रथम खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत व्याकरण पूर्णाङ्क १००

(क) शब्दरूपावली (लघु पुस्तिका सम्पूर्ण) ५०

(ख) धातुरूपावली ५०

(ख) का पाठ्यक्रमः—लट्, लृट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन पांचलकारों के निम्नधातुओं के सभी रूप-

श्रु, घ्रा, पा, दा, क्रीड्, भू, अस्, रक्ष्, नम् वस्, स्मृ, रुद्, स्था, त्यज, नी, त्रै, लभ्, नृत्, प्रच्छ्, सृज्, ज्ञा, सेव्, जागृ, हन्, जन्, छिद्, क्रुध्, तुद्, स्पृश्, पठ्, चल् ।

सूचना—शुद्ध लेखन का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद-आर्यसिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

(क) सन्ध्या, ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना, हवन, जागरण, शयन, भोजन के आद्यन्त, यज्ञोपवीत, स्नान, मेखला आदि के मन्त्र कण्ठस्थ करना । ६०

(ख) धार्मिकशिक्षा प्रथम-द्वितीय भाग (डा० सूर्यदेव कृत) ४०

तृतीय प्रश्न पत्र

(क) संस्कृत प्रवेशिका (प्रथम भाग) गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित । २०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) बालकवितावली (प्रथम भाग) संस्कृत साहित्य प्रचारक। १०

अथवा

(तत्समकक्ष कोई पुस्तक)

सूचना—मुख्य श्लोक कण्ठस्थ करना अनिवार्य है।

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे गणित पूर्णाङ्क १००

अङ्कगणित—दशमलव की चारों रीतियां, दशमलव भिन्न से साधारण भिन्न वा साधारण से दशमलव भिन्न बनाना, दशमलव का महत्तम समापवर्तक और लघुतम समापवर्त्य।

पाठ्य-पुस्तक—अपने-अपने प्रान्त का अथवा बाल अङ्कगणित प्रथम भाग। डा० गोरखप्रसाद।
(रामसाहित्य, रामदयाल अग्रवाल प्रयाग)

बीजगणित—बीजगणित के संकेत, स्थानापन्नक्रिया, जोड़ना, घटाना, बीजगणित में कोष्ठों को सरल करना।

रेखागणित—कोणों का विशेष अध्ययन। पटरी गुनिया और परकार का प्रयोग। आसन्न कोण तथा एक बिन्दु पर बने कोण, सम्मुख कोणों की तुलना। त्रिभुज के कोणों को विवेचना, सम्मुख कोणों की तुल्यता, रचना द्वारा त्रिभुजों को अनुरूपता की निम्नलिखित स्थितियों का प्रदर्शन:—

क—जब तीनों भुजाएं तुल्य हों।

ख—दो भुजाएं तथा अन्तर्गत कोण तुल्य हों।

ग—एक भुज और अन्तर्गत कोण तुल्य हों।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक ग्रन्थ—अपने-अपने प्रान्त का पुस्तक वा सरल बीजगणित और रेखा गणित प्रथमभाग। (माया शंकरलाल कृत)

अथवा

गणित ज्योतिष

स्थानमान, व्यवहार गणित

सूचना—गणित और गणित ज्योतिष में से कोई एक लिया जा सकता है।

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घंटे हिन्दी पूर्णाङ्क १००

विशेष—पाठ्यग्रन्थों से गद्यांश की व्याख्या तथा पाठ्य सारांश पूछे जायगे। शब्दार्थ, विलोम, शुद्धरूप एवं लेखक का परिचय जानना भी आवश्यक है।

पाठ्य-पुस्तक (क) आत्मकथा रामप्रसाद बिस्मिल (पूर्वार्द्ध) राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली। ३०

(ख) आदर्श बालक (लेखक प्राणनाथ वानप्रस्थ, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली। ३०

(कन्याओं के लिए) वीर पुत्रियां लेखक प्राणनाथ वानप्रस्थ, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली।

(ग) व्याकरण—कारक, सन्धि, वचन, लिंग, व्याकरण का महत्त्व। १०

(घ) निबन्ध—सामान्य सरल विषयों पर वर्णनात्मक (किसी भी पुस्तक से) १५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ङ) पत्र लेखन तथा आवेदन पत्र १०

(च) लोकोक्तियां तथा कहावतें ५

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घंटे समाज शास्त्र अङ्क १००

(इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र)

इतिहास–आर्य जगत् के उज्ज्वल रत्न अथवा आर्य समाज के नव रत्न (राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली) ३४

भूगोल— ३३

क) भौतिक-पृथ्वी का आकार गतियां, ऋतुपरिवर्तन, दिन रात, मानचित्र का सामान्य ज्ञान।

ख) स्थानीय भूगोल–बाजार, ग्रामों, कस्बों तथा नगरों का सम्बन्ध विशेष फसलें एवं उद्योग।

ग) भारतवर्ष–स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, उद्योग, यातायात, व्यापार, पञ्चवर्षीय योजनाएं, जनसंख्या एवं प्रमुख नगर।

सहायक ग्रन्थ— ३३

प्रारम्भिक भूगोल प्रथमभाग कुमारी सुमन वर्मा (चौखम्बा बनारस)

नागरिकशास्त्र–वैदिक शिष्टाचार (गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे सामान्य विज्ञान पूर्णाङ्क १००

निम्नलिखित विषयों का सामान्य ज्ञान—

द्रव्य और द्रव्य के साधारण गुण। द्रव्य की अवस्थाएं।

(भौतिक तथा रासायनिक).

लम्बाई की इकाई, लम्बाई नापना। तौल, वस्तुओं का तौल निकालना, साधारण तुला का ज्ञान।

लीवर, लीवर के प्रकार, घिरनी, दैनिक जीवन में इनके कुछ उपयोग। वायु मण्डल की बातें [भौतिक तथा रासायनिक गुण] वायुमण्डल का दबाव, शुद्ध तथा अशुद्ध वायु। वायु का गमनागमन तथा उपयोगिता। उष्मा, उष्मा के स्रोत तथा उष्मा का सचारक प्रकाश, प्रकाश का स्रोत, प्रकाश सरल रेखा में गमन, सूची क्षत्र, कैमरा, चुम्बक के गुण, चुम्बकीय पदार्थ।

घर्षण विद्युत्, उसके गुण. (चुम्बक की भांति आकर्षण-विकर्षण आदि और प्रकाश) आकाश को विद्युत् फ्रैंकलिन का प्रयोग।

जल-प्रकृति का सबसे बड़ा घोलक, शुद्ध तथा अशुद्ध जल, जल को निर्मल करने की प्रक्रिया, पदार्थों का साधारण गुण जांच करना। लोह तथा गन्धक के उदाहरण।

विभिन्न श्रेणी के जीवों (प्राणी तथा वनस्पति) के विषय में सामान्य परिचय।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरुदण्डधारी जीव-मछली का साधारण ज्ञान।

कुछ हानिकारक प्राणी, किसानों के मित्र और शत्रु, बिना रीढवाले प्राणी, केंचुवा, तितली, बिच्छी आदि।

मनुष्य के शरीर के विषय में सामान्य ज्ञान, शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्ग तथा उनके विषय मे साधारण ज्ञान,

ध्रुव तारा एव सप्तर्षिमण्डल।

सहायक ग्रन्थ-

जनरल साइंस रीडर प्रथम भाग। लि०-श्रीमनोहर लाल भार्गव तथा श्री गंगाशरण भार्गव।

[केवल कन्याओं के लिये]

समय ३ घण्टे	गृह-विज्ञान	पूर्णाङ्क १००

सैद्धान्तिक ६०

व्यक्तिगत स्वास्थ्य-शरीर की स्वच्छता, मानसिक स्वास्थ्य, शिष्टाचार, गुरुकुल में आये पारिवारिक जनों तथा विद्यालय से सम्बन्धितों के प्रति व्यवहार।

भोजन-शरीर में कार्य का सूक्ष्म वर्णन।

वस्त्रों के विषय में-शुद्धता का स्वभाव एवं उचित रीति से वस्त्रों को रखने का प्रकार।

प्रायोगिक ४०

(१) मिट्टी से घर के न्यादर्श (नमूने) बनाना।

(२) सिलाई-रूमाल आदि।

(३) दस्तकारी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा परीक्षा (द्वितीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — संस्कृत व्याकरण — पूर्णाङ्क १००

क—अष्टाध्यायी मूल १ से ४ अध्याय कण्ठस्थ करना — ८०

ख—वर्णोच्चारण शिक्षा — २०

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — वेद-आर्य सिद्धान्त — पूर्णाङ्क १००

क—स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण, सामान्य प्रकरण कण्ठस्थ । — ५०

ख—वैदिक प्रश्नोत्तरी — २०

ग—आर्योद्देश्यरत्नमाला — ३०

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — संस्कृत साहित्य — पूर्णाङ्क १००

क—संस्कृत प्रथम पुस्तक—रामबिहारीलाल चांदापुरी चोखम्बा बनारस — ८०

ख—अनुवाद — २०

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — गणित — पूर्णांक १००

अङ्कगणित—ऐकिक नियम के कठिन प्रश्न, सरल व्यवहार गणित, साधारण ब्याज ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य पुस्तक = अपने-अपने प्रान्त का अथवा बाल अंक गणित द्वितीयभाग। डा० गोरखप्रसाद।

बीजगणित–सरल योगादि चार नियम। एक अज्ञात वर्णों के समीकरण तथा उन पर आधारित सरल प्रश्न।

रेखागणित–रचना द्वारा ऊंचाईयों तथा दूरियों का ज्ञान, पटरी तथा परकार की सहायता से निम्नलिखित रचना करना–

क—सरल रेखा का समद्विभाजन।
ख—कोण का समद्विभाजन।
ग—सरलरेखास्थित अथवा तद्बहिर्गत बिन्दु से सरल रेखा पर लम्ब।
घ—निर्दिष्ट कोण के तुल्य कोण निर्माण करना।
ङ—६०, ४५ अंश तथा ३० अंश के कोणों का निर्माण।
च—किसी निर्दिष्ट बिन्दु से किसी निर्दिष्ट रेखा के समानान्तर रेखा खीचना।
छ—सरल रेखा को बहुत-से तुल्य भागों में बांटना।
ज—त्रिभुजों की रचना।

पाठय-ग्रन्थ—अपने-अपने प्रान्त का। अथवा सरल बीजगणित और रेखागणित। भाग द्वितीय [श्री मायाशंकर लाल कृत]

अथवा

गणित ज्योतिष

साधारण भिन्न, दशमलव भिन्न, सरलीकरण के सुगम प्रश्न।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक ग्रन्थः— गणित कौमुदी, ले० गणपतिदेव शास्त्री, चौखम्बा बनारस

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे हिन्दी पूर्णाङ्क १०

विशेष—पाठ्य ग्रन्थों से गद्यांश व पद्यांशों की व्याख्या तथा पाठ्य सारांश पूछे जायेंगे। शब्दार्थ, विलोम, शुद्धरूप एवं लेखक परिचय जानना भी आवश्यक है।

पाठ्य-पुस्तक—

(क)	आत्मकथा रामप्रसाद बिस्मिल [उत्तरार्द्ध]	२५
(ख)	मित्रों की बातें [कन्याओं के लिये–बहनों की बातें]	२०
(ग)	झांसी की राणी [कविता] सुभद्राकुमारी चौहान	२०
(घ)	व्याकरण—समास, सन्धि, कारक, अलङ्कार।	१०
(ङ)	निबन्ध—वर्णनात्मक और विचारात्मक।	१५
(च)	पत्रलेखन और आवेदनपत्र।	५
(छ)	लोकोक्तियां और मुहावरे।	५

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे समाज शास्त्र पूर्णाङ्क १००

(इतिहास-भूगोल, नागरिक शास्त्र)

इतिहास—सरल रामायण, सरल महाभारत (राजपाल एण्ड सन्स) ४०

भूगोल (क) भौतिक—अक्षांश और देशान्तर रेखा, ग्रहण, धरातल के प्रकार, जलवायु और मौसम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) एशिया की स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, मुख्य उद्योग, यातायात, व्यापार एवं बन्दरगाह, नगर एवं बन्दरगाह, नगर एवं जनसंख्या।

(ग) खोज की यात्राएं, पृथ्वी के विभिन्न भागों के खोज की कुछ रोचक कहानियाँ—कोलम्बस, वास्कोडिगामा तथा उनकी सामुद्रिक यात्रायें।

सहायक ग्रन्थ—प्रारम्भिक भूगोल द्वितीय भाग।
(कुमारी सुमन वर्मा) चौखम्बा बनारस।

नागरिक शास्त्र—

क—भारतीय सङ्घ के राज्यों का अध्ययन, राज्यपाल, मन्त्रिमण्डल, व्यवस्थापिका सभा, निर्वाचन तथा मताधिकार।

ख—न्याय व्यवस्था, सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्ययालय, जिला न्यायालय।

ग—भारतीय जीवन की कुछ समस्याएं—निरक्षरता, निर्धनता, अस्पृश्यता, कृषि प्रणाली, सामाजिक प्रथाएं।

सहायक ग्रन्थ—

१—संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान, द्वितीय खण्ड
(श्री जगदीश सहाय विसारिया) चोखम्बा

अथवा

१—नागरिक शास्त्र तीसरे भाग का प्रथम खण्ड।
चोखम्बा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　　सामान्य विज्ञान　　　　पूर्णाङ्क १००

द्रव्य मात्रा और भार, कमानीदार तुला, भौतिक तुला, लीवर के सिद्धान्त, आयतन, सुडौल तथा बेडौल वस्तुयें।

घनत्व तथा आपेक्षिक घनत्व, किसी ठोस वस्तु का घनत्व निकालना, द्रव का भार, घनत्व, आपेक्षक घनत्व, आर्कमिडिस का सिद्धान्त. उत्प्लावन. बल, आर्कमिडिस के सिद्धान्त से किसी वस्तु का आपेक्षक घनत्व निकालना।

बैरोमीटर [वायु ताप मापक] साधारण बैरोमीटर बनाना।

थर्मामीटर, थर्मामीटर बनाना, तापक्रम के स्केल, फारनहाइट, सेन्टीग्रेट, र्यूमर उष्मा के प्रभाव।

प्रकाश परावतन तथा वर्तन के नियम, बहुदर्शक यन्त्र, समतल तथा नतादर दपण।

धारा विद्युत्, प्रारम्भिक सेल, विद्युत् धारा के चुम्बकोय प्रभाव, कार्बन डाई आक्साइड एवं आक्सीजन का अध्ययन, चूने के पानी से पहचान, मोमबती के जलने पर आक्सीजन का सहयोग।

कार्बन, सरसों का तेल, शक्कर तथा अन्य वस्तु के जलने पर कार्बन निकलना।

संगमरमर या खड़िया द्वारा गैस तैयार करना। आग बुझाने की मशीन, सोडा वाटर, कार्बनडाई आक्साइड से पत्तियों द्वारा भोजन की तयारी, कार्बनडाई आक्साइड एवं आक्सीजन का चक्र।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगशाला में आक्सीजन का उत्पादन, उसके गुणों का अध्ययन तथा लाभ।

घोल, घोलक, घोलक रूप में पानी, घुलने से द्रव्य नष्ट नहीं होता। घुलने पर ताप का प्रभाव, संतृप्त तथा असंतृप्त घोल, पानी में घुलनेवाली वस्तुएँ, अन्य घोलक द्रव एवं गैसों का घुलना, घुलनशीलता पर ताप का प्रभाव रवे बनाना, रवों पर ताप का प्रभाव, बिना घोल के रवे बनाना, तूतिया या फिटकरी का बड़ा रवा बनाना।

रवे का पानी, रवे पर हवा का प्रभाव, सूती, रेशमी तथा ऊनी कपड़ों पर से दाग और धब्बे दूर करना चिकनाई, मशीन के धब्बे, खून के धब्बे, लाल स्याही के धब्बे, वार्निस के धब्बे, जंग के धब्बे, तारकोल के धब्बे, फल और घास के धब्बे।

सूती कपड़ों की धुलाई।

हमारे शरीर की रचना, मल-विसर्जक अङ्ग, गुर्दे तथा फेफड़ों से विसर्जन, त्वचा से विसर्जन, वृहत् अन्त्र आमाशय द्वारा विसर्जन, यकृत् का कार्य।

लू और चोसर तथा उससे रक्षा।

पौधों की जातियां, पौधों से मनुष्य को लाभ।

पत्तियां, उनकी उपयोगिता, पत्तियों के विभिन्न अङ्ग, भूमि की उर्वरा शक्तियों में भूमि का योग।

रश्मियों और तारों का अध्ययन।

सहायक ग्रन्थ:—जनरल साइंस रीडर द्वितीय भाग
ले० डा० सत्यप्रकाश (चौखम्बा)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भिक विज्ञान और प्राकृतिक निरीक्षण—ले० श्री मनोहरलाल तथा गंगाशरण भार्गव (चौखम्बा)।

[कन्याओं के लिये]

समय ३ घण्टे | गृह विज्ञान | पूर्णाङ्क १००

सैद्धान्तिक ६०

१. स्वास्थ्यविज्ञान=पानी, वायु, दूध, भोजन। भोजन=उसकी देखभाल चौका। उचित रीति से भोजन परोसने की व्यवस्था; भोजन पकाने की विविध विधियां। भोजन को गन्दगी से बचाने का ढंग। बर्तनों की सफाई।

२. भवन की सफाई; मकान का कूड़ा करकट, मल मूत्र, सफाई न रखने से हानियां।

३. कपड़ों की देखभाल—रेशमी तथा ऊनी कपड़ों की विशेष देखभाल; कपड़ों की धुलाई, ऊनी सूती रेशमी।

प्रायोगिक— ४०

१. धुलाई कपड़ों की।

२. सफाई—भवन की।

३. सिलाई—बखिया, काज बनाना, पैबन्द, रफू करना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा परीक्षा (तृतीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | व्याकरण | पूर्णाङ्क १००

क—अष्टाध्यायी मूल ५ से ८ अध्याय कण्ठस्थ ६५
ख—अष्टाध्यायी मूल १ से ४ अध्याय पिछला स्मरण १०
ग—धातुपाठ मूल कण्ठस्थ २५

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | वेद-आर्य सिद्धान्त | पूर्णाङ्क १००

वेद— ६०

सुख की वर्षा करनेवाले प्रभु का आश्रय, चञ्चल इन्द्रियों को सुमार्ग में लगाना, सूर्य-चन्द्र आदि विचित्र सृष्टि की रचना, सर्वव्यापक प्रभु से डर कर पाप न करना. सब दिशाओं में ईश्वर की रचित सृष्टि को देखकर मन को थका देना, निर्मल चित्त होकर ओ३म् के समीप पहुंच जाना, उसे नमस्कार करना।

हवन करने से वायु-जल की शुद्धि, जीवों को परम सुख की प्राप्ति, गृहशुद्धि. ईश्वर की प्रसन्नता, उपकार की भावना, प्रभु की कृपा।

वयोवृद्धों, ज्ञानवृद्धों, विद्यावृद्धों की सेवा से अपना लाभ।

स्वार्थ रहित होकर सृष्टि के पदार्थों को पशु-पक्षियों के लिये भी स्वीकार करना, इन सब पर केवल मनुष्य का ही अधिकार न समझना। [२०]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाचारी, धर्मात्मा, विद्वानों की परिचर्या करना।
सहायक ग्रन्थ—पञ्चमहायज्ञविधिः

आर्यसिद्धान्त—

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि के लिये सद् व्यवहार करना, आत्मज्ञानी, सहनशील, धर्मपरायण, अलोभी का अध्यापक मानना, घमण्डी, बहुत इच्छा रखनेवाले को मूर्ख मानना, शेखचल्ली न बनना, बहुत न बोलते रहना अविश्वस्त में विश्वास न करना विद्या—विघ्नों को दूर करना, विद्याप्राप्ति के लिये ब्रह्मचर्य धारण करना, सब पापों की निवृत्ति ब्रह्मचर्य पालन से मानना, शूरवीर बनना।

विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्या आदि दोषों को छुड़ानेवाली का नाम शिक्षा मानना, विद्या और अविद्या के लक्षण जानना, विद्यार्थी को अत्यन्त प्रेम से पूर्ण प्रयत्न के साथ धर्म व्यवहार की शिक्षा देनेवाले को आचार्य स्वीकार करना।

सत्यवादी, धर्मात्मा, आस्तिक, उद्योगी, परोपकारी दमनशील, जितेन्द्रिय, माता-पिता, आचार्य, अतिथि, बन्धु मित्र, राजा, प्रजा का प्रियकारी बनना।

प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाणों से परीक्षा करके सत्य, असत्य का निश्चय करना, पुरुषार्थ और पुरुषार्थ के भेद, राजा प्रजा के लक्षण, गवर्गण्ड राजा का दृष्टान्त।
पाठ्य पुस्तकः—

व्यवहार भानु—महर्षि दयानन्द कृत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — संस्कृत साहित्य — पूर्णाङ्क १००

क— संस्कृत वाक्य प्रबोध — ३०

ख— नीति शतक [प्रक्षिप्तांश वर्जित] — २०

ग— साहित्य सुधा प्रथम भाग
ले० आचार्य मेधाव्रत जी — १०
प्रकाशक प० दामोदर सातवलेकर

घ— अनुवाद — ३०

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — गणित — पूर्णाङ्क १००

१. अङ्क गणित—वर्गमूल, चक्रवृद्धि ब्याज, धरातल की माप, घन माप, समय की दूरी के प्रश्न, नदी नाव के प्रश्न, चक्कर में चलना, दौड़ खेल के प्रश्न, घड़ी सम्बन्धी प्रश्न, जन्त्री के प्रश्न।

सहायक पुस्तकः— बाल अङ्क गणित तृतीय भाग।

२. रेखा गणित :—आयत का क्षेत्रफल, समानान्तर चतुर्भुज का क्षेत्रफल, त्रिभुज का क्षेत्रफल, वृत्त की परिधि और क्षेत्रफल वर्गीय कागज और तराजू द्वारा शक्लों का क्षेत्रफल जानना, पिथागोरस का सिद्धान्त, निष्पत्ति और अनुपात, प्राय घन और घन के धरातल का क्षेत्रफल तथा घन फल प्रतीत करना बेलन का धरातल और क्षेत्रफल जानना।

३. बीजगणितः— अङ्कगणित से एकता तथा भिन्नता,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ आदि चिह्न, गुणांक, मान, पद, सरल जोड़ तथा घटाना। घनात्मक तथा ऋणात्मक संख्याएं। जोड़ घटाने के कठिन प्रश्न, गुणाक, भागहार, आवश्यकीय सिद्धान्त, मूलक्रिया और स्थानापन्न सरल समीकरण, अक्षरों का प्रयोग, सूत्रों में स्थानापन्न, सरल समीकरण सम्बन्धी प्रश्न।

संख्या २, ३ के लिये सहायक ग्रन्थ—रेखागणित सरल बीजगणित तृतीय भाग।

[विकल्प में] गणित ज्योतिष

पंचांग का साधारण ज्ञान पूर्णाङ्क १००

[कन्याओं के लिये]

पारिवारिक हिसाब किताब।

लेखक-रामलाल गुप्त धनपतराय एण्ड संस दिल्ली

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे हिन्दी पूर्णाङ्क १००

विशेष:—पाठ्य ग्रन्थों से अवतरणों की व्याख्या तथा पाठ्य सारांश पूछे जावेंगे। शब्दार्थ, विलोम, मुहावरे, भावार्थ एवं लेखक का परिचय जानना भी आवश्यक है।

पाठ्यग्रन्थ क— श्रीमद्दयानन्द प्रकाश का वैराग्यकाण्ड [स्वामी सत्यानन्द] ३०

ख— छान्दोग्योपनिषद् विचार माला। (जगदेवसिंह सिद्धान्ती) मधुरप्रकाशन आर्यसमाज मन्दिर, सीताराम बाजार, दिल्ली-६ ३०

ग— व्याकरण-सन्धि, समास, वाक्यरचना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धाशुद्ध प्रयोग ज्ञान, मुहावरों का अर्थ तथा वाक्य में उनका प्रयोग, विराम चिन्हों का प्रयोग ।

सहायक पुस्तक—व्याकरण ज्योत्स्ना, तृतीय भाग । (ले० करुणापति त्रिपाठी) ५

अथवा

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण—ले० केदार नाथ शर्मा, प्रकाशक—चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ।

घ— निबन्ध—वर्णनात्मक तथा सामान्य विचारात्मक । १०

सहायक पुस्तक— निबन्ध प्रभा (श्री रामरंग शर्मा)

ङ— पत्र लेखन और आवेदन पत्र । ५

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे समाज शास्त्र पूर्णाङ्क—१००

(इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र)

इतिहास—लेखराम जी का जीवन चरित्र (स्वामी श्रद्धानन्द)

भूगोल—

क—भौमिक-भूकम्प, ज्वालामुखी, नदी, वायु एवं हिम के कार्य, चट्टानें, सामुद्रिक धाराए, ज्वार भाटा ।

ख—विश्व मह द्वीप और महासागर महाद्वीपों का अध्ययन, स्थिति, सीमा, विस्तार बनावट, जलवायु प्राकृतिक वनस्पति, कृषि मुख्य उद्योग, यातायात, व्यापार एवं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दरगाह, मुख्य नगर, जनसंख्या, विश्व के बृहद् प्राकृतिक खण्ड।

ग प्रायोगिक-भूगोल मापक का अध्ययन, वर्षा, पवन वायु. दबाव,तापमापक यन्त्र, समताप और समभार रेखाएं, भारत, एशिया तथा विश्व के मानचित्र पर पहाड़ों, मुख्य नगरों, नदियों, बन्दरगाहों तथा प्रमुख उद्योगकेन्द्रों का प्रदर्शन।

सहायक ग्रन्थ:--प्रारम्भिक भूगोल तृतीय भाग।
ले० कुमारी सुमन वर्मा

नागरिक शास्त्र :—

१. भारतीय संविधानान्तंगत स्वीकृत मौलिक अधिकारों का संक्षिप्त अध्ययन।
२. भारतीय गणराज्य का संक्षिप्त परिचय।
३. केन्द्रीय शासन व्यवस्था, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मन्त्रिमण्डल विधानसभा।
४. अन्तर्राष्ट्रिय शान्ति संघटन, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसकी शाखाएं।
५. महात्मा गांधी और उनका आध्यात्मिक प्रभाव।

सहायक ग्रन्थ—

संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान, तृतीय खण्ड, श्री जगदीश सहाय विसारिया चोखम्भा

अथवा

नागरिक शास्त्र तृतोय भाग का द्वितीय खण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे सामान्य विज्ञान पूर्णाङ्क १००

गति के नियम।

बल की परिभाषा, वेग, संवेग, गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त, दैनिक जीवन के कुछ साधारण यन्त्र।

द्रव्य के दबाव के नियम, तैरने की क्रिया, नाव, निकलसन हाईड्रोमीटर, लैक्टोमीटर,

उष्मा की इकाई, कैलोरी, उष्मा का प्रभाव, तथा परिवर्तन, उष्मा की परिभाषा, गुप्त ताप परिभाषा।

प्रकाश वर्तनांक की परिभाषा, वर्तनांक निकालना, पूर्णपरावर्तन, मरीचिका, लैंस के भेद, लैंस का उपयोग।

चुम्बक की बल रेखाएं, चुम्बक के अन्य उपयोग, विद्युत् धारा से चुम्बक बनाना, विद्युत् धारा की रासायनिक क्रिया, विद्युत्धारा का तापीय प्रभाव, विद्युत् दर्शक, विद्युत् घण्टी, विद्युत् कन्द।

ध्वनि, ध्वनि का उत्पादन और संचरण, ध्वनि का रूप।

साधारण अम्ल एव काष्टिक सोडा, काष्टिक पोटास, अमोनिया, चूने का पानी, हाईड्रोक्लोरिक अम्ल सल्फ्यूरिक अम्ल, नाईट्रिक अम्ल, मृदु तथा कठोर जल, रासायनिक गुण, स्थायी व अस्थायी कठोरता तथा उनका निराकरण, सामान्य लवण, सोडियमक्लोराइड, नाईट्रेट आदि, धातुवें, धातुओं के साधारण गुण तथा उनके उपयोग, मिश्रधातुओं के साथ स्वर्ण, ताम्र, रजत, यशद या जिंक, शीशा, टीन, लोहा एवं इस्तपात तथा पीतल के विषय में साधारण व्यवहारिक ज्ञान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभप्रद एव हानिप्रद जीवाणु और उन से लाभ, हानिप्रद जीवाणु एवं उनसे बचने के उपाय। घर के कीड़े-मकोड़े मक्खी, मच्छर, खटमल, पिस्सू, तेलचट्टा तथा उनसे बचने के उपाय।

मानव शरीर, स्नायुतन्त्र एवं प्रत्येक का कार्य।

परागण स्वयं तथा पर परागण के विभिन्न उपाय तथा लाभ, फूल के विषय में साधारण ज्ञान, विभिन्न प्रकार के फल तथा उनका वर्गीकरण।

सौर मण्डल, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, मंगल आदि सप्तर्षि मण्डल।

विद्युत् के विषय में साधारण ज्ञान।

सहायक ग्रन्थ—

१. जनरल साइंस रीडर तृतीय भाग
(ले० डा० सत्यप्रकाश)

२. प्रारम्भिक ज्ञान और प्राकृतिक निरीक्षण भाग १–२
(ले० श्री मनोहरलाल भार्गव तथा श्री गंगाशरण भार्गव)

कन्याओं के लिये

समय ३ घण्टे — गृह विज्ञान — पूर्णाङ्क १००

सैद्धान्तिक— ६०

विद्यालय की सजावट–आयको दृष्टिगत रखते हुए।

कीड़े-मकोड़े– हानियां, नष्ट करने का ढंग।

आय—व्ययक

परिवार, समाज तथा विद्यालय में शिष्टाचार।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायोगिक—

१. बनाई—डलिया, झोला ।

२. कढ़ाई—तकिया, गिलाफ, मेजपोश रूमाल ।
बच्चों के कपड़े ।

३. बुनाई—बच्चों के स्वीटर, स्त्रियों के स्वीटर, ब्लाउज ।

४. सिलाई—पेटीकोट, पाजामा, ब्लाउज, फ्राक ।

सूचना—कपड़े का खाका व पैमाना लिखित होना चाहिये और कपड़े की काट कगज पर होनी चाहिए ।

५. भोजन—बालक, स्त्रियों एवं पुरुषों का सन्तुलित आहार दाल, चावल, रोटी, तरकारी, पूड़ी, कचौड़ो, हलवा तथा दो प्रकार की मिठाई, तरकारी व दाल का रूप ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमा परीक्षा (प्रथम खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　　संस्कृत व्याकरण　　　　पूर्णाङ्क १००

क—अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति प्रथमाध्याय ।　　८०

व्युत्पत्तिप्रदर्शन में—पदच्छेद, विभक्ति, समास, अर्थ, उदाहरण, घटनापूर्वकसिद्धि, उदाहरणों के अर्थ, उस सम्बन्ध की ऐतिहासिक बातें, उदाहरणों के समकक्ष बाहर के प्रयोग एवं अशुद्धि परीक्षण सम्मिलित हैं।

इस पत्र में निम्न विषय हैं—

(१) प्रत्याहार सूत्र (२) वृद्धि गुण आदि पारिभाषिक संज्ञायें, आदेश प्रकरण, अतिदेश सूत्र, ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत का निश्चय, उदात्त-अनुदात्त-स्वरित की पहचान, एकशेष प्रकरण, आत्मनेपद-परस्मैपद के निमित्त, कारक विषय ।

ख—सम्पूर्ण मूल अष्टाध्यायी ।　　२०

विशेष—संज्ञा, समास, द्वितीयादि विभक्ति विधान, कृदन्त, तद्धित, स्वर, अङ्गाधिकार, भसंज्ञा अधिकार, षत्व, णत्वप्रकरण आदि के बोध की छात्रों से आशा की जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे गणित पूर्णाङ्क १००

(क) अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति द्वितीय अध्याय (व्युत्पत्ति-प्रदर्शन पूर्ववत्) ८०

इस पत्र में निम्न विषय विशेषतः आते हैं—

अव्ययीभाव, समास, द्वितीयादि तत्पुरुष, समास के भेद, कर्मधारय समास, एकदेशी समास, नित्यसमास, बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास, द्वितीया आदि विभक्ति विधान, एकवत् प्रकरण एवं आदेश विधिः।

(ख) सन्धि विषय—(गुरुकुल कांगड़ी अथवा अजमेर से प्रकाशित) २०

सन्धि का लक्षण, सन्धि के चार भेद-स्वर सन्धि, हलसन्धि, हलस्वरसन्धि, अयोगवाहसन्धियों का परिचय एवं तदनुसार साधन प्रकरण (संज्ञा और परिभाषा प्रकरण परीक्षणीय नहीं है)

विशेष– सन्धि के नियम इसप्रकार छात्रों को हृदयङ्गम कराये जावें कि वे इन्हें हिन्दी में दूसरों को समझा सकें। इसके लिये कुछ अन्य उदाहरण भी तत्सदृश बताये जावें।

सूचना— दोनों पत्रों के 'क' भाग के लिए सहायक ग्रन्थः–

(१) काशिका
(२) अष्टाध्यायी भाष्य (पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद-उपनिषद्-आर्यसिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

अ (१) वेदः-- ३०

त्रैतवाद, वैदिक कर्म की प्रधानता, आत्मरूप से स्वयं को न जाननेवाले की नारकीय गति, ईश्वर को साक्षात् करने की योग्यता, किससे ब्रह्म दूर है और किसके निकट है। मोक्ष प्राप्ति, अविद्या आदि दोष दूर करने के उपाय, परमेश्वर का स्वरूप, नरक में जानेवाले नर-नारी, सृष्टि के कारण-कार्य का विवेक, जड़-चेतन का भेद, देहान्त-समय में कर्त्तव्य, ईश्वर का अनुग्रह एवं उपदेश।

सहायक ग्रन्थः-यजुर्वेद का ४० वां अध्याय महर्षि दयानन्द संस्कृत भाष्य एवं ईशोपनिषद्) दोनों का कण्ठस्थ होना भी आवश्यक है।

(२ उपनिषद् — ४०

(क) मन, प्राण, वाणी, चक्षुः, श्रोत्र का प्रेरक, ब्रह्म के लक्षण, ब्रह्म और देवों का संवाद, इन्द्र और उमा का वास्तविक स्वरूप।

सहायक पुस्तकः— केन

(ख)-वाजश्रवा द्वारा सब कुछ दान दिया जाना, अपने पुत्र को भी मृत्यु को सौंप देना, नचिकेता पुत्र का यमाचार्य से संवाद, तीन वरों का दान नचिकेता को देना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मोद्धार के लिए श्रेय मार्ग का अवलम्बन, जगत् में फंसे रहने के लिए प्रेय पथ का आश्रय, इन्द्रियों का स्वभाव, उन पर विजय पाना, शाश्वत शान्ति के दर्शन। योग विधि।

सहायक पुस्तकः— कठ

(३) आर्य सिद्धान्तः— २०

गौवों का कृषि के साथ सम्बन्ध। एक गाय अपने जन्म काल में प्रति व्यक्ति को दो सेर दूध देकर २५७४० मनुष्यों को तृप्त करती है। गाय की एक पीढी में १५४४४० व्यक्तियों का पालन। घास, तृण, पत्ते, फूल जिसे मनुष्य नहीं खाते, उन्हें खाकर दूध, घृत देनेवाली गाय। गो आदि के नाश से राजा प्रजा का नाश, गो-घातक और रक्षक का संवाद, सात प्रकार के हिंसक लोग, पशुओं की रक्षा के लिए सभा आदि का निर्माण एवं उनके नियम-उपनियम।

सहायक पुस्तक—गोकरुणानिधि (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

आ—सुशीलता (शील, स्वभाव, व्यवहार पर आधारित) १०

विशेष—सुशीलता के अङ्क विद्यालय के प्रधानाचार्य जीवनचर्या के आधार पर निर्धारित करेंगे।

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | संस्कृत साहित्य | पूर्णाङ्क १००

प्रकरण, विग्रह, समास पूर्वक गद्य भाग की संस्कृत में व्याख्या और हिन्दी में अनुवाद। इसी प्रकार पद्य भाग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रकरण, विग्रह, छन्द, समास का ध्यान रखते हुए संस्कृत में व्याख्या और हिन्दी में अर्थ पूछे जायेंगे। एकार्थक और पर्यायवाची शब्द भी हृदयङ्गम किये जावें। सन्दर्भों का अपनी संस्कृत में सक्षेप और पाठों की संस्कृत में व्याख्या करने पर ध्यान दिया जावे।

(क)	विदुरनीति	२०
(ख)	चाणक्यनीति (लघुरूप)	२०
(ग)	पञ्चतन्त्र (मित्रसम्प्राप्ति)	३०
(घ)	अनुवाद हिन्दी भाषा से संस्कृत में	२०
(ङ)	संस्कृत सम्भाषण	१०

टिप्पणी—(ङ) के अङ्क विद्यालय से ही दैनिकचर्या के आधार पर दिये जावेंगे।

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे हिन्दी पूर्णाङ्क १००

इसका उद्देश्य छात्रों द्वारा निबन्ध-रचना तथा व्याकरण के आधार पर भाषा सम्बन्धी शुद्ध और प्रभावोत्पादक प्रयोग, सन्दर्भों की सन्तुलित वा विस्तृत व्याख्या, लेखक-परिचय और आलोचना करना होगा।

पाठ्य-पुस्तक :—

(क)	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश का गंगा काण्ड	३०
(ख)	भारत भारती (प्रथम खण्ड)	३०
(ग)	व्याकरण में सन्धि, समास, कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य, क्रियाभेद एवं कालविवेचन, शुद्धाशुद्ध प्रयोग।	

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक पुस्तक :—मानक हिन्दी व्याकरण। ले०-रामचन्द्र वर्मा (प्रकाशक चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी) ३०

(घ) निबन्ध—

सहायक पुस्तक :—निबन्ध सुधा– ले० कपिलदेव त्रिपाठी।

(प्रकाशक :—प्राच्यभारती प्रकाशन, वाराणसी)

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे अतिरिक्त विषय पूर्णाङ्क १००

(निम्न में से कोई एक विषय लेना अनिवार्य है)

१. सिद्धान्त २. ज्योतिष ३. इतिहास ४. भूगोल ५. नागरिक शास्त्र ६. हिन्दी ७ गणित ८. विज्ञान ९. अंग्रेजी १० पुराणेतिहास ११. कृषि एवं पशु-पालन १२. आयुर्वेद

१. सिद्धान्तः— १००

आर्यावर्त के समान भूगोल में कोई देश नहीं, राजसूय यज्ञ और महाभारत में चीन, अमेरीका और यूरोप देशों से प्रतिनिधियों का आगमन, स्वायंभव राजा से पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य, राज्य-विनाश के कारण, आग्नेयास्त्र आदि विद्याओं का प्रचलन, विनाश काल में विपरीत बुद्धि का होना. ब्राह्मण क्षत्रियों का पतन, पोप की परिभाषा, उसके कार्य, वाममार्गी और उनके कार्य, तन्त्र ग्रन्थों की लीलायें, सौत्रामणि याग, अश्वमेध और गोमेध का वास्तविक अर्थ, यज्ञों में पशु बलि अवांछनीय, जैन मत तथा उसकी अनुचित बातों का खण्डन, शङ्कराचार्य की दिग्विजय, नवीन वेदान्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत निवारण, वाममार्गी और शैवों के कार्य, वैष्णव मत का प्रचलन, तथा कथित ब्रह्मा, विष्णु महेश की रचना, देवी भागवत में मिथ्या कल्पनाएं, चक्रांकितों का वर्णन, मूर्तिपूजा का आदिस्रोत, मूर्तिपूजा से हानियां, सोमनाथ जी क्या पृथ्वी से ऊपर रहते थे। क्या ज्वालामुखी प्रत्यक्ष देवी है? हरद्वार, देवप्रयाग, त्रियुगी नारायण आदि से मुक्ति की मिथ्या कल्पना, गुरुमाहात्म्य, गुरुगीता आदि मिथ्या ग्रन्थ, पुराणों की कथाएं कहां तक सत्य हैं। श्रीमद्भागवत की लीलाएं, अजामेल की कथा, ग्रहों का फल है क्या? गरुड पुराण का मिथ्यात्व।

श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान, वैतरणी नदी की निरर्थकता, कुपात्र और सुपात्र के लक्षण, कर्मफल देनेवाला कौन? भक्तमाल की कथा।

कबीर पन्थ समालोचना, नानक जी की मान्यताएं, गुरु गोविन्दसिंह, खेड़ापा आदि शाखाएं, स्वामी नारायण गोकुलिए– गोसाई मतों की समीक्षा, जाति भेद का विवरण, वाममार्गी और जिज्ञासु का विवाद, ब्रह्मचारी और संन्यासियों की समीक्षा, गृहस्थ और साधक के प्रश्नोत्तर, आर्यावर्तदेशीय राजवंशावली।

सहायक ग्रन्थ– सत्यार्थप्रकाश का एकादश समुल्लास।

अथवा

ज्योतिष

पाठ्य-ग्रन्थ—लीलावती (सम्पूर्ण), ग्रहलाघव अंक १००

अथवा

इतिहास

प्राचीन विश्वासों पर वेदों का प्रभाव, चीन और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्र, चीन का प्राचीन धर्म, बौद्ध धर्म, उपनिषदों का ज्ञानवाद, पारसी धर्म, यहूदी, ईसाई, मोहम्मदी, इनकी मान्यताएं, मध्यकालीन हिन्दू धर्म। जन्म और वैराग्य अमृत की तलाश, विद्या के स्रोत में स्नान, खाण्डव वन, सुधार की प्रारम्भिक दशा, मध्यम दशा, गंगातट पर सिंहनाद, गढ से टक्कर, सुधार की तीसरी दशा, आर्य समाज की स्थापना–बम्बई प्रान्त में प्रचार, उत्तर दिशा में धर्म की गूंज, नियमों की दृढनींव।

आर्य समाज का विस्तार, थ्यासोफी से सम्बन्ध, राजपूताने के कार्य, परोपकारिणी सभा का निर्माण, जीवन का अन्तिम दृश्य, आर्यसमाज का संघटन।

भविष्य के अंकुर, उन्नति युग, डी. ए. वी. कालेज, आर्यप्रतिनिधिसभाओं की स्थापना, सनातन धर्म से संघर्ष, पञ्जाब में मतभेद के अंकुर, गुरुदत्त विद्यार्थी।

सहायक ग्रन्थ—

आर्य समाज का इतिहास (प्रथम भाग)
पृष्ठ १ से २४१ तक निर्धारित।
(ले० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

अथवा

भूगोल

(अ) प्राकृतिक भूगोल:— पूर्णाङ्क १००

१. गणित सम्बन्धी सौरमण्डल, पृथ्वी का आकार विस्तार और उनकी गतियां, दिन रात, ऋतुएं अक्षांश एवं देशान्तर ग्रहण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. स्थल मण्डल चट्टानें, धरातल पर परिवर्तनकारी शक्तियां (जल, वायु तथा हिम के कार्य, भूचाल, ज्वालामुखी, समुच्च रेखाएं ।

३. जलमण्डल: महासागर, सामुद्रिक धाराएं, लहरें और ज्वारभाटा उनके कारण और प्रभाव ।

४. वायुमण्डल: जलवायु तथा मौसम, वायुभार की पेटियां, चक्रवात और प्रतिचक्रवात, ताप वायु भार पवन और वर्षामापक यन्त्र; समताप तथा समवायु भार रेखाएं ।

(आ)–विश्व का भूगोल–

१. महाद्वीपों का अध्ययन-प्राकृतिक बनावट, जलवायु, वनस्पति, मुख्य फसलें, खनिज, उद्योग, प्रमुख नगर, एवं पोताश्रय, यातायात तथा व्यापार ।

२. मुख्य प्राकृतिक खण्डों का अध्ययन, मानवीय क्रियाएं एवं जीवनप्रक्रिया पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव ।

अथवा

नागरिक शास्त्र

नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त—

१. नागरिक शास्त्र, अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व ।

२. नागरिकता-तात्पर्य, प्राप्ति एवं विलुप्ति । नागरिक के अधिकार तथा कर्त्तव्य, उत्तम नागरिकता के पथ में बाधायें एवं निराकरण के उपाय ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. समाज, परिवार तथा अन्य संस्थाओं का महत्त्व ।
४. राज्य की परिभाषा और कर्त्तव्य ।
५. सरकार-प्रकार, राजतन्त्र, कुलीनतन्त्र, प्रजातन्त्र एकात्मक, संघात्मक, संसदीय, अध्यक्षीय, प्रजातन्त्र तथा अधिनायकतन्त्र परिभाषा एवं कर्त्तव्य ।
६. कानून एवं स्वतन्त्रता ।

सहायक पुस्तकें—

१. नागरिक सिद्धान्त कौमुदी —गोरखनाथ चौबे
२. नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त —ओम्प्रकाश केला

अथवा

हिन्दी

पाठ्य-ग्रन्थ :—

(क) आदर्श की ओर [आचार्य भद्रसेन] ४०

प्रकाशक—आदर्श साहित्य निकेतन अजमेर ।

(ख) अर्जन और विसर्जन (श्री मैथलीशरण गुप्त)

प्रकाशक—साहित्य सदन चिरगांव झांसी ।

पूरक पाठ्यग्रन्थ (१) प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियां १५
(२) साहित्य स्रष्टा (मोहन वल्लभ पन्त) १५

प्रकाशक—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी ।

सूचना—पाठ्यग्रन्थों से सन्दर्भसहित व्याख्या, पूरक पाठ्य ग्रन्थों से विवेचनात्मक प्रश्न, कवियों और लेखकों का परिचय पूछा जायेगा ।

अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणित

(क) अङ्कगणित—महत्तम समापवर्तक, लघुतम समापवर्तक, वर्गमूल, मध्यमान, प्रतिशत, लाभ हानि के कठिन प्रश्न, सांझा-पाती, ब्याज साधारण तथा मिश्र, सरल आंकड़ों का आलेख क्षेत्रफल-त्रिभुज, चतुर्भुज तथा वृत्त, क्षेत्रपञ्जी द्वारा क्षेत्रफल, आयतन-वर्तुल, वेलन तथा शंकुगोल।

(ख) बीजगणित—योगादि नियम चतुष्टय, गुणनखण्ड-द्विघाती व्यञ्जक, दो घनों का योग और अन्तर, दो वर्गों का अन्तर महत्तमसमापवर्तक, महत्तमसमापवर्त्य, भिन्न सरल एक वर्ण एक घात समीकरण, दो या तीन अज्ञात वर्गों का युगपत् समीकरण, एक अज्ञात वर्ण का वर्गसमीकरण, समीकरणों पर आधरित प्रश्न।

अथवा

विज्ञान

भौतिक शास्त्र—

स्थिर तथा गतिज अवस्था, वेग, त्वरण, समवेग कार्य, ऊर्जा शक्ति, इनकी परिभाषा तथा इकाइयां, यान्त्रिक शक्ति, इनकी परिभाषा तथा उदाहरण, ऊर्जा के अन्यरूप—ताप, प्रकाश, विद्युत् आदि। द्रव्य तथा शक्ति के बीच सम्बन्ध—दैनिक जीवन के यन्त्र, बैरोमीटर, वायुदाबका मापन, द्रव्य के दाब का नियम, उत्प्लावन बल, पंप, साइफन, उष्मा, ताप की इकाई, ठोसद्रव्य और गैसों का प्रसार, कैलरीमिति, कैलरी—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटर, ठोस की विशिष्ट उष्मा निकलना. दशा परिवर्तन तथा गुप्त ताप बर्फ का गुप्त ताप निकालना, उष्मा का संचरण ।

प्रकाश – गोलदर्पण, नतोदर तथा उन्नतोदर, नतोदर दर्पण के नाभ्यान्तर का सूत्र, दोनों दर्पणों के नाभ्यान्तर निकालना, प्रतिबिम्बों की रचना ।

लेंस के भेद—लेंस द्वारा प्रतिबिम्ब की रचना, लेंस सूत्र, नतोदर लेंस का नाभ्यान्तर निकालना, लेंस का उपयोग, प्रीजम में वर्तन, प्रकाश यन्त्र और हमारे नेत्र, लेंस, कैमरा, मैजिक लैन्टर्न, टेलिस्कोप, मायक्रोस्कोप, पेरीस्कोप ।

रसायन शास्त्र—

रसायन शास्त्र और उसकी उपयोगिता ।

द्रव्य और उसके गुण

अवस्था में परिवर्तन, ठोस वस्तुओं का द्रव्य में विलयन, केलासन, भौतिक और रासायनिक परिवर्तन, पदार्थों की परीक्षा, साधारण उपकरणों का बनाना वायु का अध्ययन ।

तत्व और यौगिक, रसायन शास्त्र की परिभाषा, आक्सीजन, नाईट्रोजन, वायुमण्डल धातुओं पर अम्लों का प्रभाव, हाईड्रोजन जल, कार्बन डाई आक्साईड ।

जीव विज्ञान ;—

जीवन विज्ञान, उद्देश्य तथा लाभ, जीवधारियों के लक्षण, एक सम्पूर्ण जीव की दृष्टि से जीवकोष । प्राणी तथा वनस्पति में एकता, समानता, वर्गीकरण का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य तथा लाभ, जीव जगत् के वर्ग समूह के विषय में सामान्य ज्ञान, प्राणिविज्ञान तथा उनकी सफलता, लाभ तथा इसकी उपयोगिता, प्राणिविज्ञान शिक्षा के विकास, प्राकृतिक तथा प्रायोगिक अध्ययन एवं उपयोगिता।

मेंढक एवं प्राणी के उदाहरण स्वरूप, आवास तथा आकार, प्राकृतिक वितरण और व्यवहार, मेंढक की आन्तरिक रचना विभिन्न अङ्ग संस्थान तथा उनके कार्य, मानव शरीर के विभिन्न अङ्गों के कार्य एवं तुलना।

निम्नवर्गीय प्राणियों का अध्ययन तथा लाभ, लाभदायक तथा हानिकारक प्राणियों के विषय में साधारण ज्ञान, कपास के गुबरीले टिड्डो, रेशम के कीट, मक्षिका, मधुमक्षिका, एवं मच्छर के विषय में साधारण ज्ञान।

प्रायोगिक कार्य;—

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को अवश्य दिखाये जाने चाहियें।

वर्नीयर स्केल का प्रयोग कैलीपर्स तथा स्क्रूगेज का प्रयोग।

भौतिक तुला तथा कमानीदार तुला द्वारा मात्रा और भार निकालना।

लीवर की कार्यविधि दिखाना, ठोस तथा द्रव का आयतन निकालना।

आर्कमेडीस सिद्धान्त की परीक्षा करना।

पानी से हल्के ठोस का अपेक्षित घनत्व निकालना।

यू नली द्वारा किसी द्रव का अपेक्षित घनत्व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालना, वायु के दाब तथा साइफन का कार्य दिखाना।

ताप का संचरण, संवाहन तथा विकिरण दिखाना विभिन्न धातुओं पर ताप का प्रभाव दिखाना, फार्टिन के वायु दाब मापक का पाठ लेना और उसमें तापक्रम सम्बन्धी संशोधन करना।

पानी के क्वथनांक तथा बर्फ के गलनांक पर गन्दगी का प्रभाव दिखाना। उच्चतम निम्नतम तापक्रम यन्त्र द्वारा किसी दिन का उच्चतम तथा तापक्रम निकालना। समतल तथा गोलीय दर्पण का अध्ययन करना, एवं दर्पणों को पहिचानना, प्रीज़म का कार्य दिखाना, जीव-कोष का अध्ययन करना, मेंढक की आंतरिक रचना देखना।

(सूचना—विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो, जिससे विद्यार्थियों को सिद्धान्त तथा व्याख्या बोध गम्य हो। पाठ्यक्रम अध्यापन में इस बात पर ध्यान दिया जाये कि-विज्ञान सम्बन्धी नियमों को वे समझ सकें एवं अपनी चिन्तन शक्ति तथा विचार धाराओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। जब तक प्रयोगात्मक परीक्षा सम्भव न हो-लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों। प्रयोगात्मक पुस्तिका रखना आवश्यक है।)

सहायक ग्रन्थ

१. सरल भौतिकी—के० कुमार एवं भार्गव।
२. प्रारम्भिक भौतिकी—बी० एल० कुलश्रेष्ठ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. सरल रसायन—के० कुमार एवं भार्गव।
४. सरलरसायनविज्ञान—एस० पी० टण्डन।
५. प्रारम्भिकवनस्पति विज्ञान—डॉ० रामकुमार सक्सेना डा० कामेश्वर सहाय भार्गव, प्र०—नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी।
६. वनस्पति विज्ञान—आर० डी० विद्यार्थी।
७. प्रारम्भिक जीव विज्ञान भाग २—एस० पी० टण्डन।

गृह विज्ञान

(केवल कन्याओं के लिये)

सैद्धान्तिक—

(अ) मकान की सफाई, डाक्कर, सजावट, कमरों का वितरण।

(आ) कटाई तथा सिलाई—कमीज, पाजामा, ब्लाउज, मेजपोश, तकिये का गिलाफ।

प्रायोगिक—

त्रिकोणात्मक तथा गोलाकार पट्टियों का बांधना। हड्डियों के टूटने पर उनका उपचार। परिचारिका की परिभाषा, परिचारिका के गुण, रोगिणी का कमरा बिस्तर लगाना, नहलाना, नाड़ी परीक्षा, श्वास तथा तापक्रम का लेखा, बर्फ की टोपी का प्रयोग, गर्म पानी के बोतल का प्रयोग।

वस्त्रों की धुलाई—

सूती कपड़ों का धोना, ऊनी तथा रेशमी कपड़ों का धोना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक विज्ञान—

जौ, साबूदाना, सूजी, दही का अम्ल पानी, दाल चावल तथा खिचड़ी बनाना।

अथवा

अंग्रेजी

(1)	Text—New Clarendan Primer- by P. K. Guha M. A. LL. B	40
(2)	Translation in—Simple Sentences	10
(3)	Grammer—Parts of Speech	10
(4)	Composition—Use of words	10
(5)	Dictation	10
(6)	Recitation	10
(7)	Spelling Exercise	10

अथवा

पुराणेतिहास अथवा कृषि एवं पशुपालन अथवा आयुर्वेद इनका पाठ्य-क्रम पृथक् प्रकाशित किया जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमा परीक्षा (द्वितीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत व्याकरण पूर्णाङ्क १००

(क) अष्टाध्यायी प्रथमा वृत्ति तीसरा अध्याय ५०

व्युत्पत्ति प्रदर्शन—प्रथमखण्ड के समान

इस पत्र में निम्न विषय हैं—

प्रत्ययः, सनाद्यन्त धातु, विकरण विधान, धात्वधिकार उपपद परिचय, कृत् अधिकार कृत्यप्रत्यय, भूत काल में प्रत्ययों का विधान, वर्तमान काल में प्रत्यय विधि, भविष्यत् काल में विधान किये जानेवाले प्रत्यय, भाव में प्रत्यय विधायक सूत्र। अथवा कालविहित प्रत्ययों का साधुत्व, तुमर्थ प्रत्यय, कर्मादि उपपद होने पर धातुओं से प्रत्ययविधि, कर्त्ता, कर्म और भाव में लकारों का होना, क्त का विभिन्न अर्थों में प्रयोग, तिङन्त प्रक्रिया।

ख) उणादि कोष (अर्थ, उदाहरण सिद्धि सहित)। ५०

इसका उद्देश्य छात्रों में शब्दनिर्माणशक्ति का जागरित करना है। विशेषतः यह कोष वैदिक शब्दों के लिए है, इस में आये शब्दों के निर्वचन पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

(क) अष्टाध्यायी ४, ५ अध्याय प्रथमा वृत्ति पूर्ववत् ८०

इसमें निम्नविषय आते हैं—

स्त्रीलिंग शब्दों का निर्माण, तद्धित प्रकरण, अपत्य गोत्र और युव अर्थों में प्रत्ययों का विधान, भिन्न भिन्न अर्थों में विभिन्न प्रत्ययों का होना, मत्वर्थीय और समासान्त प्रत्यय।

(ख) निघण्टु मूल कण्ठस्थ २०

यह वैदिक कोष है, इसका उद्देश्य छात्रों के लिये वेद के शब्दों का ज्ञान सम्पादन करना है। लोक में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों से वैदिक शब्द बहुधा भिन्न होते हैं और उनके अर्थ भी अलग ही हैं। निघण्टु में आए हुये शब्दों का बोध हो जाने से वेदमन्त्रों के अर्थ समझने में सुगमता होती है।

सूचना—दोनों पत्रों के 'क' भाग के लिए सहायक ग्रन्थ पूर्ववत्।

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद–उपनिषद्–आर्यसिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

(क) वेद—

(ख) अनेक सिर असङ्ख्य पैर, अगणित आंखों की शक्ति रखनेवाले एवं हम सब के शिर आदि जिसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर हैं, उस परमात्मा का वर्णन, सूक्ष्म और स्थूल भूतों से युक्त जगत् का वर्णन, सृष्टि की उत्पत्ति, सर्व विश्व का निर्माता ईश्वर एवं उसके बाहर भीतर उसकी व्यापकता, सूर्य चन्द्र आदि लोकों की विभिन्न रचना के अनुमान से ईश्वर का महत्त्व, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भगवान् के एक अंश में विद्यमान। उसके एक अंश से ही सारा जगत् प्रकाशमान।

समष्टिरूप जगत् की परमात्मा से उत्पत्ति, सब का अधिष्ठाता ईश्वर। सामान्य रूप से विश्व की उत्पत्ति ईश्वर द्वारा दिखाकर विशेषरूप से आगे दिखाना—भोग्य पदार्थ दही की रचना, ग्रामस्थ और वनस्थ गौ तथा सिंह आदि पशुओं का निर्माण ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की ईश्वर से उत्पत्ति, घोड़े, गधे, दो ओर दान्तवाले, गौ आदि एक भाग में दान्तवाले प्राणियों का जन्म, उस सृष्टि कर्ता ईश्वर का अपने हृदय में ध्यान, विद्या शमदमादि गुणों में उत्तम ब्राह्मण है इसलिए वह मुख के समान है। बाहु के समान कार्य साधक क्षत्रिय हैं, व्यवहार-कुशल वैश्य हैं, सेवा-प्रवीण शूद्र हैं।

इससृष्टि में चन्द्रमा मन रूप, सूर्यलोक चक्षु-स्थानीय, वायु-प्राण श्रोत्रवत् आदि का वर्णन।

प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार आदि इक्कीस का वर्णन; सब कर्मों में प्रमुख ईश्वरोपासना, जिज्ञासु के लिए विज्ञान उपदेश का प्रकार, सूर्य के स्वरूप का निरूपण, विद्वानों का कर्त्तव्य।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आ) ईश्वर के अनेक नाम, योगाभ्यास से उसकी प्राप्ति, भगवान् की प्रतिमा नहीं, प्राण, श्रद्धा, आकाश वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप मन्त्र, कर्म, लोक और नाम इन सोलह कलाओं के उत्पा- दक होने से ईश्वर का सोलह कलावाला होना, पिताओं का पिता कौन ? ईश्वर-प्राप्ति के उपाय, भगवान् से सद्बुद्धि की याचना।

सहायक ग्रन्थः—यजुर्वेद का ३१ वां ३२ वां अध्याय

(महर्षि दयानन्दभाष्य संस्कृत में)

(ख) उपनिषद्—ब्रह्मा द्वारा अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को ब्रह्म-विद्या का उपदेश, शौनक के अगिरा से प्रश्न, दो विद्या—परा और अपरा।

ईश्वर उपासना से दो प्रकार की योग्यता का आवि- र्भाव,-ब्रह्माण्ड रचयिता भगवान् को जानने का सामर्थ्य पाना, २—वीर्य स्खलन रूप दोष विकार के न होने से ऊर्ध्वरेता होना। इच्छावालों का भी कामना-हीन होना, ईश्वर की प्राप्ति में मेधा, श्रवण का स्थान न होना। आत्मिक बल, अप्रमाद और निरन्तर तप से ईश्वर सिद्धि, ब्रह्मोपासना से—वैराग्य, यत्नशीलता, अन्तःकरण की निर्मलता की प्राप्ति। सम्पूर्ण संदेहों की निवृत्ति। परमात्मा से ही अखिल जगत् का प्रकाशित होना प्रतीति, इन गुणों का आधान।

जीव और परमेश्वर का सखा रूप से वर्णन, दोनों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भेद निरूपण, सत्य, तप सामयिक ज्ञान और ब्रह्मचर्य से लाभ, ईश्वर-प्राप्ति में चित्त आदि का प्रमुख स्थान।

प्रणव को धनुष, शर को आत्मा, ब्रह्म को शर का लक्ष्य बनाकर उपासना, सात प्रकार की अग्निज्वालाओं का वर्णन, मूढ़ और कुशल विद्वानों का प्रतिपादन, मूढ़ों के पीछे चलना अधोगति का हेतु।

सहायक पुस्तकः—मुण्डक (नारायण स्वामीभाष्य)

(ग) आर्यसिद्धान्त— २५

(अ) उत्तम माता, श्रेष्ठ पिता और योग्य आचार्य से बालकों का निर्माण, बच्चे के जन्म के अनन्तर ५ वर्ष तक माता द्वारा उसे शिक्षा-प्रदान, स्वर-व्यञ्जनों का स्पष्ट उच्चारण-शिक्षण, राजा-प्रजा से व्यवहार करने की शिक्षा, परस्पर बर्ताव के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य अर्थसहित कण्ठस्थ कराना, भूत-प्रेत क्या है बताना, अनाचारियों से बचने और विद्वानों के संग करने की शिक्षा देना, ग्रहों की वास्तविक स्थिति बताना, फलित ज्योतिष और जन्म-पत्र की निःसारता।

शीतला, मन्त्र तन्त्र यन्त्र निरूपण, बच्चों के लालन में दोष और ताडन में गुण दिखाना, चोरी-जारी मादक द्रव्य से दूर रहने का शिक्षण, अपने से बड़ों के साथ आचरण की शिक्षा, बालकों को न पढाने वाले माता-पिता उनके शत्रु।

(आ) गृहस्थ आश्रम के पश्चात् वानप्रस्थ का विधान,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके कर्त्तव्य—स्त्री को बड़े पुत्र के समीप छोड़ जाना, वा साथ ले जाना, घर की सब सामग्री छोड़कर अग्निहोत्र का सामान साथ लेकर जंगल में निवास करना, वन के फल मूल-कन्द का सेवन करना, स्वाध्याय, दमनशील, भूमि पर सोने का स्वभाव बनाना। भिक्षाचरण करना।

संन्यास विधि—एक क्रमिक, दूसरा ब्रह्मचर्य से। संन्यासी का कर्तव्य-वाणी और मन को नियम में रखना, वैराग्य धारण किये रहना, योगाभ्यास करना, मूढ़ों जैसा आचरण न करना, पुत्र, धन, प्रतिष्ठा की इच्छाएं छोड़ना, नीचे दृष्टि रखकर चलना आदि, सब का मगल चाहना, केवल एक अपने परमात्मा को ही सहायक समझना।

दूषित किये जाने पर भी धर्म को न छोड़ना, धृति-क्षमा आदि धारण करना, वैदिक विधान द्वारा सब सङ्गों को छोड़ कर ब्रह्म में ही विचरण करना।

संन्यास दीक्षा की आवश्यकता, ब्राह्मणों का नियन्ता संन्यासी, सन्यासी को दिये गये धन के उत्तम उपयोग होने की सम्भावना, वैरागी गुसाई, साखी आदि की ती संन्यासियों में न होने का कारण-निरूपण।

सहायक ग्रन्थ :—सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय और पांचवां समुल्लास।

(घ) सुशीलता (परीक्षा पूर्व खण्ड के तुल्य है)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३घण्टे　　　　संस्कृत साहित्य　　　　पूर्णाङ्क १००

प्रकरण, विग्रह, समासपूर्वक गद्य, पद्य भाग की संस्कृत में व्याख्या और हिन्दी में अनुवाद कराया जायेगा, एकार्थक एवं पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान भी आवश्यक है। संदर्भों का और पाठों का संक्षेप संस्कृत में करना छात्रों की योग्यता का परिचायक होगा।

पाठ्य पुस्तक :—

(क)	पञ्चतन्त्रम् (अपरीक्षित कारकम्)	२५
(ख)	वैदिक गीता १ से ६ अध्याय (श्री स्वामी आत्मानन्द जी) वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर, अम्बाला।	२५
(ग)	निबन्ध रचना	२०
(घ)	पत्र लेखन-आवेदन पत्र	१०
(ङ)	अनुवाद हिन्दी से संस्कृत में	१०
(च)	संस्कृत सम्भाषण [परीक्षा पूर्वखण्ड सदृश]	१०

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　　हिन्दी भाषा　　　　पूर्णाङ्क १००

इसका उद्देश्य छात्रों द्वारा निबन्ध रचना तथा व्याकरण के आधार पर भाषा सम्बन्धी शुद्ध और प्रभावोत्पादक प्रयोग, सन्दर्भों की सन्तुलित वा विस्तृत व्याख्या लेखक परिचय प्राप्ति और आलोचना करना होगा।

पाठ्य पुस्तक :—

[क]	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश का काशी काण्ड	१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ख] भारत भारती [द्वितीय खण्ड] १०
[ग] व्याकरण में—वाक्य विचार, वाक्य विश्लेषण तथा शुद्धाशुद्ध प्रयोग। १०

सहायक पुस्तक :—

मानक हिन्दी व्याकरण—ले० रामचन्द्र वर्मा
[प्रकाशक— चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी—१]

[घ] निबन्ध रचना पत्र-लेखन ३०

सहायक पुस्तक—

निबन्ध सुधा ले० कपिलदेव त्रिपाठी
(प्र० प्राच्य भारती प्रकाशन वाराणसी-१)

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे अतिरिक्त विषय पूर्णाङ्क १००

(निम्न में से कोई एक विषय लेना अनिवार्य है)

१. सिद्धान्त २. ज्योतिष ३. इतिहास ४. भूगोल ५. नागरिक शास्त्र ६. हिन्दी ७. गणित ८. विज्ञान ९. अंग्रेजी १०. पुराणेतिहास ११. कृषि एवं पशु पालन १२. आयुर्वेद

१—सिद्धान्त :— १००

(अ) चारवाक मतसमीक्षा, बौद्ध मत निरूपण, जैन मत वर्णन, सप्तभंगी और स्यादवाद, जैन बौद्ध पर्यायवाची हैं. आस्तिक और नास्तिक का संवाद, क्या जगत् अनादि है ? जैन मतानुसार कालपरिमाण, जैनमतानुसार भूमि परिणाम, जैन मतानुसार जीवाजीव स्वरूप वर्णन, जैन धर्म प्रशंसा, मूर्ति पूजा जैनियों से चली, जैन साधुओं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लीला, जैनों की मुक्ति का वर्णन, कुछ असम्भव बातें, जैन साधुओं के लक्षण, जैन तीर्थङ्कर वर्णन, जैनों की मिथ्या बातें, जम्बू द्वीपादि वर्णन ।

(आ) कृश्चीनमत समीक्षा, तौरेत का विषय, तौरेत यात्रा की पुस्तक, लयव्यवस्था की पुस्तक, गिनती की पुस्तक, समुएल की दूसरी पुस्तक, राजाओं की पुस्तक, जबूर का दूसरा भाग, ऐयूब की पुस्तक, उपदेश की पुस्तक, मत्तीरचितइंजील का विषय, मार्क रचित इंजील का विषय, लूक रचित इंजील, योहनरचित सुसमाचार, योहन की अद्भुत बातें।

सहायक पुस्तक–सत्यार्थप्रकाश १२, १३ समुल्लास ।

अथवा

ज्योतिष

भास्करीय बीजगणित

(नवीन बीज गणित के तत् तत् उदाहरण सहित)

अथवा

इतिहास

पाठ्य पुस्तक—

आर्यसमाज का इतिहास (इन्द्र विद्यावाचस्पति)

क—प्रथम भाग के २४१ पृष्ठ से सामयिक तथा स्थायी साहित्य के अन्त तक।

ख—द्वितीय भाग के १ पृष्ठ से १३६ तक (शताब्दी महोत्सव के सभा सम्मेलन से पहले पहले ।

अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

(अ) भारत का भूगोल—

१. सामान्य एवं प्राकृतिक स्थिति, विस्तार एवं सीमा प्राकृतिक बनावट, जलप्रवाह, प्राकृतिक विभाग जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी।

२. उत्पादन एवं उद्योग, वनसम्पदा, कृषि एवं सिंचाई, खनिज नदी, घाटी, बहुध्येयी योजनाएं, प्रमुख उद्योग लोह, इस्पात सूती-ऊनी वस्त्र, जूट, रेशम, चीनी, कागज, कांच, सीमेंट, चर्म, दियासलाई, पोत निर्माण, स्वचालित वाहन एवं वायुयान।

३. यातायात एवं व्यापार, सड़कें, रेलमार्ग, जलमार्ग–इनके विकास एवं महत्त्व; औद्योगिक एव व्यापारिक नगर तथा पोताश्रय; भारत के आयात निर्यात।

४. जनसंख्या, विकास एवं वितरण, घनत्व, भौगोलिक वातावरण का प्रभाव।

[ब] भारतीय राज्य, भारत के राजनीतिक विभाग, राज्यों की स्थिति, सीमा एवं विस्तार, फसलें, उद्योग, (बृहत् एवं लघु) यातायात, नगर, जनसंख्या का वितरण।

अथवा

नागरिक शास्त्र

(क) प्राचीन भारत में राजत्व का उद्भव, राजा का स्थान, कर्तव्य, योग्यता एवं अधिकार।

मन्त्रिपरिषद् तथा प्राचीन भारतीय गणतन्त्र का स्वरूप

३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक ग्रन्थ—

शुक्रनीति प्रथमाध्याय, मनुस्मृति सप्तमाध्याय

(ख) नव संविधानान्तर्गत नागरिक के नैतिक अधिकार। ५०

भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएं, केन्द्र एवं प्रादेशिक शासनव्यवस्था का संक्षिप्त अध्ययन।

सहायक ग्रन्थ—

१. नागरिक शास्त्र और भारतीय शासन (गोरखनाथ चौबे)
२. नागरिक शिक्षा (द्वितीय भाग) लक्ष्मीशंकर एवं जगदीशनारायण सिनहा।
३. कौटिलीय अर्थशास्त्र (सम्बधी अध्याय)
४. उदीयमान नागरिक—रामनरेश मिश्र (हिन्दुस्तान बुक डिपो मथुरा)

अथवा

पाठ्यग्रन्थ (क)—

१. गद्य—आत्मानन्द-जीवन-ज्योतिः ले० स्वामी वेदानन्द वेदवागीश (उत्थानिका सहित धर्माग्रह प्रकाश तक निर्धारित) ४०

प्रकाशक—गुरुकुल झज्जर रोहतक हरयाणा

२. तरङ्गित हृदय ले० आचार्य अभयदेव शर्मा १०

प्राप्ति स्थान—गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली—६

(ख) पद्य—राजा प्रजा (मैथिलीशरण गुप्त) २०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—साहित्यसदन चिरगांव झांसी।

(ग) अलङ्कार--यमक, अनुप्रास, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा प्रतीप, अतिशयोक्ति।

(घ) छन्द,--दोहा, चौपाई, रोला, हरिगीतिका, कविता, कुण्डलियां।

(ग-घ) के सहायक ग्रन्थ-काव्याङ्ग कौमुदी भाग-१

सूचना—पाठ्य-ग्रन्थों मे सन्दर्भ सहित व्याख्या, कवियों और लेखकों का परिचय पूछा जायेगा।

अथवा

गणित

(ज्यामिति के पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक और संख्यात्मक ज्यामिति रहेगी। परीक्षार्थी को दोनों में उत्तर लिखने आवश्यक होंगे। प्रयोगात्मक ज्यामिति में पटरी, परकार, समकोण तथा पेंसिल अपने पास से लाने होंगे। सैद्धान्तिक-ज्यामिति में तर्कसङ्गत उपपत्तियां मान्य होंगी तथा उनके लिये परीक्षार्थियों को आकृति बनाने की अनुमति है। प्रश्नपत्र में प्रमेय, निर्मेय तथा तदाधारित प्रश्न पूछे जायेंगे।

[क] प्रयोगात्मक-ज्यामिति—

सरलरेखा तथा कोणों का समद्विभाजन।

सरलरेखा पर समकोण की रचना।

निर्दिष्ट कोण के तुल्य कोणों की रचना।

निर्दिष्ट सरलरेखा के समानान्तर सरलरेखा बनाना।

पर्याप्त निर्दिष्ट आंकणों से त्रिभुज और चतुर्भुज की रचना के सरल उदाहरण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्दिष्ट सरलरेखा को अभीष्ट तुल्य भागों में बांटना। निर्दिष्ट बहुभुज के क्षेत्रफल के तुल्य क्षेत्रफल वाले त्रिभुज की रचना।

वृत्त की स्पर्शियों की तथा दो वृत्तों की उभयनिष्ठ स्पर्शियों की रचना।

पर्याप्त आंकड़ों से वृत्तों की रचना के सरल उदाहरण। निर्दिष्ट वृत्त के अन्तः वा बहिः समभुज, त्रिभुज, वर्ग, पञ्चभुज, षड्भुज और अष्टभुज की रचना।

(ख) सैद्धान्तिक—ज्यामिति—

त्रिभुज तथा सरल रेखात्मक आकृतियां।

त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के तुल्य होता है। यदि किसी उन्नतोदर बहुभुज की भुजाएं एक ही क्रम से बढ़ाई जाएं, तो इस तरह बने बहिःकोणों का योग चार समकोणों के तुल्य होता है। यदि दो त्रिभुजों में एक की दो भुजाएं दूसरे के दो भुजाओं के तुल्य हों तथा पहिले की दो भुजाओं में समाविष्ट कोण दूसरी की दो भुजाओं में समाविष्ट के तुल्य हों तो त्रिभुज अनुरूप होंगे। यदि किसी त्रिभुज की दो भुजाएं तुल्य हों तो उनके संमुख कोण भी परस्पर तुल्य होंगे। इसका विलोम—

यदि दो त्रिभुजों में एक की तीनों भुजाएं दूसरे की तीनों भुजाओं के तुल्य हों तो त्रिभुज अनुरूप होंगे। यदि दो जात्य त्रिभुजों में एक का कोण दूसरे के कोण के तुल्य हो तथा एक की एक भुजा दूसरे की एक भुजा के तुल्य हो तो त्रिभुज अनुरूप होंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि किसी त्रिभुज की दो भुजाएं तुल्य न हों तो बड़ी भुजा का सम्मुख कोण बड़ा होता है।

इसका विलोम—

किसी सरलरेखा बहिर्गत निर्दिष्ट बिन्दु से सरल रेखा तक खिंची हुई सरलरेखाओं में लम्ब रेखा लघुतम होगी।

समानान्तर-चतुर्भुज की सम्मुख भुजाएं तथा कोण तुल्य होते हैं। इसके विकर्ण समानान्तर चतुर्भुज को तथा एक दूसरे को दो तुल्य भागों में बांटते हैं। यदि तीन या तीन से अधिक समानान्तर रेखाओं को कोई सरल रेखा काटे और ऊपर बने अन्तः खण्ड परस्पर तुल्य हों तो उन सरल रेखाओं को काटने वाली किसी अन्य सरल रेखा पर बने अन्तः खण्ड भी परस्पर तुल्य होंगे।

त्रिभुजों, आयतों तथा समानान्तर चतुर्भुजों के क्षेत्रफल—

यदि किसी त्रिभुज की भुजा का सम्मुखकोण अधिक सम अथवा न्यून हो तो उस पर बना वर्ग अन्य दो भुजाओं पर बने वर्गों के योग से क्रमशः बड़ा बराबर तथा कम होगा। असमता की स्थिति में अन्तर एक भुजा तथा दूसरी भुजाके उस पर बने विक्षेप द्वारा बने आयत के दुगुने के तुल्य होगा।

किसी भी त्रिभुज में दो भुजाओं पर बने वर्गों का योग तीसरी भुजा पर आधे पर बने वर्ग तथा उसे समद्वि-भाजित करने वाली मध्यम रेखा के वर्ग के योग से दूना होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधियां :—

उस बिन्दु की निधि जो दो स्थिर बिन्दुओं से सदा तुल्य दूरी पर रहती है, स्थिर बिन्दुओं को मिलाने वाली सरल रेखा की लम्ब रूप में अर्धक सरल रूप रेखा है।

दो छेदक सरल रेखाओं से समदूरी पर स्थित बिन्दुओं की निधि वे दो सरल रेखाएं होती हैं जो उन छेदक रेखाओं से बने कोणों को अर्जित करती हैं।

वृत्त—

यदि कोई केन्द्रगामी सरल रेखा व्यास के अतिरिक्त जीवा को आधा करे तो वह उस पर लम्ब होती है। विलोमत: केन्द्रगामी लम्बरेखा जीवा को आधा करती है। उन तीन बिन्दुओं में से जो एक रेखा पर स्थित नहीं हैं वह एक तथा केवल एक वृत्त ही कहा जा सकता है।

तुल्य वृत्तों में (अथवा एक ही वृत्त में)(१)यदि दो चाप केन्द्रों पर तुल्य कोण छेके तो वे परस्पर तुल्य होंगे। (२) विलोमत: यदि दो चाप तुल्य हों तो वे केन्द्र पर तुल्य कोण छेकेंगे।

तुल्य वृत्तों (अथवा एक ही वृत्त में) (१) यदि दो जीवाएं तुल्य हों तो उनके चाप भी तुल्य होते हैं। (२) विलोमत: यदि दो चाप तुल्य हों तो उनकी जीवायें भी तुल्य होती हैं।

वृत्त में तुल्य जीवाएं केन्द्र से समान दूरी पर होती हैं। इसका विलोम— वृत्त की किसी स्पर्श रेखा के स्पर्श बिन्दु से जाने वाली त्रिज्या उस पर लम्ब होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि दो वृत्त परस्पर स्पर्शी हों तो स्पर्श बिन्दु उनके केन्द्रों को मिलाने वाली सरलरेखा पर स्थित होती है।

किसी चाप द्वारा केन्द्र पर छेका गया कोण उसी द्वारा शेष परिधिस्थ किसी बिन्दु पर छेके गये कोण का दूना होता है।

एक ही वृत्तखण्ड के कोण तुल्य होते हैं। यदि दो बिन्दुओं को मिलाने वाली सरलरेखा एक ही ओर के दो अन्य बिन्दुओं पर तुल्य कोण छेकती है तो चारों बिन्दु एक वृत्तस्थ होंगे।

वृत्तार्द्ध का परिधि कोण समकोण होता है। यदि वृत्त-खण्ड वृत्तार्द्ध से बड़ा हो तो उसका परिधि कोण सम-कोण से न्यून तथा यदि वृत्तखण्ड वृत्तार्द्ध से न्यून हो तो उसका परिधि कोण समकोण से बड़ा होता है।

वृत्तान्तर्लिखित चतुर्भुज के संमुख कोण पूरक होते हैं। इसका विलोम— यदि कोई सरल रेखा किसी वृत्त को स्पर्श करती है तथा स्पर्श बिन्दु से कोई जीवा खींची गई है तो स्पर्शी और जीवा से बने हुए कोण एका-न्तर चापखण्डों के परिधि कोणों के तुल्य होते हैं।

यदि वृत्त की दो जीवायें वृत्त के अन्तः अथवा बहिः एक दूसरे को कटे तो एक के खण्डों से बना आयत दूसरे के खण्डों से बने आयत के तुल्य होता है।

विज्ञान

सूचना— विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो, जिससे विद्यार्थियों को सिद्धान्त तथा व्याख्या बोधगम्य हो। पाठ्यक्रम अध्या-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन में इस बात पर ध्यान दिया जाए कि— विज्ञान सम्बन्धी नियमों को वह समझ सके एवं अपनी चिन्तन-शक्ति तथा विचारधाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। जब तक प्रयोगात्मक परीक्षा सम्भव नहीं हो –लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों। प्रयोगात्मक पुस्तिका रखना आवश्यक है।

भौतिक शास्त्र—

चुम्बकत्व, चुम्बक के नियम, ध्रुव की इकाई, चुम्बक की बेलरेखाएं, प्रदर्शन, चुम्बकीय प्रेरण, चुम्बकत्व और उसके तत्त्व। विद्युत्. स्थिर विद्युत् प्रेरणा, इलेक्ट्रोफोरस, तथा अन्य विद्युत् यन्त्र।

धारा विद्युत्— प्रारम्भिक सेल के दोष और उनका निवारण, उदासीन सेल, लकलांची सैल, शुष्क सैल, धारा विद्युत् का रूप, विद्युत् वाहक बल, विभव, विभवान्तक-प्रतिरोध, ओहम के नियम, विद्युत् धारा के रासायनिक नियम, विद्युत् धारा का तापीय प्रभाव।

विद्युत् सरकिट—फूज, विद्युत् मोटर, विद्युत् पंखा, विद्युत् प्रेरण।

ध्वनिः—ध्वनि का तरंग, परावर्तन, वेग, संतरण इत्यादि सुरीली ध्वनि के विशिष्ट गुण। ग्रामोफोन के सिद्धान्त।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन शास्त्र—

नमक का अम्ल या हाईड्रोकोलिक अम्ल गैस और क्लोरिन। शोरा और शोरे का अम्ल (नाईट्रोक अम्ल) नोसादर या अमोनियम क्लोराइड तथा अमोनिया। गन्धक, सल्फर डाइआक्साईड, सल्फर ट्राईआक्साईड और गन्धक का अम्ल।

अम्ल, क्षार एवं लवण, सोडियम हाईड्रोक्साइड, सोडियम क्लोराईड, सोडियम कार्बोनेट और सोडियम बाईकार्बोनेट, चूना, बुझा हुआ चूना, चूने का जल कुछ धातु तथा मिश्र धातु. तांबा, पारा, लोहा, तथा मिश्र धातु पीतल कांसा का अध्ययन। बेंजिन पैट्रोलियम, महत्त्व-पूर्ण योगिक।

रासायनिक प्रयोग के सिद्धान्त और परमाणुवाद का सामान्य ज्ञान। परमाणु भार और अणु भार का सामान्य ज्ञान। रासायनिक तुल्यांक और संयोजक शक्ति या सयोजकता का सामान्य ज्ञान। सकेत सूत्र और समी-करण के सम्बन्ध में साधारण ज्ञान।

रासायनिक गणना का सामान्य ज्ञान।

जीव विज्ञान—

जीव विज्ञान के दो मुख्य भाग, वनस्पति विज्ञान तथा उसकी सफलता, लाभ तथा उपयोगिता, वनस्पति विज्ञान शिक्षा का उपाय प्राकृतिक तथा प्रायोगिक अध्ययन एवं उपयोगिता।

बीज एकदल तथा द्विदल संरचना तथा अंकुरण। पौधों में जड़ तथा पत्तियों के विभिन्न अंगों के विषय में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा उनके कार्य के विषय में साधारण ज्ञान। जड़ तथा तने में रूपान्तर तथा उनके कार्य। जीवाणु काई या शेवाल फंजाई से लाभ तथा इसकी उपयोगिता, (एण्टी-बायोटिक) एवं अन्यान्य व्यावहारिक उपयोग या आधुनिक माईक्रोबायोलोजी का उपयोग)

प्रायोगिक—

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को दिखाए जाने चाहियें —

चुम्बक के गुणों को दिखाना। सूई को चुम्बक बनाना, चुम्बकीय बल रेखाओं को प्रदर्शित करना। इलैक्ट्रोफोरस की कार्यविधि दिखाना, सीसे एबोनाईट छड़ को विद्युन्मय बनाना, प्रारम्भिक सेल तैयार करना, एवं कार्यविधि दिखाना, ओम के नियम दिखाना।

अम्ल क्षार तथा लवण के गुणों को देखना। मिश्रण को अलग करना, बालू, सोडा, कपूर गन्धक, लोहचूर्ण बुरादा आदि का किसी बन्द बर्तन में मोमबती जलाकर हवा के अवयव को दिखाना।

आक्सीजन कारबोनआक्साईड, नैट्रोजीन तथा हाई-ड्रोजन बनाना तथा उनके गुणों को देखना, रवे बनाना, (नमक, फिटकरी और तूतीया) लोहा, कोयला, तांबा, गन्धक के गुणों को देखना। एक दल एव द्विदल बीजों का अध्ययन करना तथा उनके अंकुरण देखना। विभिन्न वर्ग के फलों का अध्ययन करना, जड़ तथा तने का अन्तर ज्ञान करना। (मौरफोलाजी तथा एनाटमी) पौधों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के फिजियालोजी में श्वसन, फोटोसिनिथियस एवं ट्रांसपीरेशन का अध्ययन करना।

१. सरल भौतिकी —कुमार एवं भार्गव।
२. प्रारम्भिक भौतिकी —बी० एल० कुलश्रेष्ठ।
३. सरल रसायन —के० कुमार एवं भार्गव।
४. सरल रसायन विज्ञान — एस० पी० टण्डन।
५. प्रारम्भिक वनस्पति विज्ञान—डा० रामकुमार सक्सेना, डा० कामेश्वर सहाय भार्गव, प्र० नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
६. वनस्पति विज्ञान — आर० डी० विद्यार्थी।
७. प्रारम्भिक जीव विज्ञान भाग २—एस० पी० टण्डन।

गृह विज्ञान
(केवल ब्रह्मचारिणियों के लिए)

सैद्धान्तिक—

शरीर विज्ञान —श्वास प्रक्रिया, रेचन। मानव शरीर रचना, पाचन संस्थान, श्वास संस्थान, रक्त संचालन, उत्सर्जन संस्थान।

स्वास्थ्य विज्ञान — वैयक्तिक स्वच्छता तथा बीमारियों से बचने के उपाय।

गृह विज्ञान —कूड़ा करकट तथा मलमूत्र को हटाना, गृह स्वामिनी के कर्त्तव्य।

प्रायोगिक —

बच्चों की बीमारियां। कृत्रिम श्वास क्रिया का उपयोग। साधारण विषैली वस्तुओं के प्रभाव को दूर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाली औषधियों का ज्ञान। सर्पदंश का उपचार। व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान में ले जाना। हाथ पर घायलों को ले जाना।

सिलाई– उत्तम काम, फ्राक, स्त्रियों के वस्त्र। उत्तम सिलाई, तकिये का गिलाफ, मेजपोस, काढे के पात्र का आवरण।

वस्त्रों की धुलाई —सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की धुलाई।

पाक विज्ञान —जौ, साबूदाना, सूजी, दही का पानी, दाल-खिचड़ी तथा चावल बनाना।

अथवा

अंग्रेजी

1.	Prescribed Text	40
2.	Grammer —Parsing of nouns, Pronouns, adjectives and verbs.	10
3.	Translation =All forms of the three tenses.	10
4.	Composition —Farming sentenses on simple topics.	10
5.	Dictation.	10
6.	Recitation.	10
7.	Spelling exercise.	10

Prescribed Text

New clorendon reader part 1 by P. K. Guha.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा
पुराणेतिहास
अथवा
कृषि एवं पशुपालन
अथवा
आयुर्वेद
तीनों का पाठ्यक्रम पृथक् प्रकाशित किया जायेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमा परीक्षा (तृतीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | संस्कृत व्याकरण | पूर्णाङ्क १००

क—अष्टाध्यायी प्रथमा वृत्ति षष्ठाध्याय—— ७५

व्युत्पत्ति प्रदर्शन प्रथम खण्ड के समान

इस पत्र में निम्न विषय सम्मिलित हैं :—

द्वित्वप्रकरण, जिसमें लिट्. सन्, यङ् परे रहने पर द्विर्वचन विधि है, संप्रसारण विधान, एजन्त धातुओं को आकारादेश । तुक्. यण, अय्, अव् आय् आव्, आदेश। अच् सन्धि, सुट् आगम, उदात्त आदि स्वरविधान, बहुव्रीहि समास का स्वर, तत्पुरुष समास में पूर्व पद का अपना स्वर, द्विगुसमास में पूर्व पद का स्वर, चतुर्थ्यन्त, द्वितीयान्त, तृतीयान्त पदों के परे रहने पर पूर्व पद का प्रकृति स्वर आदि, पूर्व पद का आद्युदात्त, पूर्व पद का अन्तोदात्त, उत्तर पद का आद्युदात्त उत्तर पद का अन्तोदात्त ।

बहुव्रीहिसमास में भिन्न-भिन्न पदों का अन्तोदात्त ।

अलुक् प्रकरण, आनङादेश, पुंवद्भाव विधि, ह्रस्व-विधान, आकारादेश, शब्दादेश, मुम्, नुट् आगम आदेश-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकरण, दीर्घ विधायक सूत्र, अङ्गाधिकार, असिद्धवद्-त्राभात् प्रकरण, इयङ्, यणादेश विधि आदि, भस्य का अधिकार।

ख— फिट् सूत्र;— १

इसमें प्रातिपदिक(शब्दों) पर उदात्त आदि स्वर बताए गए हैं।

ग — सम्पूर्ण मूल अष्टाध्यायी— १

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे — संस्कृत व्याकरण — पूर्णाङ्क १०

क— अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति सप्तम और अष्टम अध्याय ७
व्युत्पत्ति प्रदर्शन पूर्ववत्
निम्न विषय इस पत्र में सन्निविष्ट हैं।

कृत्, तद्धित, सुप् प्रत्ययों के स्थान पर आदेश, तिङ् प्रत्ययों के स्थान पर आदेश, सुट्, नुट्, नुम् आदि आगम, लुङ् लकार में वृद्धिविधायक सूत्र, इडागम निषेध प्रकरण, इडागम विधि, सुबन्त सिद्धि में आदेश विधान, अजन्त व उपधा को वृद्धि, ञित्-णित् -कित् प्रत्ययों के परे रहने पर वृद्धि-विधि का निषेध, कवर्गादेश प्रकरण, ईडागम विधान, गुण विधि।

चङि ह्रस्व प्रतिपादन, तिङन्त का साधन प्रकरण, यङन्त सिद्धि, शब्दों का द्वित्व प्रकरण, सुबन्त सिद्धि, स्वर विधान, पूर्वत्रासिद्ध प्रकरण, निष्ठान्त सिद्धि, षत्व-णत्व विधायक सूत्र, हल् सन्धि।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषः — सामान्य रूप से ये विषय दिए गए हैं। अष्टाध्यायी का कोई भी सूत्र छोड़ना अभीष्ट नहीं है। व्याकरण के सभी पत्रों में यही नियम है।

ख— नामिकः-- २५

(प्रातिपदिकों से सुबन्त पदों का निर्माण करना सिखाया गया है।

सूचना- दोनों पत्रों के 'क' भाग के लिये सहायक ग्रन्थ पूर्ववत्।

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद-उपनिषद्-आर्यसिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

क- वेद १२

(अ) अग्नि आदि पदार्थों के गुणों को जानकर कार्य सिद्ध करना, मनुष्यों के कर्त्तव्य दिन और रात जगत् के पालक हैं. विद्वानों द्वारा करणीय कार्य, शिल्पकार के कृत्य, मनुष्य सूर्य के समान दोषों की निवृत्ति करे, राजधर्म, अध्यापक और उपदेशक अखिल पदार्थों के गुण, कर्म स्वभाव का कीर्तन करनेवाले हों, आभूषणों की रक्षा, धर्मात्मा राजा से प्रजा स्वस्थ, विद्युत् पदार्थों में विद्यमान रहती हुई भी अप्रकाशक है, विद्युत् वेत्ता प्रतिष्ठा के पात्र, परमेश्वर को ही मित्र बनाओ, राजा छल कपट अविद्यारूपी अन्धकार नष्ट करे, पृथिवी को दुहने वाले राज्य कार्य में समर्थ हैं, न्याय और विनय से प्रजा को पालना, सूर्यमण्डल कैसा है? उपदेशक का कर्त्तव्य, भूगोलों को सूर्य और सूर्य को ईश्वर आकर्षण में रखता है। वायु और सूर्य के गुण, गुरु शिष्य का कर्त्तव्य है कि रक्षण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए प्रकृति से भूमि पर्यन्त पदार्थों को जाने, स्त्री को अकारादि से लेकर सब शिक्षाएं आनी चाहियें, मोक्षधर्म सेनापति, पृथिवी धन का कारण, वायुयान का निर्माण सत्कार योग्य कौन ? स्वसन्तानों के प्रति पितृकर्त्तव्य, कौन विद्वान् बन सकता है, परमात्मा स्तुति के योग्य है।

(आ) मन को वश में करना, सत्य, धर्म और बलवती सेनावाला शत्रु-विजेता है। विदुषी कुमारियों के कर्त्तव्य. ईश्वर की आज्ञा पालन करने योग्य, पढाने वालों को पितर समझो, सभाध्यक्ष, अध्यापक सुशीलता के दाता विद्युत सर्वत्र व्याप्त, तेजोमयी, सद्यागामिनी और आकर्षिका है; परमेश्वर तथा आप्त विद्वानों के अनुकूल चलनेवाले सदा सुखी। ईश्वर द्वारा भूमि अन्तरिक्ष सूर्य की रचना, राजधर्म, कौन ऋषि बनते हैं ? ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्या पढनेवाले प्रशंसा के अधिकारी, वे दीर्घायु होते हैं। आनन्दित होते हैं। शरीर इन्द्रिय विषय।

(इ) व्यवहार और जीव की गति, दुःख से पार होने वाले, मोक्षाधिकारी, राजधर्म, पितृसेवन विषय, गृहिणी कैसी हो।

सूचना—ये विषय दिग्दर्शन मात्र हैं, आद्यन्त सभी विषयों का ज्ञान परीक्षार्थी को करना योग्य है। कोई मन्त्र अध्ययन काल में त्याज्य नहीं है।

सहायक ग्रन्थः—यजुर्वेद ३३, ३४, ३५ वां अध्याय महर्षिभाष्य संस्कृत।

(ख) आर्याभिविनय-प्रथम प्रकाश हिन्दी में अर्थ— १५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) उपनिषद्— २८

सुकेशा आदि का ब्रह्मविद्या के लिये पिप्पलाद के समीप जाना, ब्रह्मचर्य, श्रद्धापूर्वक एक वर्ष तक रहने का उपदेश, आदित्य, वैश्वानर आदि की व्याख्या, प्रजापति के अर्थ। कितने देव प्रजा का धारण करते हैं इत्यादि वैदर्भि के भगवान् पिप्पलाद से प्रश्न तथा भगवान् द्वारा उनका उत्तर। ये प्राण कहां से उत्पन्न होते हैं, शरीर में कैसे आते हैं, कैसे निकल जाते हैं इत्यादि कौशल्य और आश्वलायन द्वारा पूछना। कौन सोते हैं? कौन जागते हैं? कौन स्वप्न देखता है? किसे सुख प्राप्त होता है इत्यादि गार्ग्य का प्रश्न। मरण-काल में ओ३म् का स्मरण करने वाला किस गति को प्राप्त होता है, यह सत्यकाम का प्रश्न है। सोलह कला क्या हैं यह सुकेशा भारद्वाज का प्रश्न है। सब के यथायोग्य उत्तर।

सहायक पुस्तक—प्रश्नोपनिषद्। ३०

(घ) आर्यसिद्धान्त—

(अ) सहशिक्षा निषेध, समानव्यवहार, गायत्री मन्त्रार्थ, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, होम से उपकार यज्ञ में मन्त्र पढ़ने का प्रयोजन, ब्रह्मचर्य के भेद, पढ़ने पढ़ाने वालों के नियम, शिष्यों के प्रति आचार्य का उपदेश, सब को विद्या का अधिकार, पांच प्रकार परीक्षा, पठन-पाठन विधि, अर्थज्ञान महिमा, आर्षग्रन्थों का महत्त्व, त्याज्य ग्रन्थ, शास्त्रों में अविरोध, विद्या में विघ्न, स्त्री शूद्र का विद्याधिकार

(आ) आचार-अनाचार-भक्ष्याभक्ष्य विषय, विदेशों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जाना सखरी, निखरी पाक का कार्य शूद्र करें, भक्ष्य अभक्ष्य, उपकारी पशुओं की हिंसा का निषेध, अहिंसा, एक साथ भोजन में दोष, उच्छिष्ट भोजन, भोजनस्थान।

सहायक ग्रन्थ —सत्यार्थ प्रकाश ३रा १०वां समुल्लास।

(ङ) सुशीलता (परीक्षा पूर्व खण्डों के समान।) १०

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत साहित्य पूर्णाङ्क १००

प्रकरण, विग्रह, समास पूर्वक गद्य पद्य भाग की संस्कृत में व्याख्या और हिन्दी में अनुवाद पूछा जायेगा। एकार्थक और पर्यायवाची शब्दों को भी दृष्टि में रखना आवश्यक है। संस्कृत में सन्दर्भों और पाठों का संक्षेप करना छात्रों का योग्यता का परिचायक होगा।

पाठ्य पुस्तकः—

(क) पञ्चतन्त्र (कोकालूकीय) २५

(ख) दयानन्द लहरी (आचार्य मेघाव्रत जी) गुरुकुल झज्जर, रोहतक। २५

(ग) निबन्ध रचना एवं पत्र लेखन। ३०

(घ) अनुवाद हिन्दी से संस्कृत में १०

(ङ) सस्कृत सम्भाषण (परीक्षा पूर्व खण्डों की भांति) १०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे	हिन्दी भाषा	पूर्णाङ्क १००

इसका उद्देश्य छात्रों द्वारा निबन्ध रचना तथा व्याकरण के आधार पर भाषा सम्बन्धी शुद्ध और प्रभावोत्पादक प्रयोग, सन्दर्भों की सन्तुलित वा विस्तृत व्याख्या लेखक परिचय और आलोचना करना होगा।

पाठ्य पुस्तक—

(क) श्रीमद्दयानन्द प्रकाश (संघटन, राजस्थान काण्ड) २५
(ख) भारत भारती (तृतीय खण्ड) ३०
(ग) व्यायाम सन्देश ले० -आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर, रोहतक। २०
(घ) व्याकरण में शुद्धाशुद्ध विवेचना, मुहावरों के अर्थ और प्रयोग। १०

सहायक ग्रन्थ —हिन्दी प्रयोग—ले० रामचन्द्र वर्मा

(ङ) निबन्ध रचना— १५

सहायक ग्रन्थ —हिन्दी सञ्जीवनी ले० श्री कृष्ण शुक्ला
प्र० नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
अथवा तत्समकक्ष कोई भी पुस्तक।

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे	अतिरिक्त विषय	पूर्णाङ्क १००

(निम्न में से कोई एक विषय लेना अनिवार्य है)

१. सिद्धान्त २. ज्यौतिष ३. इतिहास ४. भूगोल
५. नागरिक शास्त्र ६. हिन्दी ७. गणित ८. विज्ञान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. अंग्रेजी १०. पुराणेतिहास ११. कृषि एवं पशुपालन १२. आयुर्वेद । [प्रत्येक के लिये समय ३ घण्टे]

सिद्धान्तः— यवनमत समीक्षा, पूर्णाङ्क १००

सहायक ग्रन्थ— सत्यार्थ प्रकाश १४ वां समुल्लास

अथवा

ज्यौतिष अङ्क १००

रेखागणित १–४ अध्याय

अथवा

इतिहास पूर्णाङ्क १००

आर्यसमाज का इतिहास द्वितीय भाग (इन्द्र विद्यावाचस्पति) १३६ पृ० से अन्त तक ।

अथवा

भूगोल पूर्णाङ्क १००

(अ) प्राकृतिक भूगोल–सौरमण्डल, पृथ्वी–आकार दैनिक एवं वार्षिक गति, अन्तस्तल, परतें एवं चट्टानें, भूकम्प, ज्वालामुखी, पहाड़, पठार तथा मैदान, नदी के कार्य, पवन के कार्य, हिम के कार्य, झीलों का उद्भव, ऋतु एवं मौसम, ताप वायुभार, हवायें एवं वर्षा, स्थलीय तथा समुद्रीय वायु, चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात, स्थल एवं जल का वितरण, लहरें, धाराएं तथा उनका जलवायु और आर्थिक जीवन पर प्रभाव ।

(आ) प्रादेशिक भूगोल—विश्व के प्रमुख प्राकृतिक विभाग तथा निम्न सन्दर्भ में उनका विशेष अध्ययन- स्थिति, प्राकृतिक दशा, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि, खनिज, उद्योग, मनुष्य जीवन, यातायात, व्यापार प्रमुख नगर एवं जनसंख्या।

(इ) आर्थिक भूगोल– विश्व में कपास, गन्ना, चावल, गेहूँ, चाय, कहवा, रबड़, जूट के उत्पादन की दशायें तथा स्रोत, ऊन, रेशम, लोह, कोयला, पैट्रोलियम, जल विद्युत् के स्रोत। लोह इस्पात, वस्त्र-व्यवसाय (सूती ऊनी, एवं रेशमी) पोत निर्माण, चीनी उद्योग।

(ई) प्रायोगिक भूगोल।

१. मापक के प्रकार—सामान्यमापक, समयमापक, तुलनात्मक मापक, कर्णवत् मापक का निर्माण।
२. मानचित्रों का बृहती-करण एवं लघ्वीकरण।
३. समुच्च रेखाओं द्वारा भू आकृतियों का प्रदर्शन, समुच्च-रेखाओं द्वारा अङ्कित मानचित्र पर मार्गों एवं अन्तः दृश्यता का प्रदर्शन।
४. धरातल—पत्रक पर प्रयुक्त होने वाले सांकेतिक चिह्नों का अध्ययन।
५. मौसम पत्रक पर प्रयुक्त होने वाले सांकेतिक चिह्नों का अध्ययन।

अथवा

नागरिक शास्त्र पूर्णाङ्क १००

(क) नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त—प्राचीन ५०

नागरिक और अनागरिक में भेद, वर्णव्यवस्था, शासन, शासन की आवश्यकता, शासन का प्रकार, अराजकता के दोष, अनुशासन का महत्त्व, मत्स्यन्याय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं दण्डनीति का संक्षिप्त अध्ययन, राजा की उत्पत्ति, राजा और प्रजा का सम्बन्ध ।

(ख) नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त—अर्वाचीन ५०

१. नागरिक शास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र, अध्ययन विधि । उपयोगिता एवं अन्य सामाजिक शास्त्रों से सम्बन्ध ।
२. व्यक्ति, समाज, समुदाय, परिवार, संघराज्य, राज्य के तत्त्व, उत्पत्ति ।
३. नागरिक—नागरिकता, नागरिकता आदर्श ।
४. राष्ट्रियता—अन्तर् राष्ट्रियता ।
५. लोकतन्त्र, राजनीतिक दल, जनमत .

पाठ्यग्रन्थ—क एवं ख ।

१—नीलकण्ठ नीतिमयूख ।
२—परमात्माशरण नागरिकशास्त्र के तत्त्व ।
३—वाजपेयी हिन्दूराज तन्त्र ।

अथवा

समय ३ घण्टे हिन्दी पूर्णाङ्क १००

पाठ्यग्रन्थ—

(क) १. आत्मानन्द-जीवन-ज्योतिः (शेष सम्पूर्ण) ४५
२. विकटभट (मैथिलीशरण गुप्त) १५
(ख) पूरक पाठ्यग्रन्थ—आधुनिक एकांकी १५
ले० बच्चनसिंह एवं आचार्य आनन्द ।
प्रकाशक—मानस मि० नेपाली खपरा वाराणसी ।
(ग) परिचय तथा विवेचन । २५

सहायक ग्रन्थ—१. हिन्दी गद्य शैली का विकास ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें० डा० जगन्नाथ शर्म्मा, प्र० नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

२. साहित्य विवेचन लें० क्षेमचन्द्र "सुमन"

अथवा

गणित

(अ) वीज गणित—दो वा अधिक अज्ञात वर्णों का वर्ग समीकरण, वर्ग समीकरण मीमांसा, करणी, काल्पनिक राशियां तथा व्यञ्जक, समानान्तर, गुणोत्तर तथा हरात्मक श्रेणियां, क्रमचय तथा संचय, घातांक तथा लघुगणकों के सिद्धान्त, द्विपद प्रमेय-घनात्मक तथा पूर्णसंख्यात्मक घाताङ्क के लिये। द्विपद प्रमेय का अन्य घातांकों में प्रयोग, घातांक प्रमेय तथा लघुगणकीय श्रेणियां।

सूचना— बीजगणित में घातांक तथा लघु गणकों के नियम तथा उनका प्रयोग, समानान्तर तथा गुणोत्तर श्रेणियों का व्यापक पद तथा योग। वर्गी समीकरण क्रम चय तथा सञ्चय का सामान्य ज्ञान। द्विपद प्रमेय का प्रयोग। दो त्रिकोणमिति, कोण मापन, त्रिकोणमितीय निष्पत्तियां तथा अन्तर की ज्या, कोटि ज्या तथा स्पर्श ज्या के सूत्रों का प्रयोग।

(आ) त्रिकोणमिति— कोणमापन की तीन विधि, त्रिकोण-मितियां, निष्पत्तियां, दूरी तथा ऊँचाइयां, श्रेणीय निष्पत्तियों के संस्थात्मक मान ०°, ३०°, ४५°, ६०°, ९०°, १५°, १८°, ३६°, ५४°, ७५° पदों में निष्पत्तियों के चिन्ह ९०°+कोण, १८०°+कोण, २७०°+कोण,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

360° + कोण की निष्पत्तियों की मांग, ऋण कोणों की निष्पत्तियां, दो कोणों के योग तथा अन्तर की ज्या तथा कोटि ज्या की ज्यामितीय उपपत्तियां तथा उनसे निष्पन्न सूत्र द्विगुणित तथा त्रिगुणित तथा आधे कोणों की निष्पत्तियां, त्रिकोणमितीय समीकरण, त्रिभुज की भुजाओं तथा कोणों के सम्बन्ध, त्रिभुज का हल लघु गणकों के प्रयोग सहित त्रिभुज के अन्तर्वृत्त, बहिर्वृत्त तथा परिवृत्त के व्यासार्द्धों का भुजाओं से सम्बन्ध।

(इ) घन-मापन— लांबिकसमानाफलक संक्षेत्र, स्तूप वर्तुल बेलन तथा शंकु, गोल, गोल खण्ड तथा छिन्नशंकु छिन्न बेलन, छिन्न स्तूप तथा छिन्न गोलों के क्षेत्रफल तथा आयतन। संख्यात्मक प्रश्नों में त्रिकोणमिति तथा लघुगणकीय सारणियों का प्रयोग करना अनुमत है।

(ई) चलन-कलन—परिभाषायें तथा अवकल—गुणक की व्याख्या, सरल फलिनों का अवकलन तथा उनका साधारण वक्रों के स्पर्शी और अभिलम्बियों के निकालने में प्रयोग।

टिप्पणी— अ, आ, इ, ई में प्रश्नों का अनुपात २, २, १ का होना चाहिये, एक विषय में कम से कम दो प्रश्न अवश्य रहने चाहियें।

अथवा

विज्ञानम्

सूचना—विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो जिससे सिद्धान्त तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याख्या विद्यार्थियों को बोधगम्य हो। पाठ्यक्रम अध्यापन में इस बात पर ध्यान दिया जाय कि विज्ञान सम्बन्धी नियमों को वह समझ सके एवं चिन्तनशक्ति तथा विचार-धाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बनायें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा जब तक सम्भव नहीं हो लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों। प्रयोगात्मक पुस्तिका रखना आवश्यक है।

भौतिक शास्त्र—

स्थिर तथा गतिज अवस्था, वेग त्वरण, समवेग, विषमवेग, साक्षेप गति, दैशिक तथा अदैशिक राशियां, वेगवृद्धि, गुरुत्वाकर्षण द्वारा वेगवृद्धि और उनका मापन . रेखीय-गति तथा कोणीय गति। न्यूटन के नियम, इनर्सी का सिद्धान्त, कांचपात सिद्धान्त का प्रयोग।

गतिपालक चक्र, लट्टू, घूर्णस्थापक यन्त्र, आवेग का सिद्धान्त, उदाहरण बल का माप तथा इकाई।

क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, उदाहरण बल संयोजन तथा वियोजन, दैनिक जीवन के कुछ उदाहरण, घुरण का सिद्धान्त, बलयुग्म।

गुरुत्व—गिरते हुये पिंडों के नियम, गुरुत्व केन्द्र, पिंडों की साम्यस्थिति, साम्यस्थिति के तीन भेद, गतिक साम्य, वृत्ताकार कक्ष पर समगति, केन्द्रापसारि और केन्द्राभिसारिबल, ग्रहों की गति, मक्खन निकालने का यन्त्र।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की इकाई, समय नापने की रीति, प्राचीन वायुघटिका, जल घटिका, सूर्यघटिका, घड़ी, दौलक, आवर्तगति, दोलक के नियम। सेकेण्ड दोलक, सेकेण्ड दोलक, के प्रयोग। कमानीदार दोलक यन्त्र।

कार्य, बल, ऊर्जाशक्ति, इनकी इकाइयां, परिभाषा शक्ति की व्यावहारिक इकाई, बाट, किलोबाट (परिभाषा)। कार्य का व्यावहारिक उपाय–किलोबाट ऊर्जा का अविनाश-सिद्धान्त, यान्त्रिक शक्ति और तापशक्ति का सम्बन्ध।

यन्त्र—यन्त्र की दक्षता, वेग-निष्पत्ति, यान्त्रिक लाभ। चिचा, ढेकी, साईकिल का पावदान, प्लेटफार्म बैलेन्स, चर्खी, क्रेन, पेंचदार कील, वर्मा, देवरी, दांतेदार पहिया, पश्वर।

द्रव्य विज्ञान—दाब के नियम, प्रयोग, कुछ उदाहरण नगरों में पानी वितरण की क्रिया। आर्टेजियनकूप, जल प्रेरित दावक, उत्प्लावन बल, उत्प्लावन बल की व्याख्या आर्किमिडिज का सिद्धान्त, तैरना, तैरने के नियम, पनडुब्बी, आइसबर्ग, हाईड्रोमीटर, वायुदाब, फोर्टिन-बैरोमीटर, एनीरायड बैरोमीटर, द्वारा ऊंचाई नापना, वायु द्वारा उत्प्लावन बल–गुब्बारा, हवाई जहाज, ठोस पर दाब का प्रभाव, व्यायल का नियम, वायुमण्डल सम-बन्धी साधारण ज्ञान, पिचकारी, जलपम्प दमकल, प्रक्षा-लक, वासुदेव का प्याला, पैट्रोल पम्प, साईकिल पम्प, फुटबाल पम्प, सोडा वाटर की मशीन।

सामान्य ज्ञान—पदार्थ के कुछ विशिष्ट गुण, अणु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धान्त, पृष्ठबल, कोएहेसन स्थिति स्थापक बल, चाप और विकार (*Stress and Strain*)

ताप का रूप, ताप और तापक्रम, सेक्स का उच्चतम न्यूनतम तापमापक, उच्चत्तर तापक्रम नापने की रीतियां, द्रवों का प्रसार, ठोस का प्रसरण। स्थायी आयतन में दाब और तापक्रम का प्रभाव, परम तापक्रम तथा परम शून्याङ्क विशिष्ट ताप, द्रव्य का विशिष्ट ताप, शीतलीभवन के नियम, शीतलीभवन से द्रव्य का विशिष्ट ताप निकालना।

समुद्र तथा स्थलवायु, अवस्था परिवर्तन, बाष्पीय-करण का गुप्त ताप, किसी ठोस का गलनांक पर दाब का प्रभाव, पुनः शीतलीभवन प्रयोग, हिम मिश्रण, बाष्पन और द्रवण क्थनांक, क्थनांक पर दाब का प्रभाव, क्थनांक पर द्रव की अशुद्धियों का प्रभाव, बाष्पन का गुप्त ताप निकालना, बाष्पन से शीत पैदा होना, बर्फ जमाने की रीति, बर्फ जमाने की मशीन, वायुमण्डल में जल बाष्प, मेघ। आर्द्रता, ओले; आर्द्रता मापन।

ताप का संचरण-संवाहन तथा विकिरण, चिमनी का प्रयोग, विकीर्ण ताप के रूप, विकीर्ण ताप के गुण, चालक, अचालक, चलन तापक्रम, ज्वलन तापक्रम, डेवी का लैम्प, द्रवों की चालकता, कारखानों में चीमनी का प्रयोग, खानों में हवा की शुद्धि। प्राकृतिक व्यापारिक हवा में और सामुद्रिक धारा में, थर्मस-फलास्क, ताप का यान्त्रिक तुल्यांक, भाप का इञ्जन, भाप के टरबाइन तथा अन्तर्दहन इञ्जन के विषय में सामान्य ज्ञान।

निम्नलिखित विषयों के सामान्य ज्ञान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्वनि, ध्वनि का वर्तन, अनुप्रस्थ तरंगें, ध्वनि का प्रसरण, त्वरण-वेग और त्वरण दैर्ध्य। ध्वनि वेग, हवा में ध्वनि वेग का निकलना, हाइड्रोफोन, ठोस पदार्थ में ध्वनि का वेग, ध्वनि-स्रोत, ध्वनि स्रोत का पता लगाना ध्वनि वर्तन, परावर्तन। स्टेथेस्कोप, विवर्तन, ध्वनि संयोजन, स्थावर तरंग नाद के गुण, सायरन, संगीत, स्वर और ग्राम तार का कम्पन ट्युनिग फार्क, वायु स्तम्भ का कम्पन, सीटी, बांसुरी हारमोनियम, सितार सारंगी, फोनोग्राफ, चुम्बकीय ध्वनि पुनरुत्पादन, मोटर हार्न।

कार्बनिक रसायन शास्त्र—

ऐलिफैटिक योगिक

(निम्नलिखित विषयों में सामान्य ज्ञान आवश्यक तथा विस्तृत विवरण अनावश्यक है)

संतृप्त हाईड्रोकार्बन या पैरेफीन मिथेन पैट्रोलियम, तथा आसवन पैट्रोलियम पदार्थ, उपयोगिता असंतृप्त हाईड्रोकार्बन एथिलीन एसिटिलीन, इथल अलकोहल एलडीहाइड फार्मेलीडहायड, एसिटोन, एलिफैटिक या वसीय अम्ल एसिटिक अम्ल वसीय अम्लों के यौगिक एस्टर, तेल वसा तथा साबुन ग्लिसरोल और उसका उपयोग कार्बोहाईड्रेट, ग्लुकोज, फ्रुकटोज, सुक्रोज, स्टार्च, सेल्यूलौज, प्रोटीन तथा अमीनों, अम्ल, हमारा भोजन भारतीय-भोजन की रचना तथा ईंधन शक्ति।

ऐरोमेटिक या सौरभिक यौगिक —

सौरभिक हाईड्रोकार्बन, कोलतार और उसका आस-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन, वेनजीन साधारण गुण, उत्पादन उपयोगिता। फीनाल (सामान्य ज्ञान) उत्पादन; उपयोगिता।

प्रायोगिक रसायन शास्त्र—

प्रयोगशाला के उपयोग, गुणात्मक विश्लेषण, कार्बनिक योगिकों की परीक्षा, आयतनात्मक विश्लेषण, आक्सीजन तथा अवकरण।

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को अवश्य दिखाये जाने चाहियें —

लम्बाई नापना, वर्नियर स्केल तथा कैल्यिपर्स का प्रयोग। पेंचमापी तथा गोलाई मापी का प्रयोग।

मशीनें (उत्तोलक, घिर्री आदि) तथा उनका अध्ययन।

किसी धातु के पतले टुकड़े का गुरुत्व केन्द्र निकालना। मात्रा और भार में अन्तर ज्ञात करना।

दोलक का कार्य विधि दिखाना।

द्रवों का दाब और आर्किमिडिज का सिद्धान्त दिखाना।

आपेक्षिक घनत्व निकालना— आपेक्षिक घनत्व बोतल से आर्कमिडिज के सिद्धान्त द्वारा, निकल्सन्स हाईड्रोमीटर द्वारा या हेयर के उपकरण द्वारा।

फॉर्टिन बैरोमीटर से वायु दाब मापना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांयल के नियम का अध्ययन करना।

साधारण साईफन बनाना एवं कार्य विधि देखना।

वस्तुओं पर उष्मा का प्रभाव ज्ञात करना।

द्रवों की विशिष्ट उष्मा निकालना।

गलनांक तथा क्वथनांक निकालना।

ध्वनि चलने के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है, सिद्ध करना।

वायु में ध्वनि का वेग निकालना।

परावर्तन की कुछ उपयोगिता दिखाना, स्टेथेस्कोप (सुनने की नली) ट्युनिंग फार्क का तथा सोनोमीटर का प्रयोग दिखाना।

कार्बनिक योगिकों की साधारण परीक्षा, ग्लुकोज, स्टार्च, प्रोटीन, एथिल अल्कोहल।

सहायक ग्रन्थ–

प्रारम्भिक भौतिकी–बी० एल० कुलश्रेष्ठ।

कार्बनिक रसायन–पंचानन डे।

माध्यामिक कृषिरसायन:–डा० पृथ्वीलाल भार्गव, डा० कैलाशलाल उपाध्याय, (कार्बनिक, अकार्बनिक तथा प्रायोगिक)

भौतिक विज्ञान प्रवेशिका (भाग–१,२) डा० नन्दलालसिंह।

माध्यमिक भौतिकी–के० पी० घोष,

माध्यमिक प्रायोगिक भौतिकी–के० पी० घोष,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(केवल ब्रह्मचारिणियों के लिए)

गृह विज्ञान

सैद्धान्तिक–

शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्यरक्षा

(अ) जीवित तन्तुओं के कोष्ठक, बनावट का अध्ययन।

(आ) अस्थिपञ्जर तथा मांस पेशियों का अध्ययन।

(इ) भोजन तथा पाचन क्रिया।

१–यकृत् की बनावट तथा कार्य, प्लीहा तथा क्लोम।

२–भोज्य पदार्थों का वर्गीकरण।

३–आयु, जलवायु तथा उद्यम के अनुसार भोजन की आवश्यकता

४–दूध तथा सन्तुलित भोजन।

स्वास्थ्य रक्षा–वैयक्तिक स्वास्थ्य रक्षा, वायु का गमनागमन, कूड़ा करकट तथा मल का विसर्जन। जल तथा भोजन की व्यवस्था। इसके प्रति साधारण जनता का उत्तरदायित्व, गन्दे स्थानों से स्वास्थ्य को भय। वाटिका, खेल कूद का मैदान, खुला स्थान, स्वस्थ जीवन के नियम।

समाज शास्त्र–मनुष्य की आवश्यकतायें तथा उनको पूर्ण करने में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन।

पारिवारिक जीवन से मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय परिवार तथा उसके सदस्यों के कर्त्तव्यों का अध्ययन।

पारिवारिक वन्धनों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।

वाल्यावस्था का मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव।

प्रायोगिक–

भोजन पकाना–तरकारी, अचार, मुरब्बा, मीठा अचार, शिकंजी, फलों का मुरब्बा तथा दूध की मीठो वस्तुएं बनाना।

सिलाई–सिलाई की मशीन के यन्त्रों का पूर्ण परिचय प्राप्त करना। प्रत्येक वर्ग से एक वस्त्र बनाना।

१–कुर्ता, ब्लाउज,

२–पाजामा, कमीज,

३–एक व्यक्ति के सम्पूर्णवस्त्र।

अथवा

अंग्रेजी

1.	Prescribed Text	40
2.	Grammer	25
3.	Translation	20
4.	Composition– Letters, short stories and other topics of interest .	15

Prescribed Text

New Clerenden Reader part ii by P. K. Guha

Grammer—

(a) Tenses of voices

(b) Word formation

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(c) Aequointonce with all parts of speech
(d) simple Parsing
(e) Analysis of simple sentenses
(f) Direct and indirect Narration

अथवा

पुराणेतिहास

अथवा

कृषि एवं पशुपालन

अथवा

आयुर्वेद

तीनों का पाठ्यक्रम पीछे सूचित किया जावेगा।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्री परीक्षा (प्रथम खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | संस्कृत व्याकरण | पूर्णाङ्क १००

भ्वादिगण–

व्युत्पत्ति–[क] इट्, अनिट्, षोपदेश णोपदेश धातु, आत्मनेपद, परस्मैपद, उभयपद धातु ।

(ख) लट्, लिट्, लुट्, लृट् लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् लकारों में रूप साधना ।

(ग) कर्त्ता, कर्म, भाव, कर्मकर्त्ता अर्थ ।

(घ) प्रत्ययान्त–णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, शतृ शानजन्त आदि के सब रूप ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | पूर्णाङ्क १००

अदादि से क्र्यादिगण तक–

व्युत्पत्ति प्रदर्शन में इट् आदि प्रथम प्रश्न पत्र के समान ।

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे | पूर्णाङ्क १००

(क) चुरादिगण–कण्ड्वादिगण (व्युत्पत्ति प्रदर्शन पूर्ववत्) ८०

(ख) लिङ्गानुशासन–अव्ययार्थ २०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक ग्रन्थ–
तृतीय प्रश्न पत्र के ख भाग को छोड़कर तीनों प्रश्न पत्रों के लिये माधवीय धातुवृत्ति–सायणाचार्य कृत।

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद–दर्शन–आर्यसिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

(क) अ– वेद– ३०

निर्धारित पाठ्य विषय के प्रत्येक मन्त्र का अर्थ छात्रों को जानना चाहिये। यहां विषयों की दिशामात्र दिखाई जाती है।)

विद्वानों के सङ्ग से लाभ, ईश्वर प्रार्थना उपासना। वायु, सूर्य, मेघ सुखकारी हैं। यज्ञादि द्वारा जल को शुद्ध करके सेवन करनेवाले सुखी रहते हैं। अपने आत्मा के समान सब को माननेवाले, द्वेष न करनेवाले, उपकारी जन धर्मात्मा हैं।

(२) विद्वानों से शिक्षा पाकर नायक बनो, ईश्वर योगी जनों से प्राप्तव्य है। विदुषी स्त्रियों के बिना उत्तम शिक्षा नहीं बढ़ती, रोग आदि क्लेश की निवृत्ति के लिये अग्नि आदि का प्रयोग। विनय और साधुत्व सम्पन्न होकर सर्वोपकारक कर्म करनेवाले बड़ा राज्य पाते हैं, वैज्ञानिक परमेश्वर को जाने, तो इस लोक और परलोक में सुख मिले। दिन में न सोकर, रात्रि को अधिक न जागकर ठीक आहार विहार करनेवाले जन ईश्वर की उपासना करके सुखकारी वस्तु प्राप्त करते हैं।

(३) स्त्री कैसी हो, स्त्री पुरुष कैसे विवाह करें। उनका कर्तव्य। उपदेशक और अध्यापकों द्वारा शिक्षा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणजीवन और समाज की रक्षा के लिये विज्ञान के साथ कर्म करना चाहिये। प्रातः सायं कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्य मिले घृत से अग्नि में होम करनेवाले आनन्दित रहते हैं। राजा और प्रजा के कर्तव्य। ईश्वर कुटिलतादि दोष दूर करके रक्षा करता है। सज्जन–दुर्जन। अग्नि के सदृश योगी के कर्तव्य। उत्तम वल, कर्म, बुद्धि, धर्म संचित धन और जीता गया इन्द्रिय महान् सुख कारक है।

(४) अन्त्येष्टि कर्म, मृतशरीर को जलाकर सव दिशाओं में पहुँचाना। मरे हुए देहों को विधिपूर्वक जलाने वाले मनुष्य पशु, प्रजा, धनधान्य को पुरुषार्थ से पाते हैं। शरीर छोड़कर आत्मा फिर कर्मानुसार जन्म पाता है। पापाचरण वाले उग्र, धर्मचारी शान्त, भयदायी भीम, अभय देने वाले निर्भय, अविद्या में फंसे हुए अन्धकार युक्त, योगी प्रकाश सम्पन्न। अजितेन्द्रिय चंचल, आदि प्रकार के जीव संसार में हैं, मन्त्रों द्वारा शरीर की दाहक्रिया, सुख के साधन।

सहायक ग्रन्थ–

यजुर्वेद का ३६ से ३९वाँ अध्याय (महर्षि दयानन्दभाष्य संस्कृत में)

[आ] आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश (हिन्दी में) १०

[ख] दर्शन– ३०

[१] योग का लक्षण, उसके भेद, योगस्थ के लक्षण, पांच प्रकार की वृत्तियां। वृत्ति निरोध–प्रकार, अभ्यास का लक्षण एवं परिपक्वता, वैराग्य की परिभाषा, संप्रज्ञात समाधि के भेद, असम्प्रज्ञात समाधि, इनके अधिकारी,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का लक्षण, जप का विधि, उससे लाभ, व्याधि आदि चित्त विक्षेपों की निवृत्तिं, चित्त को प्रसन्न करने के उपाय, मन स्थिर करने के ढंग, अचंचल चित्त का क्षेत्र, सबीज समाधि, ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्बीज समाधि ।

[२] क्रिया योग, पांच कलेश, अविद्या की परिभाषा, अस्मिता, राग, द्वेष, मरण भय, इनसे उद्धार, जाति, आयु भोग रूप में संस्कारों का परिपाक, विवेकी के लिए सुख भी दुःख है। संसार का कारण, सृष्टि का प्रयोजन, आत्म-स्वरूप, योगियों के प्रति सृष्टि नष्ट होते हुए भी नष्ट नहीं है, दूसरों के लिए उसका प्रयोजन है। कैवल्य और उसका उपाय, सात प्रकार की बुद्धि, आत्मा और बुद्धि की पृथक्ता प्राप्त होने तक योगाङ्गों का अनुष्ठान। योग के ८ अङ्ग, यम-नियम के भेद, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, यम-नियमों की सिद्धि का परिणाम, प्रत्याहार का लक्षण ।

सहायक ग्रन्थ- योगदर्शन

[समाधि और साधन पाद व्यासभाष्य सहित]

[घ] आर्यसिद्धान्त- ३०

१. ओ३म्, खम्, ब्रह्म, अग्नि, मनु, प्रजापति, इन्द्र, प्राण, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, शिव, अक्षर, स्वराट्, कालाग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान्, मातरिश्वा, शेष, भूमि आदि परमेश्वर के १०० नामों की व्याख्या।

[२] राजधर्म, तीनसभाएं, स्वेच्छाचारी राजा न हो · ाजा निर्वाचित हो, सभासदों की अर्हताएं, सभापति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के गुण, दण्ड व्याख्या, सभाओं के सभासद्, अठारह व्यसन, मन्त्री तथा राजपुरुष, राजपुरुष-कार्य-नियोग, युद्ध के नियम, राजप्रजारक्षण-विधि, प्रशासन-विधि, कर–ग्रहण–प्रकार, मन्त्रणा का विधि, छः गुण, मित्र उदासीन और शत्रु के प्रति राज-व्यवहार, मित्रसम्प्राप्ति से राज्य संवृद्धि, आदेय राजांश, राजप्रजा सम्वन्ध, अठारह विवाद मार्ग और उनका न्याय, साक्षी कैसे हों, अनृत साक्षी को दण्ड, चौरादि को दण्ड, कड़ा दण्ड, संस्कृत में राजनीति पूर्ण है।

(३) विद्या, अविद्या, बन्ध, मोक्ष विषय—

मुक्ति और बन्ध, मुक्ति का काल, मुक्ति साधन विवेक, मतवादियों की अभिमत मुक्ति का स्वरूप, पूर्व जन्म की स्मृति न होने का हेतु, पाप पुण्य की गति, जीवों की विभिन्न गति।

सहायकग्रन्थ–सत्यार्थप्रकाश।

[प्रथम, षष्ठ, नवम समुल्लास]

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे	संस्कृत साहित्य	पूर्णाङ्क १००
[क]	शिवराज विजय प्रथम विराम	२५
[ख]	काव्यालङ्कारसूत्राणि	३०
[ग]	पठित कवियों और ग्रन्थों की समीक्षा।	५
[घ]	निवन्ध	१५
[ङ]	हिन्दी से संस्कृत अनुवाद	१०
[च]	अपठित संस्कृत संदर्भ का अनुवाद हिन्दी में	१५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　　　अतिरिक्त विषय　　　　　पूर्णाङ्क १००

[निम्न में से कोई एक लेना अनिवार्य है वही शास्त्री के प्रत्येक खण्ड में रहेगा]

१. ज्यौतिष २. दर्शन ३. संस्कृत साहित्य ४. ब्राह्मी खरोष्ट्री ५. गणित ६. भूगोल ७. राजनीति शास्त्र ८. अर्थशास्त्र ९. हिन्दी १०. अंग्रेजी ११. आयुर्वेद १२. इतिहास १३. पुराणेतिहास ।

ज्यौतिष—

[क]	रेखागणित अध्याय ५ से १२ [नवीन रेखागणित से तत्तद्विषयक उदाहरण सहित]	५५
[ख]	गोलीय रेखागणित	३०
[ग]	गोल परिभाषा	१५

अथवा

दर्शन

प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान इन सोलह पदार्थों का तत्त्व ज्ञान एवं मुक्ति का होना ।

सहायक ग्रन्थ— न्याय दर्शन वात्स्यायन भाष्य ।

अथवा

संस्कृत साहित्य

क	वैदिक मनुस्मृति [१–६ अध्याय]	४०
ख	शुकनासोपदेश	४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग निवन्ध २०

अथवा

ब्राह्मी खरोष्ट्री

क अक्षरज्ञान ब्राह्मी खरोष्ट्री भाषा ३५

ख ब्राह्मी खरोष्ट्री के चार्ट बनाना ६५

अथवा

गणित

त्याज्य विषय—

१. घन मापन-वर्तुल शंकु, वेलन और गोल के पृष्ठ तल तथा आयतन।

२. नियामक ज्यामिति—आयताकार नियामकों में सरल-रेखा तथा वृत्त का सामान्य ज्ञान।

३. चलन-कलन तथा चल राशि कलन परिभाषायें तथा प्रमुख सूत्र, घातांक फलिन(इ य) लघुगणकीय फलिन [लघु इ य] तथा उत्क्रम फलिनों [ज्या १य] इत्यादि को छोड़कर।

गणित

[अ] आयताकार नियामकों में नियामक दो बिन्दुओं के बीच की दूरी रेखा अन्त के अन्तः तथा वाह्यतः विभाजक विन्दु के नियामक त्रिभुज का क्षेत्रफल, निधियां, सरल रेखा, सरल रेखा युग्म, वृत्त का समीकरण, स्पर्शी, अभिलम्बी, ध्रुव तथा ध्रुवी। $र^2=४ अ य$ के रूप में प र ब ल य का समीकरण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्शी तथा अभिलम्बी $\frac{य^2}{अ^2} + \frac{र^2}{ब^2} = १$ के रूप में दीर्घवृत्त का समीकरण तथा स्पर्शी और अभिलम्बी।

[आ] स्थिति शास्त्र—

एक धरातलीय बल– समानान्तर तथा असमानान्तर बल संयोजन, काय *Body* पर तीन बलों के प्रयोग में बल साम्य। पूर्ण, एक धरातलीय बलसमूह से क्रियाकृत कार्य के साम्य की स्थितियां तथा तदाधारित सरल उदाहरण, गुरुत्व केन्द्र, घर्षण, कार्य तथा शक्ति, सरल-मशीनें, उत्तोलक, तुला घिरनी-समूह।

[इ] गति शास्त्र–

वेग-संयोजन, सापेक्ष-वेग गतिवृद्धि में सरल रेखात्मिका गति, गतिवृद्धि– संयोजन, न्यूटन के गतिनियम, गुरुत्वाकर्षण के ऊर्ध्वाधर तथा नत धरातल में सरल रेखात्मिका गति, घिरनी पर रस्सी से बंधे दो भारों की गति, प्रक्षेप, चिक्कण कार्यों का समक्ष संघात, गति शक्ति की परिभाषा तथा कलन।

टिप्पणी– अ, आ, इ में प्रश्न समानुपाती होने चाहियें। पूरे विषय को दृष्टि में रखते हुवे प्रत्येक विषय में चार प्रश्न आवश्यक होने चाहियें।

अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

[अ] भारत की स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक रचना, प्राकृतिक विभाग, बहाव प्रणाली, जलवायु, उसके प्रकार और उनका आर्थिक क्रियाओं पर प्रभाव, मिट्टी तथा उसकी उर्वरता, धन सम्पदा और उसका विकास, कृषि का महत्त्व।

मुख्य फसलें, कृषि की समस्यायें, सिंचाई के साधन, खनिज सम्पदा, शक्ति उत्पादन के स्रोत, प्रमुख नदी घाटी योजनाएं, मुख्य उद्योग, यातायात एवं व्यापार, जनसंख्या-वृद्धि एवं वितरण, नगर तथा बन्दरगाह।

[आ] एशिया— स्थिति-सीमा, विस्तार, प्राकृतिक रचना, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति।

एशिया के देशों का निम्नलिखित सन्दर्भों में अध्ययन–

कृषि, खनिज, उद्योग, शक्ति के साधन, यातायात, व्यापार, जनसंख्या, मुख्य नगर एवं बन्दरगाह।

[इ] मानव भूगोल— परिभाषा, सीमा एवं विकास, मानव भूगोल के मुख्य सिद्धान्त, विश्व के विभिन्न भागों में मनुष्य का रहन-सहन, ग्रामीण एवं नागरिक बस्तियां और उनके प्रकार, गृह-निर्माण के साधन, गृहों के प्रकार।

[ई] प्रायोगिक भूगोल–

१. प्रक्षेप–

शंकवीय– साधारण एवं द्विमानक अक्षांशीय।

वेलनाकार– साधारण एवं समक्षेत्र–फलीय।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुवीय–समदूरवर्ती एव समक्षेत्र-फलीय।

२. आंकड़े का प्रदर्शन–

सांख्यिकीय रेखा चित्र [साधारण एवं संयुक्त] रखिक रेखा-चित्र, वृत्तीय-रेखा-चित्र, चक्रीयरेखाचित्र।

३. मौसम पत्रक–एक ग्रीष्म कालीन एवं एक शीतकालीन मौसम पत्रक का अध्ययन।

अथवा

राजनीति शास्त्र

राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त–

राजनीति शास्त्र का लक्ष्य, क्षेत्र तथा अन्य शास्त्रों से सम्वन्ध।

राज्य की परिभाषा, स्वरूप तथा इसका निर्माण करने वाले तत्त्व।

अधिकार विषयक विभिन्न सिद्धान्त. स्वतन्त्रता. समानता. राज्य की उत्पत्ति तथा स्वरूप के विभिन्न सिद्धान्त।

राज्यों का वर्गीकरण– एकात्मक तथा संघीय, संसदीय तथा अध्यक्षीय सरकारें, लोकतन्त्र तथा अधिनायक वाद।

राज्य के कार्य, कल्याणकारी राज्य का स्वरूप।

सरकार का सङ्घटन, लोकतन्त्र का सङ्घटन, मताधिकार, प्रतिनिधित्व के विभिन्न सिद्धान्त, लोकमत, राजनीतिक दल, प्रत्यक्षविधान निर्माण, प्रत्यावर्तन तथा जनमत सङ्ग्रह।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक पुस्तकें—

राजनीति शास्त्र, प्रथम भाग	सत्यकेतु विद्यालंकार।
राजनीति शास्त्र, हिन्दी संस्करण	गैटिल।
राजनीति शास्त्र और सरकार	गार्नर।
राजनीति शास्त्र, प्रथम भाग	आशीर्वादम्।

अथवा

अर्थशास्त्र

१. भूमिका—अर्थशास्त्र की विषयवस्तु। दूसरे विज्ञानों से सम्बन्ध। आर्थिक जीवन का विकास। भारतीय अर्थ-व्यवस्था तथा सामाजिक तत्त्व।

२. उपभोग—उपयोगिता-सीमन्त तथा कुल उपयोगिता, उपयोगिता घटने का नियम। मांग का नियम। मांग की लोच।

३. आवश्यकता—सारी आर्थिक गतिविधि का लक्ष्य सन्तुष्टि। आवश्यकताएं और उनके वर्गीकरण। आय का विभिन्न व्यय की मदों में विभाजन। पारिवारिक बजट। बचत तथा खर्च का सम्बन्ध। खर्च का सामाजिक पक्ष।

४. भूमि—भारत के प्राकृतिक साधन, भूमि तथा जलवायु। शक्ति के स्रोत, कच्चा माल। उत्पादन के तत्त्वों में भूमि का महत्त्व। कृषि, उद्योग, तथा व्यवसाय के लिए भूमि की मांग।

५. श्रम—भारत में जन-संख्या की सघनता तथा वितरण। स्वास्थ्य तथा औसत आयु। धंधे। श्रम की पूर्ति तथा कार्य कुशलता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. पूंजी—भवन तथा मशीनरी। भारत में यातायात तथा संचार के साधन। सिंचाई।

७. संगठन—प्रबन्ध व्यवस्था तथा जोखिम–ग्रामीण उद्योगों तथा फैक्ट्रियों में उत्पादन के तत्त्वों का सहयोग। उत्पादन के तत्त्वों की कार्य-कुशलता, इसको बढ़ाने के उपाय, शिक्षा से श्रम की कार्यकुशलता में वृद्धि। श्रम-विभाजन तथा यन्त्रों का विशिष्ट ज्ञान। बड़े पैमाने का उत्पादन तथा उसकी सीमाएं, उत्तर प्रदेश में कुटीर उद्योग। बढते तथा घटते हुए रिटर्न। औद्योगिक संगठन का विकास, इसका यातायात के साधनों से सम्बन्ध। ग्रामीण उद्योगों तथा भारतीय कृषि में परिवर्तन। विस्तृत तथा सघन-कृषि।

सहायक पुस्तकें—

१. अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त–श्री नारायण अग्रवाल। (रामनारायण लाल इलाहाबाद)
२. अर्थशास्त्र की रूपरेखा—ए० एस० गर्ग। (हंस प्रकाशन, मेरठ)
३. प्रारम्भिक अर्थशास्त्र—शंकर सहाय सक्सेना (श्री राममेहर आगरा)

अथवा

हिन्दी

पाठ्य-ग्रन्थ—

गद्य—गद्यनिकष ले० डा० व्रजविलास (चौखम्वा) प्रकाशक—विद्यामन्दिर वाराणसी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्य (क)–जयद्रथ वध लें० मैथिलीशरण गुप्त २०
प्रकाशक—साहित्य सदन चिरगांव, झांसी।

(ख) रश्मिरथी ले० रामधारी दिनकर (चौखम्वा) (छात्रोपयोगी संस्करण) प्र० उदयाचल राजेन्द्रनगर पटना-४। २५

(ग) रस-अलङ्कार तथा छन्द २५

नवरसों का सामान्य परिचय, अप्रस्तुत प्रशंसा, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति, दृष्टान्त, सन्देह, परिसंख्या, वक्रोक्ति अलङ्कार।

मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, भुजङ्गप्रयात, गीतिका, बरवै, वीर, त्रिभङ्गी ये छन्द।
महायक ग्रन्थ—काव्याङ्ग कौमुदी पूर्ववत्।

अथवा

अङ्गरेजी

(a) 1. Question from the text 12

2. Substance writing in English 8

3 Word meanings in Hindi or English with illustration of such words in sentence of English. 12

4. Explanation of prose Peaces in Hindi or English. 20

(b) Grammer:—

1. Parsing 10

2. Analysis 8

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(c) Translation 20
Unseen 10

Prescribed books

1. Simple English prose by C. S. Bhandari

Or

2. Pages of prose by P. E,Dastoor and H. P Dastoor.

सूचना—शास्त्री के तीनों खण्डों में आयुर्वेद, इतिहास और पुराणेतिहास इन तीन अतिरिक्त विषयों का पाठ्य-क्रम पुनः सूचित किया जायेगा।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्री परीक्षा (द्वितीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　संस्कृत व्याकरण　　　पूर्णाङ्क १००

अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति १–३ अध्याय शंका, समाधान, वार्तिक, कारिका सहित ।

सहायक ग्रन्थः–

१. काशिका, पदमञ्जरी, न्यास
२. कारिका प्रकाश (कारिकाओं के लिये)
(प्र० गुरुकुल झज्जर रोहतक)

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　पूर्णाङ्क १००

अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति ४–६ अध्याय शङ्का समाधान, वार्तिक कारिका सहित ।

सहायक ग्रन्थः– प्रथम पत्र के समान

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे　　　पूर्णाङ्क १००

(क) अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति ७–८ शङ्का, समाधान, वार्तिक, कारिका सहित ।　७०

सहायक ग्रन्थः– प्रथम पत्र के तुल्य ।

(क) पारिभाषिक (महर्षि दयानन्द कृत)　२०

(ग) मूलाष्टाध्यायी कण्ठस्थ (महर्षि पाणिनिमुनि कृत)　१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद-दर्शन–आर्य सिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

वेद– ४०

(प्रत्येक मन्त्र का अर्थ छात्रों को जानना चाहिए विषयों की दिशा मात्र नीचे दिखाई जाती है)

(१) अग्नि आदि पांच भूतों का ज्ञान करके उनका उपयोग सुखकारी है, वेद के अध्ययन और श्रवण का अधिकार मनुष्य मात्र को है। ईश्वर का कार्य, मनुष्य के कर्त्तव्य, राजा का सत्कार, उस द्वारा किए जाने वाले कृत्य विद्वानों का कर्म, ईश्वर की उपासना का प्रकार, उत्तम सन्तान किस प्रकार उत्पन्न किए जावें। विद्वान् कौन हो सकता है।

(२) आप्त पुरुष कैसा आचरण करें। विद्वानों को ही उत्तम अधिकार प्रदान करना चाहिए। जिज्ञासु क्या करे, राजा विनय धारण करे, अध्यापक और उपदेशक सुखी रहने के लिये ब्रह्मचर्य आदि की शिक्षा देवें। अग्नि का स्वभाव ऊर्ध्वगामी है। वायु के बिना कोई कहीं नहीं जा सकता, मनुष्य कैसी वाणी का सेवन करें, जिज्ञासु की प्रशंसा, किस प्रकार के सन्तान सुखदायी होते हैं ? योग से परमात्मा के जानने वाले को आनन्द मिलता है। पढाना कल्याणकारी है।

(३) यज्ञ के द्वारा बल की वृद्धि, सुखी कौन ?
मन्त्रार्थ देखने वाले की सेवा करें। शरीर इन्द्रिय आदि की रक्षा करके विद्या आयु बढावें।

गृह-निर्माण में वायु संचार हेतु एक दूसरे के सम्मुख द्वार हों, स्त्री पुरुष सन्तानों को योग्य बनाए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) अग्नि और जल का कार्य। विद्यार्थी जन विद्वानों के प्रति निष्कपट बनें। घोड़ों की शिक्षा, राजप्रजा के कार्यों की सिद्धि, कैसे विद्वान् हितैषी हैं, राज्य शासन के अधिकारी विद्वानों के सेवक हैं। शिल्प-शिक्षा, आप्त पुरुष की पहचान। धर्म-कर्म में लगाकर दुराचार से बचाने वालों का सत्कार करना, राजपुरुष के कर्त्तव्य, कौन पशु किन गुणों वाले हैं।

(५) ईश्वर की प्रार्थना, चाण्डालों द्वारा कुत्तों की पालना, किसको दूर करे, किसे प्राप्त करे।

सहायक ग्रन्थः— यजुर्वेद २६ से ३० अध्याय
[महर्षि दयानन्द भाष्य संस्कृत]

दर्शन— ३०

धारणा, ध्यान, समाधि का लक्षण, तीनों की पारिभाषिकी संज्ञा संयम, उससे लाभ धारणा, ध्यान, समाधि की अन्तरङ्गता और वहिरङ्गता, निरोध परिणाम, एकाग्रता परिणाम, धर्मी का लक्षण, संयम द्वारा सिद्धियां, भूत-भविष्यद् का ज्ञान, पक्षियों की बोली का बोध, पूर्वजाति का पता, दूसरे के चित्त की जानकारी, स्वयं को छुपा लेना, मृत्यु का ज्ञान, बलप्राप्ति, प्रवृत्यालोक का फल चन्द्र, ध्रुव, नाभिचक्र, कण्ठकूप, कूर्मनाडी में संयम, सिद्धों के दर्शन, पुरुष ज्ञान, प्रातिभ आदि सिद्धियां, दूसरे के शरीर में प्रवेश, जल, पंक, कण्टक पर चलने से अप्रभाव उत्क्रान्ति, आकाशगमन, महाविदेहावृत्ति का परिणाम भूत प्रकृति पर विजय, अणिमा आदि आठ सिद्धियों का प्रादुर्भाव, कायसम्पत्, इन्द्रिय जय, शरीर का मन के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान दौड़ाना, प्रधान जय, सर्वज्ञ बनना, अनिष्टप्रसङ्ग की सम्भावना, विवेकज ज्ञान, कैवल्य, जन्म आदि से ही सिद्धियां धर्म द्वारा प्रकृति के आवरण का भेद, अनेक चित्त का निर्माण, चार प्रकार के कर्मों की शृङ्खला, वासना की अभिव्यक्ति, वासनाओं का अनादित्व, इत्यादि सब प्रकरण, कैवल्य का स्वरूप, चिति शक्ति की स्वरूप प्रतिष्ठा।

सहायक ग्रन्थ—पातञ्जल योगदर्शन व्यासभाष्य
(विभूति और कैवल्यपाद)

आर्य सिद्धान्त—

अनेक-ईश्वर-वाद-निराकरण, ईश्वर सिद्धि, न्याय-दया विवेक, प्रार्थना, ईश्वर की आज्ञा, अष्टाङ्गयोग, परमेश्वर का कर्त्तृत्व, अवतार निषेध, ईश्वर और पाप क्षमा, जीव कार्य करने में स्वतन्त्र, जीव तथा ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, परमेश्वर त्रिकालदर्शी, जीव का परिमाण, अद्वैतवाद खण्डन, भाग-त्याग-लक्षणा, वेद विषय।

विविध सृष्टि का प्रकाशक, उत्पत्ति, स्थिति एवं लयकर्त्ता, तीन अनादि पदार्थ, प्रकृति का लक्षण, अभिन्न-निमित्तोपादान निराकरण, सृष्टि प्रयोजन, सर्वशक्तिमान् का अर्थ, साकार निराकार, नास्तिक के प्रश्न तथा उनके उत्तर, सृष्टि की एकाकारता, सृष्टि विषय में वेदादि शास्त्रों में अविरोध है। आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि, सृष्टि के आरम्भ में युवा उत्पन्न हुए, कर्मों के अनुसार प्राणि-सर्जन, तिब्बत में पहले पहल सृष्टि हुई। आर्य अनार्य भेद, आर्यावर्त देश, आर्यजन बाहर से नहीं आये। देव और असुर, उनका संग्राम, दस्यु और म्लेच्छ देश, स्वराज्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिमा, पृथिवी सूर्य आदि का आधार ईश्वर।

सहायक ग्रन्थः—सत्यार्थप्रकाश (७-८वां समुल्लास)

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे   संस्कृत साहित्य   पूर्णाङ्क १००

(क) दयानन्द दिग्विजय पूर्वार्द्ध (१ से ६ सर्ग) आचार्य मेधाव्रत (प्रकाशक-गुरुकुल झज्जर, रोहतक) २०

(ख) ऐतरेय तैत्तिरीय उपनिषद् २०

(ग) पिंगल छन्दःशास्त्र पिङ्गलाचार्य प्रणीत (प्रकाशक गुरुकुल झज्जर, रोहतक) ३०

(घ) पठित कवियों और ग्रन्थों की समीक्षा ५

(ङ) निबन्ध १५

(च) अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत में) १०

षष्ठ प्रश्न पत्र

अतिरिक्त विषय

समय ३ घण्टे   पूर्णाङ्क १००

निम्न में से कोई एक लेना अनिवार्य है, प्रथम खण्ड में लिया गया विषय ही द्वितीय खण्ड में लेना होगा।

ज्यौतिष

(क) लीलावती की उपपत्ति। ५५

(ख) भास्करीय बीज गणित की उपपत्ति। ४५

अथवा

दर्शन १००

वैशेषिकदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य अथवा अन्य आर्यविद्वान् का भाष्य)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा

संस्कृत साहित्य

(क) व्यवहार भानुः (प्रकाशक - गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) २०
(ख) मनुस्मृति (७ से १२ अध्याय) ३०
(ग) प्रबोध चन्द्रोदय (अश्लीलांश वर्जित) चौखम्बा ३०
(घ) निबन्ध २०

अथवा

ब्राह्मी खरोष्टी

(क) खरोष्टी ब्राह्मी की मुद्राओं का अध्ययन ६५
(ख) ब्राह्मी से देवनागरी लिपि का उद्भव ३५

अथवा

गणित

(अ) बीजगणित—आंशिक भिन्न सरल वितत भिन्न, श्रेणियों की असमता संसृतिका का सामान्यज्ञान, सरल सारणिक, समीकरणों की मीमांसा। १५

(आ) त्रिकोणमिति—उत्क्रम त्रिकोणमिति के फल, वृत्तीय अतिपरवलीय लघुकणकीय फल, त्रैकोणमितिक श्रेणियों का योग, त्रैकोणमितिक फलों का विस्तार। २०

(इ) अव्यक्त ज्यामिति- आयताकार तिरछे कोणीयनियामकों से सरल रेखा, वृत्त, परवलय, दीर्घ वृत्त अति परवलय, व्यापक वर्ग समीकरण, शांकव संहति, समनाभि शांकव। २०

(ई) घन ज्यामिति—सरल रेखा, समतल, गोल। १५

(उ) चलन-कलन—सीमा, सातत्य, अवकलन शीलता,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरोत्तर अवकलन, लाइवनेज प्रमेय, फलों का प्रसार, अनिर्णीत रूप, आंशिक अवकल गुणक, एक चल राशि के न्यूनाधिक बिन्दु, वक्र स्पर्शों के अभिलम्ब, वक्रता, कोष, केन्द्रज, उन्नतोदरता, नतोदरता, नतिविन्दु, बहुलकबिन्दु, वक्रालेख। ३०

अथवा

भूगोल

भौतिक भूगोल—पृथिवी के वाह्य एवं आभ्यन्तरिक रूप, भूपटल एवं चट्टानें, अनाच्छादन के माध्यमपन, हिम, जल, इनके कार्य और इनके निर्मित भू--आवृत्तियां, सागरीयअपरदन। मौसम और जलवायु के प्रकार और उन पर आधारित प्रदेशों का वितरण।

प्रायोगिक-भूगोल—

(१) मापक—कर्णवत् एवं तुलनात्मक। मानचित्रों का एकीकरण।
(२) प्रक्षेप—वान एवं बहुशंकवीय। मरकेटर मालवीढ।

आर्थिक एवं मानव भूगोल—

विश्व के प्रमुख आर्थिक स्रोत—चावल, गेहूँ, चाय, कहवा, गन्ना, कपास, कोयला, लोहा, पेट्रोलियम, स्वर्ण, आणविक शक्ति के खनिज, सूती, रेशमी एवं ऊनी वस्त्रोद्योग, लोह-इस्पात, पोत-निर्माण, वायुयाननिर्माण, जनसंख्या का वितरण, बस्तियां एवं गृहों के प्रकार, तथा उनका वितरण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायोगिक--भूगोल—

(१) सांख्यकी रेखाचित्र—वितरण मानचित्र (बिन्दु एवं छाया–विधिद्वारा)।

(२) मौसमपत्रक—दिये हुए वितरण से मौसमपत्रक का निर्माण।

अथवा

राजनीति शास्त्र

राजनीति के आधुनिक सिद्धान्त

१. राजनीतिक धारायें—राज्य की प्रभुसत्ता–एकत्ववाद तथा राजनीतिक बहुलवाद।

२. कानून का स्वरूप, इसके विभिन्न स्रोत, कानून तथा नैतिकता, दण्ड के सिद्धान्त।

३. राष्ट्रियता, सम्राज्यवाद, अन्तर्राष्ट्रियता।

४, उपयोगितावाद, आदर्शवाद, व्यष्टिवाद, समूहवाद, श्रमिक संघवाद, श्रेणी समाजवाद, साम्यवाद, अराजकतावाद, फासिज्म, गान्धीवाद तथा सर्वोदय।

सहायक ग्रन्थ—

राजनीतिशास्त्र, भाग २	सत्यकेतु विद्यालङ्कार
राजनीतिक विचारधाराएं	गणेशप्रसाद
आधुनिक राजनीति के विभिन्नवाद	महादेवप्रसाद वर्मा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थशास्त्र

क:— ५०

अर्थशस्त्र का कार्यक्षेत्र तथा विधियां, उपभोग तथा उत्पादन और आर्थिक प्रणाली।

कार्यक्षेत्र—विज्ञान की विषय वस्तु तथा कार्यक्षेत्र। अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला के रूप में–अन्य विज्ञानों से सम्वन्ध। इसके विभाग तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध।

विधियां—निगमन तथा आगमन विधियों का अर्थशास्त्र में प्रयोग। आर्थिक नियमों की प्रकृति।

उपभोग—आवश्यकताओं का माप, उपयोगिता घटने का नियम। सम–सीमान्त उपयोगिता का नियम। मांग की लोच। उपभोक्ता की बचत। उत्पादन पर उपभोग की प्रतिक्रिया।

उत्पादन—उत्पादन के तत्त्व–भूमि, श्रम, पूंजी संगठन तथा जोखिम।

भूमि—भूमि की उत्पादकता को प्रभावित करनेवाले तत्त्व, स्थिति, उर्वराशक्ति तथा जलवायु।

श्रम—इसकी कार्य कुशलता को निर्धारित करने वाले तत्त्व, स्पष्ट विशेषताएं, कुशल तथा अकुशल श्रम–मालथस का जनसंख्या का सिद्धान्त, प्रत्यक्ष तथा निरोधात्मक रोक, आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त, जनसंख्या का स्वास्थ्य तथा शक्ति, चरित्र तथा प्रशिक्षण।

पूंजी—पूंजी तथा श्रम के मध्य संगति तथा संघर्ष,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजी की वृद्धि को प्रभावित करनेवाली दशाए, मशीनरी की आर्थिक विशेषताएं।

संगठन—इसका कार्य, श्रम से भिन्नता, श्रम का विभाजन, उद्योगों का स्थानीयकरण, श्रम का क्षेत्रीय वितरण, उत्पादन के विभिन्न तत्त्वों का संयोजन। स्थानापत्ति का नियम। बढते, स्थिर तथा घटते हुए लाभ का नियम रेखाचित्रों सहित। लघु तथा बृहद् उद्योग, व्यापारिक संगठन के प्रकार। उद्योगों का यौक्तिकीकरण।

अर्थप्रणालियों के प्रारम्भिक सिद्धान्त– पूंजीवाद, समाजवाद तथा नियोजित अर्थ–व्यवस्था और उनका तुलनात्मक अध्ययन। अर्थशास्त्र में सांख्यिकी (स्टे–टिस्टिक्स) का महत्त्व तथा उपयोग। औसत, प्रतिशत आदि निकालना तथा सरलरेखाचित्र खींचना।

सहायक पुस्तकें—

ए० एस० गर्ग– अर्थ शास्त्र के सिद्धान्त।

सक्सेना— अर्थ शास्त्र के सिद्धान्त।

टण्डन– अर्थ शास्त्र के सिद्धान्त।

भारत की आर्थिक दशा तथा आयोजना

(ख) अङ्क ५०

भारत की प्राकृतिक सम्पदा। जनसंख्या। संख्या तथा गुण। सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाएं।

राष्ट्रिय आय।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ग्रामों का आर्थिक संगठन, कृषि का विकास मुख्य फसलें, भारत में अन्न का उत्पादन, जोत की किस्म तथा अवधि, उत्तर प्रदेश के काश्तकारी कानून, कृषि उपज की विक्री, कृषि में शोध तथा सुधार।

भारत में कृषि तथा सरकार के सम्बन्ध।

सहकारिता– ग्राम्य तथा नागरिक। प्रारम्भिक सहकारी समितियां, वहुदेशीय सहकारी समितियां केन्द्रीय बैंक तथा प्रान्तीय सहकारी बैंक, भूमिबन्धक बैंक, सहकारी विक्रय, क्रय विक्रय समितियां।

भारत के उद्योग–बड़े उद्योग जैसे लोहा तथा फौलाद वस्त्र, कोयला, चीनी, जूट। इनका विकास, प्रवन्ध, वित्त-व्यवस्था और वर्तमान स्थिति। कुटीर उद्योग, उनको सुधारने के उपाय। शक्ति के स्रोत, जलविद्युत् संस्थान। राज्य तथा उद्योग। भारत में श्रमिक संघ, श्रम कल्याण तथा कार्यकुशलता। १९४८ का फैक्टरी कानून।

यातायात–सड़क, रेलवे, जल तथा हवाई यातायात। यातायात का संयोजन।

भारत में आर्थिक आयोजन तथा सामुदायिक विकास और राष्ट्रिय विस्तार सेवा।

सहायक पुस्तकें—

एस० एस० सक्सेना व माथुर-रीडिंग्स इन इंडियन इकोनोमिक्स भाग १ व २ गौतम ब्रदर्स दिल्ली

जाथर व बेरी–भारतीय अर्थ शास्त्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी० सी० जैन–भारतीय अर्थ शास्त्र की समस्यायें इंडियन इकोनोमिक्स इयर बुक–किताब महल, नवीनतम प्रकाशन ।

ड्यूवेट तथा सेठ–भारतीय अर्थ शास्त्र
देवाश्री एवं नाथूराम झा–भारतीय अर्थ शास्त्र, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ।

अथवा

हिन्दी

(क) पठ्य-ग्रन्थ

(१) चरित्र निर्माण– श्री सत्यकाम विद्यालंकार (राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली) २५

(२) चन्द्रगुप्त–ले० जयशंकर प्रसाद (चौखम्बा) २५

(३) मनोविज्ञान तथा शिवसङ्कल्प (ले० स्वामी आत्मानन्द) (उपोद्घात से यक्ष मन तक निर्धारित) ३०

मिलने का पता—गुरुकुल झज्जर रोहतक ।

(ख) रस और अलङ्कार १०+१०

रस रस परिचय, रस–निष्पत्ति, रसों का पारम्परिक सम्बन्ध, रसाभास, भावाभास, भावसन्धि भावशबलता ।

अलङ्कार—अपह्नुति, दीपक, निदर्शना, व्यतिरेक, व्याजस्तुति, विरोधाभास, विभावना, काव्यलिङ्ग, तद्गुण-मीलित ।

सहायकग्रन्थ—काव्यांग कौमुदी द्वितीयभाग पूर्ववत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा
अंग्रेजी

(a)	Poetry	20
(b)	Rapid Reading	12
(c)	Essay writing	30
(d)	Filling in gaps involving tences, voices and sequence of tences and appropriate Pre-positions	10
(e)	Spelling	10
(f)	Punctuation	8
(g)	Narration	10

Books Prescribed

Poetry

Anyone of the following books:—

1. A Gatway of Vision of poetry, by Lila Dhar Gupta (Pothishala Allahabad)
2. Pleasures of English Poetry by Gauri Shankar Misra (Lucknow Book House Lucknow)
3. Poems of pleasure by P.C. Sood (C Chand & Co., Delhi).

Rapid Reading

Any one of the following books:—

1. Fighters of Freedom (On all fronts) py S. R. Misra
2. Great Men & Women by K. B. Agrawal & R. Dayal (Gurdas Kapur & Sons Delhi)
3. Foot falls of the Great, By K. P. Lall. (Indian Press Allahabad)

—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्री परीक्षा (तृतीय खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत व्याकरण पूर्णाङ्क १००

महाभाष्य १ से ६ आह्निक

द्वितीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत व्याकरण १००

महाभाष्य ७ से ९ आह्निक तथा प्रथमाध्याय २ रा, ३ रा पाद १००

तृतीय प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत व्याकरण १००

प्रथमाध्याय चतुर्थपाद और द्वितीय अध्याय १–२ पाद

चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे वेद–दर्शन–सिद्धान्त पूर्णाङ्क १००

(क) वेद— ४०

(१) विद्यार्थियों का पाठ प्रतिदिन सुनना चाहिए, विद्वानों के कर्तव्य, पृथ्वी विषय, जलयान वायु आदि पदार्थों का प्रयोजन, वैद्यों के समान दूसरे आचरण करें, मध्यम, उत्तम ब्रह्मचर्य, विद्वानों का उपदेश कैसा होता है, मनुष्य कैसे व्यवहार करें, माता–पिता अपने सन्तान कैसे बनावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आप्त विद्वान् के कार्य, मनुष्य किन्हें बढावें, जगत् का शोधन कैसे किया जाय, सावित्री मन्त्र की व्याख्या मन्त्रों द्वारा, यज्ञकर्म विषय, सूर्य का कारण विद्युत्। राष्ट्र के लिए ब्राह्मण ब्रह्मवर्चसी हो, निर्भय राजपुत्र हो, मनुष्य को परोपकारार्थ जीवन शरीर प्राण अन्तःकरण और इन्द्रियों को अर्पण करना चाहिये।

(३) ईश्वर का कृत्य, उसका स्वरूप, उसकी प्राप्ति के उपाय, विद्वानों से पूछे जानेवाले प्रश्न एवं उनके उत्तर, जिज्ञासु और मनुष्य कैसे हों ? अपने रूप को जानने से अमरत्व का पता लगना, अग्नि वायु और सूर्य जानने योग्य हैं। राज प्रजा जन परस्पर कैसे वर्ते, दुराचारी को दण्ड दिया जावे। राजा न्याय और धन की उन्नति करे। वर्णसंकर को जन्म देना राजा के विनाश का कारण, गुरुकुलों में गुरु शिष्य व्यवहार एवं शिष्यों की परीक्षा, बालकों की शिक्षा, प्रश्नोत्तर, ईश्वरोपासना।

(४) पशुओं से उपकार कैसा लेवें, कौन पशु किन गुणवाले हैं, किस काम के लिए किस पशु का ग्रहण करें।

(५) शिष्यों के प्रति अध्यापक की शिक्षा, पशुओं में किस किस के गुण हैं, सूर्य वर्णन, ईश्वर प्रतिपादन, अदिति शब्द के अर्थ, किसके साथ किसकी पालना करनी, कौन किससे क्या ग्रहण करे, मांसभक्षी जन को दण्डविधान, पशुशिक्षण, आत्मादि की शुद्धि, राज्योन्नति के साधन।

सहायक ग्रन्थः—यजुर्वेद :१ से २५ अध्याय (महर्षि दयानन्द भाष्य संस्कृत में)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) दर्शन:- २०

तीन प्रकार के दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति के लिए अत्यन्त पुरुषार्थता, मोक्ष साधन में दृष्ट साधन की अयोग्यता, वन्धन की अस्वाभाविकता, तथा तत्सम्वन्धी वाद-विवाद, प्रकृति पुरुष का संयोग वन्धन का कारण, पुरुष का नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, अविवेक नाश के लिए विवेक, प्रकृति और विकृति के स्वरूप का वर्णन, प्रकृति जगत् का उपादान कारण, सत्त्वादि गुण और उनके पदार्थों का साधर्म्य-वैधर्म्य, प्रकृति पुरुष के ज्ञान हेतु प्रमाणों का प्रदर्शन, योगी में ईश्वर के प्रत्यक्ष की योग्यता, जीव का भोक्तृत्व, कर्तृत्व, त्रिगुण राहित्य, शरीरादि से पार्थक्य, चेतनत्व, मुक्ति से पुनरावृत्ति ।

ईश्वर के अधिष्ठातृत्व में विरक्तों को मोक्ष और भोगियों को भोग देना प्रकृति का कर्तृत्व, प्रकृति को ग्रहण करके ईश्वर द्वारा सृष्टि रचना, महत्तत्वादि से पंच तन्मात्राओं पर्यन्त जीवात्मा के साधन, उनके १३ भेद, इन्द्रियों का अतीन्द्रियत्व, सब इद्रियों में ११ वें मन की प्रधानता, बुद्धि की मुख्यता ।

सहायक ग्रन्थ:—सांख्य दर्शन (महर्षि कपिल प्रणीत) ब्रह्ममुनि भाष्य—राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट दिल्ली—६ ।

(ग) सिद्धान्त:- ४०

ईश्वर प्रार्थना, वेदोत्पत्ति, वेदों का नित्यत्व, वेद विषयक विचार, वेद संज्ञा, ब्रह्मविद्या, वेदोक्त धर्म, सृष्टि विद्या, पृथिव्यादि लोकों का भ्रमण, उनका परस्पर आकर्षण,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशाप्रकाश्य लोक, गणित विद्या. प्रार्थना याचना समर्पण विषय, उपासना, मुक्ति, नौविमानादि विद्या, तार विद्या, वैद्यक शास्त्र का मूल, पुनर्जन्म, विवाह, नियोग, राजप्रजा धर्म, ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, वलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ, उत्तम-निकृष्ट ग्रन्थों की गणना, प्रजापति दुहिता की कथा, गोतम और अहल्या का उपाख्यान, इन्द्रवृत्रासुर वर्णन, देवासुर संग्राम, कश्यपगयादितीर्थ कथन, मूर्ति पूजा निषेध, नवग्रह, अधिकार अनधिकार विषय, पठन पाठन विधि, ऋग्वेदादि भाष्य करने में शङ्कासमाधान, महीधर भाष्य का खण्डन, प्रतिज्ञा, प्रश्नोत्तर, वैदिक प्रयोग, स्वर व्यवस्था, व्याकरण नियम, अलङ्कार भेद।

सहायक ग्रन्थ—

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका [महर्षि दयानन्द]

पञ्चम प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे संस्कृत साहित्य पूर्णांक १००

(क) दयानन्द दिग्विजय पूर्वार्धं-७ से १२ सर्ग २०

(ख) प्रकृति सौन्दर्य २०

(ग) श्लोक रचना का अभ्यास २०

[२० श्लोक स्वरचित परीक्षाध्यक्ष के समीप परीक्षारम्भ से १५ दिन पूर्व पहुँच जाने चाहियें]

(घ) निबन्ध २०

(ङ) सकारण अशुद्धि शोधन २०

षष्ठ प्रश्न पत्र

समय ३ घण्टे अतिरिक्त विषय पूर्णाङ्क १००

[निम्न में से कोई एक लेना अनिवार्य है, पूर्वखण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लिया गया विषय ही तृतीय खण्ड में लेना होगा ।

ज्यौतिष

(क) त्रिकोणमिति नवीन सरल त्रिकोणमिति ४५

(ख) सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय ५५

अथवा

दर्शन

क— ३०

ओंकार व्याख्या, उसके वैश्वानर, तैजस, प्राज्ञ ये तीन पाद, एवं इनका विश्लेषण, भोज्य भोक्ता का भेद, सृष्टि का प्रयोजन, परमात्मा का लक्षण, ओंकार की तीन मात्राएँ—अ, उ, म् तथा इनका विस्तार, भूत-वर्तमान और भविष्यत् इन तीन कालों से अतीत भी ब्रह्म का स्वरूप है ।

सहायक ग्रन्थ—

माण्डूक्योपनिषद्

ख— ७०

सब कार्य पदार्थों के कारण–ईश्वर-जीव और प्रकृति । इन तीनों के भेद को जानना, भेद बोध एवं ईश्वर का ज्ञान होने से दुःख निवृत्ति, जीव का मोक्ष ।

योगाभ्यास से ईश्वर की अवगति ।

परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना द्वारा उसके स्वरूप, गुण और कर्मों का वर्णन ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव और ईश्वर का भिन्न-भिन्न लक्षण और स्वरूप तथा ईश्वर से जीव का स्पष्ट भेद ।

ईश्वर के गुण निरूपण पूर्वक उसके कर्मों का वर्णन।

सहायक ग्रन्थ—
श्वेताश्वतरोपनिषद्

अथवा

संस्कृत साहित्य

(क)	मुद्राराक्षस	३५
(ख)	८वाँ १२वाँ २५वाँ अध्याय [चरक सूत्रस्थान से]	२०
(ग)	ब्रह्मचर्यामृतम् [गुरुकुल झज्जर]	१५
(घ)	निबन्ध रचना	२०
(ङ)	सकारण अशुद्धि शोधन	१०

अथवा

ब्राह्मी खरोष्ट्री

(क)	गुप्त काल तक के शिलालेखों का अध्ययन	५०
(ख)	ब्राह्मी खरोष्ट्री लिपियों का प्रादेशिक विचार	५०

अथवा

गणित

(अ) चलराशिकलन– अनुकलन के सामान्य विधि. मुख्य सूत्र, खण्डानुकलन, लघुकरण सूत्र, निश्चित अनुकलन, क्षेत्रकलन, चापकलन, परिक्रमण जघनों का आयतन और पृष्ट फल ।

(आ) अवकलन समीकरण–एकवर्ण समीकरण, स्थिर गुणीय एकघात समीकरण, गतिशास्त्रीय सरल समीकरण, अवकल समीकरणों का ज्यामिति में सरल प्रयोग ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इ) स्थिति शास्त्र– एक दृढकाय कण में विक्रिया-शील एकधरातलीय बलों की बल समता, रज्जु बहुभुज के आभास कार्य गुरुत्व केन्द्र, समरज्जु वक्र।

(ई) कणों के गति शास्त्र में द्वचायाम में वेग, गति-वृद्धि, न्यूटन के गति नियम, सरल रेखात्मिका गति, चक्रज गति, दोलक-गति, कार्य, शक्ति, सङ्घात, वेगालेख।

भूगोल

भारत–

भारतीय राज्यों का विस्तृत भौगोलिक अध्ययन। भारतीय पंचवर्षीय योजनाओं का अध्ययन।

प्रायोगिक भूगोल–

सर्वेक्षण की विधियां–निम्न उपकरणों द्वारा दिये हुए क्षेत्र का सर्वेक्षण।

१. शृंखला एवं फीता।

२. समपार्श्वोर्य दिक् सूचक।

ग्रेट ब्रिटेन, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका का।

भौगोलिक अध्ययन–

स्थिति, सीमा-विस्तार, प्राकृतिक रचना एवं जलवायु। खनिज कृषि एवं उद्योग, यातायात के प्रमुख साधन, व्यापार। जनसंख्या नगर एवं बन्दरगाह।

प्रायोगिक भूगोल—

सर्वेक्षण की विधियां– निम्नलिखित उपकरणों द्वारा दिए हुए क्षेत्र का सर्वेक्षण।

समपटल।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति शास्त्र

[क] ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरीका, रूस तथा स्वीटजरलैंड के संविधानों का सामान्य परिचय।

सहायक पुस्तकें—

विभिन्न देशों की शासन प्रणालियां। सत्यकेतु विद्यालङ्कार।

आधुनिक संविधान। आर. पी. अर्गल

संयुक्तराज्य अमरीका का संविधान। कन्हैया लाल वर्मा।

प्रकाशक– नन्दकिशोर एण्ड संस

प्रमुख विदेशी संविधान सभरवाल तथा गुप्त

[ख] १८८५ से १९४७ तक का भारत का राष्ट्रिय आन्दोलन ५०

भारतीय गणराज्य का संविधान। सत्यकेतु विद्यालङ्कार।

भारतीय संविधान और शासन का विकास। वी. पी. रघुवंशी।

भारत का संविधान। कन्हैया लाल वर्मा

भारत का संविधान। अमरनन्दी

अथवा

अर्थशास्त्र

(क) अङ्क ५०

विनियम—मूल्य, उपयोगिता तथा सन्तुष्टि। मांग, मांग तथा पूर्ति का नियम, बाजार, अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन बाजार, बाजार मूल्य तथा सामान्य मूल्य,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त मांग तथा संयुक्तपूर्ति, प्रतिद्वन्द्विता, अपूर्ण प्रतिद्वन्द्विता, एकाधिकार की कीमतें सट्टेबाजी।

वितरण—सामूहिक उत्पादन से उत्पन्न समस्याएं, नेशनल डिविडेंड, सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त।

किराया—किराये के नियम, किराये को प्रभावित करने वाले तत्त्व, किराया तथा कीमत, किराया तथा उत्पादन का मूल्य, अर्ध-किराया।

मजदूरी—मजदूरी की दर निर्धारित करने वाले तत्त्व, समय तथा कार्य के अनुसार मजदूरी, कार्यकुशलता, कमाई तथा न्यूनतम मजदूरी का चक्र। वास्तविक तथा नाममात्र की मजदूरी, मजदूरी के सिद्धान्त।

ब्याज—ब्याज का अर्थ, कुल तथा शुद्ध ब्याज, अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन ब्याज की दरें, ब्याज के सिद्धान्त, ब्याज दर में परिवर्तन के कारण तथा प्रभाव।

लाभ—कुल लाभ तथा शुद्ध लाभ, वार्षिक लाभ तथा कार्य समाप्ति पर लाभ, लाभ क्यों पैदा होता है, सामान्य लाभ तथा सरप्लस लाभ।

सार्वजनिक वित्तव्यवस्था—व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक व्यय में अन्तर, सार्वजनिक व्यय तथा सरकार के कार्य, सर्वाधिक सामाजिक सुविधा का सिद्धान्त, राज्य की आय के स्रोत, कर की परिभाषा तथा विशेषताएँ, कर-प्रणाली, कर लगाने के सिद्धान्त, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर, कर भार, सार्वजनिक ऋण, भारत की सार्वजनिक वित्त व्यवस्था—केन्द्रीय, प्रान्तीय तथा स्थानीय।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) ५७

मुद्रा, बैंकिंग, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा राष्ट्रीय आय।

१. मुद्रा—धन के कार्य, धन का महत्त्व, विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ। मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त। मुद्रा-स्फीति तथा मुद्रा की न्यूनता। सूची अङ्क। नोट जारी करने की विभिन्न प्रणालियां। मुद्रामान की समस्या।

२. बैंकिंग तथा विदेशी विनिमय—बैंकों के कार्य तथा उनके प्रकार, बैंकिंग तथा उनके प्रकार, बैंकिंग तथा मुद्रा बाजार। बैंक दर तथा खुला बाजार, अन्तर्राष्ट्रिय वित्तकोष अन्तर्राष्ट्रिय विकास तथा निर्माण के लिए बैंक। विदेशी विनिमय। मिंट-पारा। नियन्त्रण, १९२७ से इसका इतिहास, द्वितीय महायुद्ध का भारतीय मुद्रा तथा विनिमय पर प्रभाव। भारत बैंकों की वर्तमान स्थिति '

(३) अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार–तुलनात्मक मूल्य का सिद्धान्त भुगतानों का संतुलन। मुक्त तथा संरक्षित व्यापार। आयात तथा निर्यात कोटा। भारत का विदेशी व्यापार।

(४) राष्ट्रिय आय–बचत तथा धन लगाना-बेकारी का पूर्ण नाश।

सहायक पुस्तकें:–

१–थामस–एलीमेन्ट्स आफ इकोनोमिक्स।
२–गर्ग–अर्थशास्त्र के सिद्धान्त।
३–भटनागर तथा अन्य–अर्थ शास्त्र के सिद्धान्त।
४–मेयर–एलीमेन्टस आफ मौर्डन इकोनोमिक्स।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५–गोयल–मुद्रा बैंकिंग तथा अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार प्रकाशक, रस्तोगी कं० मेरठ।

अथवा

हिन्दी

(क) पाठ्य ग्रन्थः—

१–अङ्कुरिता (पञ्जाव विश्वविद्यालय चण्डीगढ़) २५

२–मनोविज्ञान तथा शिवसङ्कल्प (स्वामी आत्मानन्द) २५
(प्रज्ञान मन से धृति मन तक) प्र० गुरुकुल झज्जर रोहतक।

३–ब्रह्मचर्य का साधन प्राणायाम (आचार्य भगवान्देव, गुरुकुल झज्जर) १०

(ख) इतिहास और समीक्षा:– २०

सहायक ग्रन्थ:–हिन्दी साहित्य का इतिहास (रामचन्द्र शुक्ल)

(ग) रस और शब्द शक्ति २०

रस–रस निष्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्तों का सामान्यज्ञान, साधारणीकरण का स्वरूप, आधुनिक काव्य में रस की स्थिति।

शब्द शक्ति–शब्द शक्ति का सामान्यज्ञान, रस और ध्वनि सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन, आधुनिक काव्य में उनका प्रयोग।

सहायक ग्रन्थ:–काव्याङ्ग कौमुदी पूर्ववत्।

अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी

1. For detailed study — 40
   (i) English prose Selection by N. K. Sidhant and S C. Doc. (Macmillan Culcutta)
   (ii) A Miscelleney of English prose by K. K. Mehrotra (R. S. Ramdayal Agarwal, Allahabad)
2. For non-detailed study:— 20
   (1) For short plays of to day by N. K. Agarwal (Prakash Prakashan Agra)

   or

   selected short stories by A. Bhattacharya (Macmillan and Co. Culcutta)
3. Translation — 20
4. Unseen passages — 12
5. Idioms — 8

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याकरणाचार्य परीक्षा

इस परीक्षा में १२ पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र ३ घण्टे और १०० पूर्णाङ्क का होगा। प्रथम खण्ड में आरम्भ के क्रमशः छः पत्र और द्वितीय खण्ड में क्रमशः शेष छः पत्र लेने होंगे, परीक्षा का माध्यम संस्कृत रहेगा।

(प्रथम खण्ड)

प्रथम प्रश्न पत्र— १००
महाभाष्य-अध्याय २ का ३, ४ पाद तथा ३सरा ४था अध्याय सम्पूर्ण।

द्वितीय प्रश्न पत्र-- १००
महाभाष्य (५-६ अध्याय)

तृतीय प्रश्न पत्र— १००
निरुक्त–आदि से द्वितीय अध्याय १ पाद तक

चतुर्थ प्रश्न पत्र-- पूर्णाङ्क १००
(क) निघण्टु १ से ३ अध्याय २०
(ख) निरुक्त-अध्याय २ के दूसरे पाद से ३ अध्याय तक ८०

सहायक ग्रन्थ-(तृतीय, चतुर्थ पत्र के लिये)-

निरुक्त भाष्य	चन्द्रमणि विद्यालङ्कार
निरुक्तालोचन	सत्यव्रत सामश्रमी
निरुक्त विमर्श	भगवद्दत्त बी. ए. अनुसंधाता
निरुक्त सम्मर्श	स्वामी ब्रह्ममुनि
निरुक्त	दुर्गाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००

पञ्चम प्रश्न पत्र—

व्याकरण अथवा वेद विषयक निवन्ध (संस्कृत में)

सहायक ग्रन्थ — पाणिनिकालीन भारत वर्ष
(ले० पं० वासुदेव शरण)

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास
ले० युधिष्ठिर मीमांसक

वेद का यथार्थ स्वरूप
ले० पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

षष्ठ प्रश्न पत्र— १००

वेद सिद्धान्त

(क) यजुर्वेद १३ से २० अध्याय तक महर्षि भाष्य संस्कृत में ८०

(ख) संस्कार विधिः—आरम्भ के चार संस्कार छोड़कर शेष सम्पूर्ण (हिन्दी में पठन, संस्कृत में परीक्षा के उत्तर) २०

(द्वितीय खण्ड)

सप्तम पत्र (व्याकरण) पूर्णाङ्क १००

महाभाष्य ७-८ अध्याय

अष्टम पत्र (निरुक्त) १००

(क) निरुक्त ४ से ८ अध्याय ९०

(ख) निघण्टु चतुर्थ अध्याय तक १०

नवम पत्र (निरुक्त) १००

(क) निरुक्त अध्याय ९ से परिशिष्ट तक ९०

(ख) निघण्टु पञ्चम अध्याय १०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशम पत्र (मौलिक निबन्ध) संस्कृत में १००
सहायक:—वेद और निरुक्त (पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु)
वेद में इतिहास नहीं (स्वामी ब्रह्ममुनि)

एकादश पत्र (वेद) १००
यजुर्वेद ७ से १२ अध्याय महर्षि दयानन्द भाष्य (संस्कृत में)

द्वादश पत्र [वेद] १००
यजुर्वेद १ से ६ अध्याय महर्षि दयानन्द भाष्य [संस्कृत में]

वेदाचार्य परीक्षा

इस परीक्षा में १२ पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र ३ घण्टे और १०० पूर्णाङ्कों का होगा। प्रथम खण्ड में आरम्भ के क्रमश: छ: पत्र और द्वितीय खण्ड में क्रमश: शेष छ: पत्र लेने होंगे। परीक्षा का माध्यम संस्कृत रहेगा। वेद के पाठ्य-ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य होगा।

(प्रथम खण्ड)

प्रथम पत्र—
(क) ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ५० तक ७५
(ख) आश्वलायन गृह्य सूत्र २५

द्वितीय पत्र—
(क) ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ५१ से १०० तक ७५
(ख) ऋक्प्रातिशाख्य १ से ३ पटल तक २५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १०१ से १४२ तक ७५
(ख) ऋक्प्रातिशाख्य ४ से १० पटलान्त २५

चतुर्थ पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १४३ से मण्डलान्त ७५
(ख) ऋक्प्रातिशाख्य ११ से १८ पटलांत २५

पञ्चम पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल द्वितीय सम्पूर्ण ७५
(ख) पद-क्रम, जटा, घन पाठ २५

षष्ठ पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त १ से ४५ तक ७५
(ख) ऐतरेय ब्राह्मण एक से दो पञ्चिका २५

(द्वितीय खण्ड)

सप्तम पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त ४६ से मण्डलान्त तथा मण्डल ४ सूक्त १ से २२ तक ७५
(ख) ऐतरेय ब्राह्मण ३-४ पञ्चिका २५

अष्टम पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ४ सूक्त २३ से मम्पूर्ण तथा मण्डल ५ सूक्त १ से १५ तक ७५
(ख) ऐतरेय ब्राह्मण ५-६ पञ्चिका २५

नवम पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ५ सूक्त १६ से ६५ तक ७५
(ख) ऐतरेय ब्राह्मण ७–८ पञ्चिका २५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशम पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ५ सूक्त ६६-८७ एवं मण्डल ६ सूक्त १ से ३५ — ७५

(ख) आश्वलायन श्रौतसूत्र पूर्वार्द्ध — २५

एकादश पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ६ सूक्त ३६ से अन्त तक — ७५

(ख) आश्वलायन श्रौतसूत्र उत्तरार्ध — २५

द्वादश पत्र—

(क) ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्त १–६१ — ७५

(ख) सायणभाष्य का समालोचनात्मक अध्ययन — २५

दर्शनाचार्य परीक्षा

इस परीक्षा में १२ पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र तीन घण्टे और १०० अंक का होगा। प्रथम खण्ड में क्रमशः ६ पत्र और द्वितीय में क्रमशः शेष ६ पत्र लेने होंगे। परीक्षा का माध्यम संस्कृत होगा।

(प्रथम खण्ड)

प्रथम पत्र– पूर्व मीमांसा अध्याय १–६ — १००

द्वितीय पत्र– पूर्व मीमांसा अध्याय ७–१२ — १००

तृतीय पत्र– (क) एकादशोपनिषद् [शिवशंकर भाष्य] — ४०

(ख) वेदान्त—ब्रह्ममुनि और शांकर भाष्य — ४०

(ग) ब्रह्मसूत्र विद्योदय भाष्य [उदयवीर शास्त्री] — २०

चतुर्थ पत्र– (क) योगदर्शन [व्यास भाष्य] — ३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) सांख्यदर्शन विद्योदयभाष्य [उदयवीर शास्त्री, बड़ी होली ग़ाजियाबाद], [मेरठ] ३०
(ग) सांख्य सूत्र [स्वामी हरिप्रसाद वैदिक-मुनिकृत भाष्य] ३०
(घ) गीता-दर्शन विषयक प्रकरण (स्वामी आत्मानन्द भाष्य) १०

पञ्चम पत्र— न्याय वार्तिक तात्पर्यटीका १००

षष्ठ पत्र—(क) न्याय कुसुमाञ्जलि 'उदयनाचार्य कृता' ४०
(ख) वैशेषिक सूत्र-स्वामी हरिप्रसाद वैदिक मुनि कृत भाष्य' ३०
(ग) वैशेषिक प्रशस्तपाद भाष्य तथा कन्दली टीका ३०

(द्वितीय खण्ड)

सप्तम पत्र— सर्वदर्शन संग्रह १००

अष्टम पत्र—(क) आत्मतत्त्व विवेक ६०
(ख) जीव का परिमाण 'स्वामी आत्मानन्द' ४०
(प्रकाशक—गुरुकुल झज्जर)

नवम पत्र— न्याय, वैशेषिक, योग सांख्य का इतिहास (उदयवीर शास्त्री) १००

दशम पत्र— जैन तथा बौद्ध दर्शन
१- स्याद्वाद मञ्जरी ५०
२- प्रमाण वार्तिकालंकार-प्रभाकर 'काशीप्रसाद जायसवाल अनुशीलन संस्था संस्करण ५०

सहायक ग्रन्थ-जैन तर्कभाषा, प्रमाण मीमांसा, लंकावतार सूत्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाण वार्तिक– आचार्य धर्मकीर्ति कृत मनोरथ वृत्ति सहित ।

एकादश पत्र— निम्न में से किसी एक का विशेष अध्ययन
याज्ञवल्क्य, शंकर, रामानुज, दयानन्द १००

याज्ञवल्क्य—
छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषदों पर शंकराचार्य और शिवशंकर काव्यतीर्थ का भाष्य ।

शंकर—
प्रस्थान त्रयी का शांकर भाष्य

रामानुज—
वेदार्थ संग्रह तथा सम्पूर्ण श्रीभाष्य

दयानन्द—
सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कार विधि आदि ।

द्वादश पत्र—
स्वशास्त्रीय निबन्ध पूर्णांक १००

सूचना— शास्त्री में यदि अतिरिक्त रूप से दर्शन विषय नहीं लिया है, तो दर्शन से आचार्य करने के लिये उसे करने की आवश्यकता नहीं है ।

ज्यौतिषाचार्य परीक्षा

इस परीक्षा में आठ पत्र होंगे । प्रत्येक पत्र ३ घण्टे और १०० पूर्णाङ्कों का होगा । प्रथमखण्ड में क्रमशः आरम्भ के चार पत्र और द्वितीय खण्ड में क्रमशः शेष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ पत्र लेने होंगे। ८वां पत्र वाक्परीक्षा का है, जो अन्तिम वर्ष में ही होगी। परीक्षा का माध्यम संस्कृत होगा।

(प्रथम खण्ड)

प्रथम पत्र— १००

(क) चापीय त्रिकोणमिति ५०

(ख) चलन कलनम् [सुधाकर त्रिवेदी कृत आदि] ५०

द्वितीय पत्र— १००

सूर्य सिद्धान्त ७०

सौर परिवार [गोरखप्रसाद कृत] ३०

तृतीय पत्र— १००

सिद्धान्त शिरोमणि का गोलाध्याय

चतुर्थ पत्र— १००

सिद्धान्त विवेक

(द्वितीय खण्ड)

पञ्चम पत्र— १००

प्रतिमा बोधकम् [भाभ्रम रेखा निरूपणम्]

षष्ठ पत्र— १००

(क) सर्वानन्दकरणे वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नति ८०

(ख) गणक तरङ्गिणी २०

सप्तम पत्र— १००

(क) स्वशास्त्रीय निबन्ध ४०

(ख) स्वशास्त्रीय व्युत्पत्ति प्रदर्शन ३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग स्वशास्त्रीय इतिहास ३०

अष्टम पत्र— १००

वाक्परीक्षा

राजशास्त्राचार्य परीक्षा

इस परीक्षा में ८ पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र ३ घण्टे और १०० पूर्णांकों का होगा! प्रथम खण्ड में आरम्भ के ४ पत्र क्रमशः और द्वितीय पत्र में शेष क्रमशः ४ पत्र लेने होंगे। ८वां पत्र वाक् परीक्षा का है, जो अन्तिम वर्ष में होगी। परीक्षा का माध्यम संस्कृत होगा।

(प्रथम खण्ड)

प्रथम पत्र— १००

कौटिलीयार्थशास्त्र का प्रथमाधिकरण जयमङ्गला सहित तथा द्वितीयाधिकरण प्रतिपदपञ्जिका सहित

द्वितीय पत्र— १००

(क) शुक्रनीति ५०

(ख) राजनीति मयूख ५०

तृतीय पत्र— १००

कौटिलीयार्थशास्त्राधिकरण ३ से ७ तक

चतुर्थ पत्र— १००

(क) महाभारत आपद्धर्म ४५

(ख) महाभारत अनुशासन पर्व [द्वि० ख०] ५५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(द्वितीय खण्ड)

पञ्चम पत्र— १००

कौटिलीयार्थशास्त्राधिकरण ८ से अन्त तक

टिप्पणी—प्रथम, तृतीय, पञ्चम पत्र में—कौटिलीय अर्थशास्त्र (हिन्दी रूपान्तर) से भी सहायता ली जासकती है।

षष्ठ पत्र— १००

महाभारत राजधर्म

सप्तम पत्र— १००

स्वशास्त्रीय निबन्ध तथा स्वशास्त्रीय इतिहास

अष्टम पत्र— १००

वाक् परीक्षा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.